www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) की ओर से राजेश मौजा (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - मेसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक - प्रो. दामोदर शास्त्री।

RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 17, Issue: 1, January-June, 2025

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Rajasthan)

35वां स्थापना दिवस समारोह 06

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 14

कवि सम्मेलन आयोजित 19

10 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित 22

सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित 32

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, Rajasthan

• Value-based Education with Spiritual Ambience • Lush Green Campus with Gurukul Environment • Education for Women Empowerment and Entrepreneurship • Research Excellence & Global Collaboration • Preservation & Promotion of Indian Knowledge Systems • Skill Development and Career-Oriented Programmes

Regular Courses Ph.D. & MA: Jainology and Comparative Religion & Philosophy • Prakrit • Sanskrit • Nonviolence & Peace • Political Science • Yoga & SOL • Hindi • English • Rajasthani • M.Ed.# UG: B.A.* • B.Com.* • B.Sc.* • B.Ed.# • B.A.-B.Ed.# • B.Sc.-B.Ed.# * For Female only
B.A./B.Sc. (Yoga and Science of Living) (Co-Education) #Admissions through State Level Entrance

Diploma Course Rajasthani Language, Literature & Culture

Certificate Courses Jyotish • Vastu • Jain Agam • Jain Scholars • Philosophical Counselling: Experiments with Self • Prakrit; Sanskrit (Basic & Advanced) • Rajasthani • Rajasthani Language & Literature • Jain Religion & Philosophy • Yoga & Science of Living • Be Incharge of Yourself (Dietetics) • Yoga & Naturopathy

Correspondence Courses PG: Jainology • Hindi • English • Yoga and Science of Living • Nonviolence and Peace • Prakrit • Sanskrit • Political Science UG: B.A. • B.Com. Certificate: Yoga and P.M. • Astrology • Jain Religion & Philosophy • Human Rights • Training in Nonviolence • Jain Arts and Aesthetics.

Bachelor of Naturopathy and Yogic Sciences (BNYS)

(5½ Years Degree Programme for Naturopathy Doctor)

ACHARYA MAHAPRAJNA NATUROPATHY CENTRE

A unit of Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Rajasthan

FEATURES: • Full Day Treatment • Experienced Doctors • Detox & Rejuvenation • Yoga Studio & Outdoor Gym • Comfortable Stay & Hospitality.

THERAPIES: • Colon & Hydrotherapy • Shirodhara & Panchkarma • Mud, Stone & Cupping Therapy • Steam, Sauna & Jacuzzi • Circular Jet, Spine Jet ...and many more

For details visit: www.jvbi.ac.in

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

प्रत्याख्यान से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया—**पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?** भंते! प्रत्याख्यान से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया—**पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरूंभइ।** प्रत्याख्यान से वह आश्रव-द्वारों (कर्म-बन्धन के हेतुओं) का निरोध करता है।

प्रत्याख्यान क्या है? प्रत्याख्यान का अर्थ है—छोड़ना, त्याग करना। त्याग करने से आश्रवद्वार निरुद्ध होते हैं। प्रत्याख्यान से व्यक्ति के भीतर इस प्रकार की चेतना का निर्माण हो जाता है कि मुझे अमुक अमुक कार्य नहीं करने हैं। मैंने राग-द्वेष की प्रवृत्ति का त्याग कर दिया है। यद्यपि राग-द्वेषात्मक प्रवृत्ति हो सकती थी किन्तु प्रत्याख्यान करने से उसका निरोध हो गया। पापकर्म के आगमन का मार्ग भी अवरुद्ध हो गया।

प्रत्याख्यान करने से लाभ क्या है? प्रत्याख्यान करने से आश्रव का निरोध हो जाता है। आश्रव के निरुद्ध होने से संवर निष्पन्न हो जाता है। जितना-जितना त्याग, संयम बढ़ता है, उतना-उतना आदमी आत्मिक निर्मलता को भी प्राप्त करता है। छोटे-छोटे नियमों से त्याग की चेतना को विकसित किया जा सकता है। श्रीमद् भगवद्गीता में कहा गया—

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य, त्रायते महतो भयात्।

धर्म का थोड़ा अंश भी जीवन में आता है तो वह भी मानव को महान भय से उबारने वाला होता है। गीता के इस उद्घोष को यों भी कहा जा सकता है कि व्रत का एक अणु या एक अंश भी स्वीकार किया जाता है तो वह आदमी को महान भय से उबारने वाला होता है। आदमी यह चिन्तन करे कि मैं असंयम से कितना निवृत्त हो सकता हूं? मेरा असंयम से संयम की ओर प्रयाण हो।

एक व्यक्ति यह संकल्प करता है कि मैं कभी चोरी नहीं करूंगा। इसका अर्थ यह हुआ कि वह चोरी का प्रत्याख्यान करता है। एक व्यक्ति यह प्रतिज्ञा करता है कि मैं कभी गुस्सा नहीं करूंगा, नशा नहीं करूंगा आदि। इसका तात्पर्य यह हुआ कि वह संयम की ओर आगे बढ़ता है। प्रत्याख्यान जहां चेतना को निर्मल बनाता है वहीं व्यावहारिक दृष्टि से भी आदमी को उन्नति की ओर ले जा सकता है।

अनुक्रमणिका

01. संपादकीय- स्थापना के 35 वर्ष पूर्ण कर अपने उद्देश्यों के प्रति समर्पित भाव से निरंतर अग्रसर है- जैविभा संस्थान
02. 35वां स्थापना दिवस समारोह - जैविभा विश्व-विद्यालय है एक आधुनिक गुरुकुल- राज्यपाल। 06
03. राज्यपाल ने किए शिलान्यास व उद्घाटन 09
04. सुप्रसिद्ध उद्योगपति के.एल पटावरी को किया 'प्रोफेसर ऑफ प्रेक्टिस' नामित 10
05. उप राष्ट्रपति से भेंट कर कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताई विश्वविद्यालय की विशेषताएँ 11
06. अमेरिका के विश्वविद्यालय के साथ हुआ एमओयू 11
07. संस्थान के चार सदस्यों को मिला उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रशासनिक सम्मान 12
08. राजस्थानी भाषा व साहित्य में स्नातक-स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट करने की सुविधा शुरू 13
09. शांति की पृष्ठभूमि एवं प्रतिस्थापना पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित 14
10. रोजगार प्लसमेंट में साक्षात्कार लेकर किया 5 विद्यार्थियों का चयन 17
11. साइबर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित 18
12. कवि सम्मेलन आयोजित 19
13. पांच दिवसीय कौशल विकास कार्यशाला संपन्न 20
14. अखिल राजस्थान अन्तर-महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में कोमल प्रजापत प्रथम रही 20
15. वाद-विवाद प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी ने झंडे गाड़े 21
16. आचार्य सिद्धसेन दिवाकर कृत 'सन्मतितर्क प्रकरण' ग्रंथ पर 10 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित 22
17. भगवान महावीर के सिद्धांतों पर विद्वानों की परिचर्चा एवं पत्रवाचन कार्यक्रम आयोजित 23
18. जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन का वैशिष्ट्य विषय पर व्याख्यान आयोजित 24
19. भारतीय दर्शन में आत्मा की अवधारणा विषय पर व्याख्यान 25
20. एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित 26
21. तीर्थंकर ऋषभदेव के योगदान को लेकर व्याख्यान आयोजित 27
22. शिविर में दिया अहिंसा का व्यावहारिक प्रशिक्षण 28
23. शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा व्याख्यान आयोजित 29
24. 'शोध प्रविधि' पर सात दिवसीय कार्यशाला आयोजित 30
25. एक दिवसीय शिक्षा नीति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित 31
26. सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित 32
27. आसोटा गांव में कार्यात्मक साक्षरता एवं वयस्क बुनियादी शिक्षा पर विशेष कार्यक्रम आयोजित 35
28. पदमपुरा गांव में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम 35
29. भारतीय ज्ञान-परंपरा में ज्ञान और विज्ञान विषय पर व्याख्यान आयोजित 36
30. भारतीय ज्ञान परंपरा पर कार्यशाला आयोजित 36
31. प्रसार भाषण माला में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान 39
32. दूसरी दुनिया की खोज और रहस्यों को लेकर व्याख्यान आयोजित 40
33. समरस सहभोज की अनूठी मिसाल 40
34. खानपुर गांव में 'हरित ग्राम कार्यक्रम' आयोजित 41
35. विश्व पुस्तक दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित 41
36. भारतीय भाषा महोत्सव पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित 42
37. डिजीटल एरेस्ट के प्रति किया विद्यार्थियों को जागरूक 43
38. विश्व हिंदी दिवस/पराक्रम दिवस/शहीद दिवस/महिला दिवस 44
39. भारतीय युवा दिवस/मकर संक्राति पर्व/विश्व हिन्दी दिवस 45
40. एन.एस.एस. के सात दिवसीय शिविर में विविध आयोजन 46
41. स्वयंसेविकाओं ने लगाए पक्षियों के लिए परिंडे व घोंसले 47
42. सामाजिक चेतना यात्रा का आयोजन 47
43. शुभ भावना 2025 का आयोजन 48
44. एनसीसी गर्ल्स को किया गया 'बी' सर्टिफिकेट का वितरण 49
45. संस्थान की एनसीसी कैडेट्स ने जीते गोल्ड मैडल 49
46. कैडेट्स को दिया ड्रिल, राइफल चलाने, मैप रीडिंग का प्रशिक्षण 49
47. फेयरवेल पार्टी/बसंत पंचमी/गुरू गोबिंद सिंह जयंती 50
48. महिला अधिकारों व सशक्तीकरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित 50

RNI-RAJBIL/2009/32418

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

वर्ष-17, अंक- 01

जनवरी-जून, 2025

संरक्षक

प्रो. बच्छराज दूगड़

कुलपति

सम्पादक

प्रो. दामोदर शास्त्री

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन

पवन सैन

प्रकाशक

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ – 341306

जिला- डीडवाना कुचामन (राजस्थान)

दूरभाष : (01581) 226110, 226230

E-mail : jvbiladnun@gmail.com

Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

स्थापना के 35 वर्ष पूर्ण कर अपने उद्देश्यों के प्रति समर्पित भाव से निरंतर अग्रसर है- जैविभा संस्थान

राजस्थान के राज्यपाल महामहिम हरिभाऊ बागड़े मानते हैं कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय नैतिक व चारित्रिक मूल्यों के प्रति समर्पित है। यहां मानवीय मूल्यों के साथ ही बौद्धिक क्षमता के विकास के लिए कार्य किया जाता है। यहां विश्वविद्यालय का अवलोकन करने और जानकारी प्राप्त करने के बाद उन्होंने इसे आधुनिक गुरूकुल की संज्ञा प्रदान की। उन्होंने यह सब यहां विश्वविद्यालय के 35वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा। यह बात किसी बड़े व्यक्ति ने कोई पहली बार नहीं कही है, 35 सालों की प्रगति यात्रा में विभिन्न धार्मिक-आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक नेतृत्व व शैक्षिक व राजकीय क्षेत्र के उच्च स्तर के लोगों ने अपने मंतव्यों में समय-समय पर इसे प्रकट किया है और जी खोल कर सराहना की है। जैन विश्वभारती संस्थान अपनी 35 साल की प्रगति यात्रा में अपनी स्थापना के उद्देश्यों एवं अनुशास्ताओं के स्वप्नों-भावनाओं के अनुकूल सतत खरा उतरने के लिए प्रयत्नशील रहा है। यहां नैतिक, धार्मिक व आध्यात्मिक मूल्यों को कभी उपेक्षित नहीं किया गया, बल्कि उन्हें शिक्षा के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। आधुनिकतम शिक्षा के साथ प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों एवं भारतीय ज्ञान परम्परा को विश्वविद्यालय ने प्रारम्भ से ही अंगीकार किया है।

यह विश्वविद्यालय देश में सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक साधु-संतों को शिक्षित करने का अपूर्व बीड़ा भी उठा रहा है। यहां किसी भी सम्प्रदाय भेद के बिना सभी साधुओं को निःशुल्क शिक्षा उनके लिए कक्षाओं की अनिवार्यता समाप्त कर दूरस्थ रहते हुए उच्च अध्ययन की सुविधा प्रदान करता है। उनकी परीक्षा आयोजन की व्यवस्था भी विशेष रूप से उनके स्थानों पर की जाती है। जैन विश्वभारती संस्थान ने अब तक 130 साधु-साध्वियों को पीएचडी की उपाधि प्रदान की है और वर्तमान में यहां 2500 साधु-संत अध्ययनरत हैं। यह विशेषता इस विश्वविद्यालय को देश में सबसे अलग खड़ा करती है।

प्राच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन के साथ उनके प्रचार-प्रसार पर भी यहां व्यापक कार्य किया जा रहा है। प्राकृत भाषा के लिए भारत सरकार द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान को पूरे देश का नॉडल केन्द्र बनाना गौरवपूर्ण है। यहां प्राकृत, संस्कृत, राजस्थानी भाषाओं और साहित्य के लिए अलग विभाग बनाकर कार्य किया जा रहा है। जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन के अध्ययन की अलग विभाग द्वारा व्यवस्था है। योग, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के लिए भी अलग से विभाग कार्यरत हैं। इन सभी विभागों की अपनी-अपनी उपलब्धियां हैं। ज्योतिष एवं वास्तु जैसी प्राचीन विद्याओं के पाठ्यक्रम भी यहां संचालित हैं। संस्थान द्वारा योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के लिए साढ़े पांच वर्षीय बी.एन.वाई.एस. डिग्री कोर्स में विद्यार्थियों को प्रवेश देकर प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण एवं रख-रखाव के लिए विश्वविद्यालय में अलग से केन्द्र बनाया गया है। भारत सरकार के सहयोग से इस केन्द्र द्वारा बड़ी संख्या में पांडुलिपियों को डिजीटलाईज्ड किया गया है एवं बड़ी संख्या में पांडुलिपियों को संरक्षित किया गया है। इसके लिए स्टाफ को प्रशिक्षित भी किया जा रहा है।

संस्थान में भौतिक संसाधनों से परिपूर्ण व संपन्न बनाने की दिशा में भी संस्थान ने प्रगति की है। संपूर्ण भवनों एवं परिसर को नवीनीकृत स्वरूप प्रदान किया गया है। पूर्ण इको फ्रेंडली स्वच्छ एवं हरितिमायुक्त वातावरण एवं सुरक्षित माहौल में यहाँ विद्यार्थी अपने आपको सहज एवं ऊर्जावान अनुभव करते हैं। माननीय कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की कुशल प्रशासनिक क्षमता एवं नेतृत्व कला के कारण यहाँ का शैक्षिक एवं गैरशैक्षिक कर्मचारी सहज भाव से स्फूर्त होकर कार्य करते हैं। यहाँ की विशेषता है कि सभी कर्मचारी प्रतिदिन अपना काम करने से पहले ध्यान व प्राणायाम का अभ्यास करते हैं। संस्थान अपनी स्थापना के 36वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है और अब यह अधिक गति से अपने ध्येय के प्रति प्रगतिशील है।

– जगदीश यायावर (अतिथि सम्पादक)

35वां स्थापना दिवस समारोह

मानवीय मूल्यों, नैतिक विकास व बौद्धिक क्षमता के लिए समर्पित जैविभा विश्वविद्यालय है एक आधुनिक गुरुकुल– राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने संस्थान के 35वें स्थापना दिवस समारोह में 20 मार्च को मुख्य अतिथि के रूप में अपने सम्बोधन में इस विश्वविद्यालय को आधुनिक गुरुकुल की संज्ञा देते हुए कहा कि यह सुखद है कि यह विश्वविद्यालय नैतिक व चारित्रिक मूल्यों के प्रति समर्पित है। यहां मानवीय मूल्यों के साथ बौद्धिक क्षमता के विकास के लिए कार्य किया जा रहा है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राचीन भारतीय शिक्षा के गौरवशाली इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि प्राचीन विद्वानों चरक, सुश्रुत, गार्गी, मैत्रेयी आदि ऋषियों व विदुषियों ने बहुत अच्छा लिखा भी था। उनके ग्रंथ आज भी सबका मार्गदर्शन करते हैं।

राजस्थान ने महर्षि भारद्वाज के विमान निर्माण विधि के ग्रंथ की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इस ग्रंथ का शोधन कर 1895 में यहां विमान बनाकर उड़ाया गया था और वह 1500 फीट की ऊंचाई तक उड़ा और सफलता पूर्वक वापस लौटा भी। इस आविष्कार को यहां दबा कर रखा गया और इसके 8 साल बाद राईट बंधुओं ने वायुयान बनाया। हमारे देश में हजारों साल पहले से समस्त ज्ञान-विज्ञान लिखा हुआ है।

आचार्य तुलसी ने चरित्र निर्माण के लिए चलाया अणुव्रत आंदोलन

यहां सम्पोषणम् भवन में आयोजित समारोह में बोलते हुए राज्यपाल बागड़े ने इस बात पर गर्व व्यक्त किया कि लाडनूं आचार्य तुलसी की जन्मभूमि है। यहां उनके आदर्शों और ज्ञान को आत्मसात् करने की भावना को बल दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आचार्य तुलसी ने राष्ट्र में चरित्र निर्माण के लिए अणुव्रत आंदोलन शुरू किया और लाखों किमी

की पदयात्राएं की। उन्होंने हमेशा नशामुक्ति को महत्त्व दिया था। राज्यपाल ने विद्यार्थियों से कहा कि ज्ञान समुद्र की तरह अथाह होता है, इसमें से जितना भी ज्ञान ग्रहण कर सको, अवश्य करो। अपनी बौद्धिक क्षमता को बढ़ाओ। केवल सर्टिफिकेट प्राप्त करना ही शिक्षा नहीं होती, इसमें अपनी दिमागी क्षमता बढ़ाने और नैतिकता सीखना जरूरी है। उन्होंने सोहनलाल द्विवेदी की कविता 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' प्रस्तुत करके सबको प्रेरित किया और कहा कि कर्म का कोई बंधन नहीं होता। सोचना, चिंतन, मनन इनको रोको मत। विद्या को निरन्तर बांटो, यह आवश्यक है। उन्होंने शिक्षकों, प्राध्यापकों, प्राचार्यों को नई-नई जानकारियां प्राप्त करने और विद्यार्थियों को देने की जरूरत पर बल दिया और कहा कि अच्छी जानकारी उन तक पहुंचाने से उनकी बौद्धिक क्षमता बढ़ती है।

नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक शिक्षा भी जरूरी

स्थापना समारोह मुनिश्री जयकुमार व मुनिश्री विजय कुमार के सान्निध्य में हुआ। मुनिश्री जयकुमार ने अपने सम्बोधन में हर व्यक्ति में विकास की भावना होने और घर, विद्यालय होते हुए विश्वविद्यालय तक पहुंचने की यात्रा को विकास की चाह बताया और कहा कि जब तक नैतिक, धार्मिक व आध्यात्मिक शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता, तब तक उस शिक्षा को पूर्ण नहीं कहा जा सकता। उन्होंने बताया कि आचार्यों ने इसे ध्यान में रखते हुए नैतिक शिक्षा पर पूरा जोर दिया। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय इस दृष्टि से अपने उत्कृष्ट स्तर पर पहुंचा है। उन्होंने भावी पीढ़ी के निर्माण में डाक्टर, वकील, इंजीनियर ही नहीं, नैतिकता और आध्यात्मिकता का विकास जरूरी है, अन्यथा वह शिक्षा अधूरी होती है। मुनिश्री विजय कुमार ने संस्थान के 35वें वर्ष को युवावस्था बताई और इस अवधि में किए गए विकास को बेहतर बताया।

130 साधुओं ने की विश्वविद्यालय से पीएचडी

प्रारंभ में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने जैविभा विश्वविद्यालय के प्रारंभ से लेकर उसकी विकास यात्रा का वर्णन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और विकसित करने का कार्य कर रहा है। वास्तु, ज्योतिष, प्राकृत, संस्कृत, राजस्थानी भाषा आदि के लिए किए जा रहे कार्यों और ओनलाइन पाठ्यक्रमों, संगोष्ठियों आदि की उन्होंने जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय के 25 करोड़ के कोर्पस फंड, योग सम्बंधी 16 विश्वरिकॉर्ड स्थापित करने, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों को 6 पुरस्कार मिलने, 106 करोड़ से अधिक के प्रोजेक्ट सब्मिट किए जाने, 15 लाख का अनुदान प्राप्त होने, प्राचीन धरोहर पांडुलिपियों के संरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य, विश्वविद्यालय के प्राकृत भाषा का नोडल केंद्र स्थापित किए जाने आदि विशेष उपलब्धियों की जानकारी देते हुए एक विशिष्टता यह भी बताई कि यह पहला विश्वविद्यालय है, जहां साधु-साध्वियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। यहां अब तक 130 साधु-साध्वियों को पीएचडी की उपाधि दी जा चुकी और 2500 साधु-संत अध्ययनरत हैं। प्रो. दूगड़ ने अपने सम्बोधन में राज्यपाल का परिचय देते हुए उनका स्वागत किया। साथ ही राज्यपाल बागडे का शॉल, स्मृति चिह्न, उपहार आदि से सम्मान किया गया। विशिष्ट अतिथि जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़ का भी सम्मान किया गया।

स्थापना दिवस पर श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए किया गया शिक्षकों, कार्मिकों का सम्मान

महामहिम राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में आयोजित 35वें स्थापना दिवस समारोह में संस्थान में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए विभिन्न शिक्षकों, स्टाफ सदस्यों, अन्य कर्मचारियों और विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

समारोह में राज्यपाल द्वारा दो प्रोफेसर्स प्रो. दामोदर शास्त्री एवं प्रो. रेखा तिवाड़ी को उनकी जीवन-पर्यंत उपलब्धियों हेतु 'जीवन गौरव सम्मान' (लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड) से नवाजा गया। साथ ही संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन और आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की आचार्या डॉ. प्रगति भटनागर को 'बेस्ट फैकल्टी अवार्ड' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान उनके द्वारा किए जा रहे अकादमिक कार्यों, संस्थान के प्रति समर्पण एवं विभिन्न शैक्षणिक व शोध सम्बंधी उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए प्रदान किया गया। इनके अलावा समारोह में श्रेष्ठ कर्मचारी के रूप में सेवा अवार्ड का सम्मान दो कार्मिकों असिस्टेंट रजिस्ट्रार दीपाराम खोजा व पंकज भटनागर को प्रदान किया गया। संस्थान का 'कौशल निधि सम्मान' पवन सैन, राजेन्द्र बागड़ी, रामनारायण गैणा, हनुमानमल चौधरी को प्रदान किया गया। साथ ही शिव परिहार, किशन सैन, नवीन बहादुर, तिल कुमार, गजराज हरिजन को भी उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। बेस्ट उपलब्धि के लिए रक्षिता कोठारी, तृप्ति कोठारी, अवंतिका, कुंजल जांगिड, राधा शर्मा को सम्मानित किया गया। श्रेष्ठ चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में तीर्था घाले को एवं 'वृक्ष मित्र सम्मान' आकाश धवल को दिया गया।

बेस्ट स्टुडेंट अवार्ड छात्रा कान्ता सोनी, पूनम सोनी एवं अभिलाषा स्वामी को प्रदान किया गया। साथ ही विशेष उपलब्धियों हेतु संस्थान की विद्यार्थियों अभिलाषा स्वामी, खुशी जोधा, कोमल प्रजापत, कीर्ति बोकड़िया, सोनम कंवर व अर्पिता कोठारी को सम्मानित किया गया। खेलकूद गतिविधियों में प्रथम रहे विद्यार्थियों अनिता सूप, ममता स्वामी, राजपाल मंडा, कोमल प्रजापत, अनुपमा, जगमोहन, निशा, अर्चिता सोनी, कोमल जांगिड़, सारा बानो, तमन्ना कंवर, मीनाक्षी बाफना, प्रगति चौधरी आदि को भी राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने पुरस्कृत किया।

महामहिम राज्यपाल ने किए शिलान्यास व उद्घाटन

संस्थान में नवीनीकृत कुलपति कक्षा एवं सेमिनार हॉल का उद्घाटन 20 मार्च को राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने जैविभा चिकित्सालय का भूमि पूजन व शिलान्यास भी किया। राज्यपाल ने पिछले 35 सालों से जैविभा विश्वविद्यालय के विकास को सराहनीय बताया और कहा कि केवल आधारभूत संरचनाओं में ही यह विश्वविद्यालय अग्रणी नहीं है, बल्कि समाज में परिवर्तन लाने व नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना, प्राचीन भारतीय ज्ञान की पुनर्स्थापना के लिए भी सतत् कार्यशील है। राज्यपाल यहां जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के 35वें स्थापना दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलसचिव प्रो. बीएल जैन, जिला कलक्टर पुखराज सैन, एसपी हनुमान प्रसाद मीणा, उपखंड अधिकारी मिथिलेश कुमार, पीआरओ अभिमन्यु सिंह राठौड़ आदि मौजूद रहे तथा जिला व उपखंड स्तर के सभी विभागीय अधिकारी एवं पुलिस प्रशासन भी साथ रहा।

जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष धर्मचंद लूंकड़, संरक्षक भागचंद बरड़िया, हंसराज डागा, सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार चोरड़िया, संपत डागा, राजेन्द्र खटेड़, लक्ष्मीपत बैंगाणी आदि प्रमुख व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

संस्थान के 35 वें स्थापना दिवस समारोह के द्वितीय सत्र में प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सबका मन मोहा। कार्यक्रमों की शुरुआत निशिता शर्मा समूह द्वारा गणेश वंदना से की गई। इसके पश्चात् हर्षिता कोठारी समूह द्वारा तमिल गानों की धुन पर नृत्य, मिताली एवं अनिषा द्वारा कृष्ण और अर्जुन का नृत्य, तमन्ना तंवर समूह द्वारा पंजाबी नृत्य, ऐश्वर्या सोनी द्वारा कत्थक, योग विभाग के विद्यार्थियों द्वारा डेमो के साथ नृत्य की प्रस्तुति, एकता समूह द्वारा हरियाणवी नृत्य, प्रकृति चौधरी द्वारा कविता, चंचल सोनी समूह द्वारा मराठी नृत्य, लाछा चौधरी समूह द्वारा अपनी संस्कृति का परिचय देने वाली राजस्थानी नृत्य की प्रस्तुति दी गई। इस सत्र में कुलपति द्वारा उत्कृष्ट कार्यों के लिए विभिन्न लोगों को सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन खुशी जोधा एवं प्रिया शर्मा ने किया।

सुप्रसिद्ध उद्योगपति के.एल. पटावरी हुए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में 'प्रोफेसर ऑफ प्रेक्टिस'

पटावरी हैं क्लोरीनेटेड पैराफिन का दुनिया के सबसे बड़े निर्माता व प्लास्टिसाईजर व पॉलिमर यौगिकों के मार्केट लीडर

दक्षिण एशिया में प्लास्टिसाइजर और पॉलीमर यौगिकों में सबसे बड़े निर्माता और मार्केट लीडर सुप्रसिद्ध के.एल.जे. ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज संस्थापक, केएलजे सेकेंडरी प्लास्टिसाइजर सेगमेंट में वैश्विक नेता है, जो क्लोरीनेटेड पैराफिन का दुनिया के सबसे बड़े निर्माता हैं, के.एल. पटावरी को जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय ने वाणिज्य संकाय में 'प्रोफेसर ऑफ प्रेक्टिस' के रूप में नामित किया गया है। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के सम्मान में विश्वविद्यालय ने उनके समक्ष विश्वविद्यालय के साथ जुड़ने के लिए उनके नाम के प्रस्ताव के सम्बंध में विश्वविद्यालय की विगत प्रबंधन बोर्ड की 106वीं बैठक में लिए गए निर्णय के बाद संस्थान के वाणिज्य संकाय में 'प्रोफेसर ऑफ प्रेक्टिस' के रूप में औपचारिक रूप से उन्हें नामित किया गया है।

मिलेगा व्यावसायिक रणनीतियों, सिद्धांतों का लाभ

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने पटावरी को नामित करते हुए प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बताया कि संस्थान के शैक्षणिक हिस्से के रूप में ऐसे अत्यधिक प्रतिष्ठित और बहुत सफल व्यावसायिक नेता के साथ जुड़ने का अवसर पाकर वास्तव में प्रसन्नता हो रही है। संस्थान उनके ज्ञान और विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए उत्सुक है, ताकि संस्थान के छात्र उनसे व्यावसायिक रणनीतियों, सिद्धांतों, नैतिकता, मूल्यों आदि के बारे में बहुत कुछ सीख सकें। उनका व्यापक औद्योगिक ज्ञान और पेशेवर विशेषज्ञता संस्थान के शैक्षणिक मानकों को बढ़ाएगी। उनकी अंतर्दृष्टि छात्रों को लाभान्वित करेगी और साथ ही संकाय के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।

प्रो. दूगड़ ने बताया कि वैश्विक मार्केट लीडर केएल पटावरी प्रसिद्ध और अत्यधिक सफल उद्योगपति और परोपकारी व्यक्ति हैं, उनकी विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक उपस्थिति है। दक्षिण एशिया में प्लास्टिसाइजर और पॉलीमर यौगिकों में सबसे बड़ी निर्माता और मार्केट लीडर कम्पनी के.एल.जे. ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज की स्थापना 1967 में उन्होंने की थी। वे केएलजे सेकेंडरी प्लास्टिसाइजर सेगमेंट में वैश्विक नेता है, जो क्लोरीनेटेड पैराफिन का दुनिया का सबसे बड़ा निर्माता है। उनके साथ जुड़ कर विश्वविद्यालय एवं विद्यार्थियों को पूर्ण लाभ प्राप्त हो सकेगा।

नूतन वर्ष पर लिए गए संकल्प पूरे वर्ष को सकारात्मक बनाते हैं- कुलपति प्रो. दूगड़

नूतन वर्ष अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के सेमिनार हॉल में नववर्ष के अवसर पर 'नूतन वर्ष अभिनंदन' कार्यक्रम का आयोजन 1 जनवरी को किया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने नये वर्ष का स्वागत संकल्प के साथ किए जाने की आवश्यकता बताई और कहा कि नूतन वर्ष पर लिए गये स्वस्थ एवं सकारात्मक संकल्प से पूरे वर्ष को सकारात्मक बनाया जा सकता है। उन्होंने सभी को नये वर्ष की शुभकामनायें देते हुए कहा कि यह वर्ष हम सभी के लिए नई आशाओं और संभावनाओं का वर्ष होगा, ऐसा विश्वास है। उन्होंने संस्थान के लिए नई उंचाइयों का वर्ष सिद्ध होने की आशा व्यक्त की। कार्यक्रम में प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, प्रो. रेखा तिवारी, प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. एल.के. व्यास, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक आदि ने भी नए साल की नई उम्मीदों को लेकर अपने उद्गार व्यक्त किये। कार्यक्रम में प्रो. दामोदर शास्त्री ने मंगलाचरण प्रस्तुत करते हुए शुभकामनायें व्यक्त की। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। अंत में उप कुलसचिव अभिनव सक्सेना ने आभार व्यक्त किया।

उप राष्ट्रपति से भेंट कर कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताई विश्वविद्यालय की विशेषताएं

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनसे नई दिल्ली में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से उनके निवास पर भेंट करके उन्हें जैन विश्वभारती संस्थान की स्थापना से लेकर शैक्षणिक यात्रा एवं अनुशास्ताओं के दिशा-निर्देशों व स्वप्नों के बारे में जानकारी दी। कुलपति ने उनसे महान् विचारक व मंत्रद्रष्टा आचार्यश्री महाप्रज्ञ की स्मृति में जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष आयोज्य 'आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रज्ञा-संवर्धिनी व्याख्यानमाला' में इस बार मुख्य अतिथि रहने तथा व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। उन्हें भारतीय संस्कृति, मूल्य-शिक्षा, आध्यात्मिकता, शांति की संस्कृति अथवा अपनी रुचि के अन्य संबंधित विषय पर व्याख्यान के लिए आग्रह किया गया। इस अवसर पर उन्हें आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया गया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने उन्हें अपनी सुविधा को ध्यान में रखते हुए अगस्त से अक्टूबर माह में कोई तिथि व्याख्यान के लिए तय करने का विकल्प प्रस्तुत किया, जिस पर उपराष्ट्रपति ने अपनी सहमति प्रदान की।

जैविभा विश्वविद्यालय एवं आचार्य महाप्रज्ञ के बारे में बताया

कुलपति प्रो. दूगड़ ने उन्हें बताया कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ युवा छात्र-छात्राओं के जीवन को नैतिक मूल्यों से युक्त करने का सकारात्मक उपक्रम में स्फूर्त यह जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय अपने तीन दशकों की शैक्षणिक यात्रा में सफल हुआ है। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद ने इस विश्वविद्यालय का मूल्यांकन करने के बाद इसे 'ए' ग्रेड प्रदान किया है। उन्होंने बताया कि संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सम्प्रदाय के 10वें आचार्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ एक अभिनव विचारक एवं एक अभूतपूर्व योगी थे, जिन्होंने एक अनूठी नवीन ध्यान-पद्धति 'प्रेक्षाध्यान' की शुरुआत की, जो आंतरिक शांति के मार्ग को प्रकाशित एवं प्रशस्त करती है। वे भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन तथा जैन आगम के प्रकाण्ड विद्वान् थे तथा उन्होंने 300 से अधिक पुस्तकों के विपुल साहित्य का सृजन किया। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आचार्यश्री महाप्रज्ञ से बहुत प्रभावित थे एवं उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के साथ प्रसिद्ध पुस्तक 'फैमिली एंड द नेशन' का सह-लेखन किया था। आचार्यश्री ने अपने जीवन-काल में एक लाख किलोमीटर से अधिक की असाधारण पद-यात्रा की एवं अपनी 'अहिंसा-यात्रा' के माध्यम से जन-मानस के मध्य अहिंसा, शांति एवं सद्भाव के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। प्रसिद्ध हिन्दी कवि रामधारी सिंह दिनकर ने उन्हें दूसरा विवेकानन्द कहा था। ऐसे महान् द्रष्टा आचार्यश्री महाप्रज्ञ की स्मृति में यह विश्वविद्यालस प्रतिवर्ष 'आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रज्ञा-संवर्धिनी व्याख्यानमाला' का आयोजन करता आया है।

अमेरिका के विश्वविद्यालय के साथ हुआ जैविभा विश्वविद्यालय का एमओयू

दोनों विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, छात्रों, प्रकाशनों, गतिविधियों, सेमिनार आदि में रहेगा परस्पर सहयोग

संयुक्त राज्य अमेरिका के टेक्सास स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ नोर्थ टेक्सास और लाडनूं के जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के बीच एमओयू सम्पन्न हुआ है। इस एमओयू द्वारा दोनों विश्वविद्यालयों के मध्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक सम्बंध बने हैं। इसके द्वारा दोनों विश्वविद्यालयों के मिशनरी उद्देश्यों व समान रूचि के परस्पर अध्ययन, गतिविधियों और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के लिए सहयोगात्मक आदान-प्रदान संभव हो सकेगा। इसके द्वारा दोनों विश्वविद्यालयों में छात्र गतिशीलता कार्यक्रम, रिसर्च प्रोजेक्ट्स में परस्पर सहयोग करने, परस्पर कोर्स, सेमिनार, संगोष्ठियों, व्याख्यान आदि शैक्षणिक व वैज्ञानिक विकास करने, शोध सहयोग एवं शिक्षकों के आदान-प्रदान करने के अलावा समान रूचि के प्रकाशनों एवं अन्य सामग्री का आदान-प्रदान आदि कार्य संभव हो पाएंगे।

इस एमओयू पर यूनिवर्सिटी ऑफ नोर्थ टेक्सास के अकेडमिक मामलों के प्रोवोस्ट एवं उपाध्यक्ष माईकल मैकफर्सन और जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. ए.पी. कौशिक ने हस्ताक्षर किए हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों के लिए मिला संस्थान के चार सदस्यों को प्रशासनिक स्तर पर सम्मान

सामाजिक समरसता, महिला सशक्तीतकरण, सामाजिक लेखन व सामाजिक कार्यों के लिए किया गया सम्मान

संस्थान की एक छात्रा व 3 स्टाफ सदस्यों सहित कुल चार सदस्यों का सम्मान हाल ही में 76वें गणतंत्र दिवस 26 जनवरी पर जिला मुख्यालय डीडवाना व चूरू तथा उपखंड मुख्यालय लाडनूं पर प्रशासन की ओर से आयोजित समारोहों के दौरान किया गया। यहां उपखंड स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में जैविभा विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन को अहिंसा, शांति एवं सामाजिक समरसता के क्षेत्र में संगोष्ठियों का आयोजन एवं साहित्य प्रकाशन क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए लाडनूं उपखंड प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया।

विश्वविद्यालय की असिस्टेंट प्रोफेसर प्रगति चौरड़िया को सुजानगढ में सामाजिक सरोकार के विभिन्न कार्यों में लगातार कार्यरत एवं महिला सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत महिलाओं में जागृति के सराहनीय कार्य करने पर चूरू जिला मुख्यालय पर आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में चूरू विधायक हरलाल सहारण, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्रसिंह राठौड़ व जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा द्वारा सम्मानित किया गया। संस्थान के कार्यालय सहायक डॉ. वीरेन्द्र भाटी को पिछले 30 सालों से विभिन्न सामाजिक व रचनात्मक लेखन कार्य के लिए डीडवाना जिला मुख्यालय पर जिला-प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय की छात्रा खुशी जोधा को भी जिला मुख्यालय डीडवाना पर आयोजित जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में उत्कृष्ट सामाजिक और अध्ययन कार्य के लिए जिला स्तर पर सम्मानित किया गया। जिला कलेक्टर पुखराज सेन द्वारा उसे यह सम्मान प्रदान किया गया। चारों सम्मान प्राप्त सदस्यों को जैविभा विश्वविद्यालय के स्टाफ ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

संस्थान की शोधार्थी अर्चना का राजस्थान कॉलेज शिक्षा विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर चयन

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने लक्ष्य, लगन और परिश्रम को बताया सफलता का राज

संस्थान की शोधार्थी छात्रा अर्चना रांकावत का चयन राजस्थान कॉलेज शिक्षा विभाग में असस्टिेंट प्रोफेसर अंग्रेजी के रूप में किया गया है। अर्चना संस्थान के अंग्रेजी विभाग से ही अपनी शोध कर रही है और शोध-कार्य के दौरान ही उसका यह चयन हो गया है। इस चयन के बाद शोधार्थी अर्चना रांकावत ने 29 जनवरी को कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ से मुलाकात की और उनकी अभिप्रेरणा, सहयोग और मार्गदर्शन के लिए आभार ज्ञापित किया है। प्रो. दूगड़ ने बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि लक्ष्य, लगन और परिश्रम से हर काम में सफलता मिलनी संभव होती है।

अन्य छात्राओं को भी मिला उच्च कॅरियर

ज्ञातव्य रहे कि इससे पूर्व विश्वविद्यालय के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रा रही अवन्तिका पुत्री लालाराम मेघवाल का चयन राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आरएएस) में हुआ है। अवन्तिका की आरएएस के रूप में प्रथम नियुक्ति कृषि उपज मंडी समिति नागौर में सचिव पंद पर हुई है। यहां की छात्रा दिव्या जांगिड़ का चयन असिस्टेंड प्रोफेसर पद पर सुजला कॉलेज में हुआ है और शिवानी चौधरी का चयन नेवी के लिए किया गया है। इसी प्रकार पूर्व में भी लगातार यहां के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों की नियुक्तियां केन्द्र व राज्य सरकारों एवं अन्य जगहों पर हुई हैं।

राजस्थानी भाषा साहित्य शोध केन्द्र

राजस्थानी भाषा व साहित्य में स्नातक-स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट करने की सुविधा प्रारम्भ

एकेडमिक कौंसिल से मिली स्वीकृति के बाद नए सत्र से प्रवेश प्रारम्भ

संस्थान में अध्ययन-अध्यापन में एक विषय और जुड़ चुका है। अब यहां राजस्थानी भाषा एवं साहित्य पर बी.ए., एम,ए, और पीएचडी तक अध्ययन व शोध किया जा सकेगा। इस सम्बंध में विश्वविद्यालय की एकेडमिक कौंसिल की स्वीकृति के बाद इसकी शुरूआत की जा रही है। राजस्थानी भाषा साहित्य शोध केन्द्र के प्रभारी प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास ने बताया कि जैन विश्वभारती संस्थान की एकेडेमिक कांउसिल द्वारा विश्वविद्यालय में राजस्थानी भाषा और साहित्य के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों को स्वीकृति प्रदान की गयी है। इस विश्वविद्यालय द्वारा आगामी शैक्षणिक सत्र 2025-26 में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर राजस्थानी भाषा और साहित्य विषय से संबंधित अध्यापन कार्य किया जाएगा। स्नातक स्तर पर बी.ए. कक्षाओं में दो वैकल्पिक विषयों के साथ तृतीय विषय के रूप में राजस्थानी साहित्य को लिया जा सकेगा। बी.ए. पाठ्यक्रम के प्रथम एवं द्वितीय सैमेस्टर में सामान्य हिन्दी अथवा सामान्य अंग्रेजी के साथ सामान्य राजस्थानी का भी चयन किया जा सकेगा। आगामी सत्र से ही एम.ए. स्तर पर भी राजस्थानी साहित्य के पाठ्यक्रम को प्रारम्भ किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के राजस्थानी भाषा साहित्य शोध केन्द्र को पीएच. डी. उपाधि हेतु के शोध कार्य करवाने हेतु भी स्वीकृति प्रदान कर दी गयी है। उन्होंने बताया कि स्नातक स्तर पर राजस्थानी साहित्य विषय लेने वाली छात्राओं को जोधपुर की एक संस्था द्वारा छात्रवृति भी प्रदान की जाएगी। एम.ए. के प्रवेशार्थी जो राजस्थानी साहित्य का चयन करेंगे, उन्हें भी छात्रवृति हेतु प्रयास किया जा रहा है।

प्राच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन व शोध का प्रमुख केन्द्र

जैन विश्वभारती संस्थान प्राच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन, शोध आदि का प्रमुख केन्द्र है। यहां हिंदी व अंग्रेजी भाषाओं के साथ प्राकृत व संस्कृत के लिए पृथक् विभाग बना हुआ है तथा उसमें व्यापक स्तर पर कार्य किया जा रहा है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान को देश का प्राकृत भाषा का प्रमुख केन्द्र बनाने की प्रक्रिया भी चल रही है और अब यह विश्वविद्यालय राजस्थानी भाषा और साहित्य पर भी बड़े पैमाने पर काम शुरू कर रहा है। जैविभा विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय में राजस्थानी साहित्य सम्बंधी प्राचीन पुस्तकों की भरमार है और यहां तो प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियां तक उपलब्ध है। लाडनूं के जाए-जन्मे तेरापंथ धर्मसंघ के गणाधिपति आचार्य तुलसी का भी बहुत सारा साहित्य राजस्थानी में है और अन्य आचार्यों के साथ जयाचार्य का राजस्थानी साहित्य रचना में में अभूतपूर्व योगदान रहा है। इस प्रकार शोधार्थियों के लिए यह सब बहुत ही सहायक सिद्ध हो सकेगा। लाडनूं का यह विश्वविद्यालय राजस्थानी भाषा के अध्ययन व अध्यापन एवं शोध के लिए सबसे बेहतर रहेगा।

राजस्थानी भाषा-साहित्य शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. व्यास को मिला 'मायड़ भाषा सम्मान'

संस्थान के राजस्थानी भाषा-साहित्य शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास को उनकी राजस्थानी भाषा और साहित्य को समर्पित सेवाओं और साहित्यिक योगदान को ध्यान में रखते हुए जोधपुर में राजस्थान दिवस के अवसर पर 30 व 31 मार्च को आयोजित दो दिवसीय समारोह में 'मायड़ भाषा सेवा सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया गया। मेहरानगढ़ महाराजा म्यूजियम ट्रस्ट जोधपुर के मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केंद्र एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के राजस्थानी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें यह 'मायड़ भाषा सेवा सम्मान' प्रदान किया गया। डॉ. व्यास को उनके द्वारा राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के संवर्धन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर किये वाले कार्यों को ध्यान में रखते हुए 30 मार्च को प्रदान किया गया।

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के राजस्थानी विभाग के 50 वर्ष पूर्ण होने पर मनाए गए 'उजास-उछब' राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के उत्सव कार्यक्रम में इसी विभाग में उनके द्वारा की गई सेवाओं के लिए उन्हें 31 मार्च को भी विशिष्ट सम्मान प्रदान किया गया। इस सम्मान समारोह में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के कुलपति डॉ. अजित कुमार कर्नाटक एवं साहित्य अकादमी नयी दिल्ली के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुनदेव चारण द्वारा उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में डॉ. व्यास ने 'राजस्थानी भाषा : उद्भव एवं विकास यात्रा' विषयक व्याख्यान भी प्रस्तुत किया। डॉ. व्यास ने कई ग्रंथों का लेखन एवं सम्पादन किया है। इन्होंने राजस्थानी साहित्य अकादमी की मासिक पत्रिका 'जागती जोत' का लगातार तीन वर्षों तक सम्पादन भी किया है।

मानवीय संवेदनाओं के बिना अस्तित्व को बचाना मुश्किल- प्रो. दूगड़

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ताओं ने बताई शांति की पृष्ठभूमि और प्रतिस्थापना के उपाय

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के प्रायोजकत्व में 21 मार्च को यहां सेमिनार हॉल में 'शाश्वत शांति प्राप्त करने और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए दार्शनिक साधन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता और वर्द्धमान महावीर विश्वविद्यालय कोटा के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच के मुख्य आतिथ्य में किया गया। उद्घाटन समारोह के विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल के प्रो. आशुतोष प्रधान थे तथा मुख्य वक्ता प्रमुख साहित्यकार डॉ. योगेन्द्र शर्मा, भीलवाड़ा रहे।

परस्पर-निर्भरता सहित तीन सिद्धांत आवश्यक

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि विश्व के सामने दो ही विकल्प हैं कि या तो महावीर, भारतीय मूल्यों और अहिंसा को चुना जाए अथवा महाविनाश के रास्ते पर बढें। हमें इन दोनों में से एक मार्ग पर चलने को कटिबद्ध होना होगा। आवश्यक है कि हम ऐसी कंडीशन पैदा करें, जो हमारे अस्तित्व को संरक्षित रखने में सहायक हों। आज दुनिया टेक्नोक्रेट के चरम तक पहुंच चुकी है, लेकिन पड़ौसी के घर के दरवाजे तक हम नहीं पहुंचे। भले ही कितने की टैक्नोक्रेट बन जाएं, पर जब तक मानवीय संवेदनाएं नहीं हैं, तो हम अस्तित्व को नहीं बचा सकते। उन्होंने भारतीय संस्कृति व जैन दर्शन के अनुसार तीन सिद्धांतों को आवश्यक बताया तथा कहा कि दूसरे सभी प्राणियों को अपने समान समझने से उनके प्रति दुर्भावना नहीं आ पाती। दूसरा परस्परता यानि सभी प्राणियों का जीवन एक-दूसरे पर निर्भर होना, जिसमें आत्मनिर्भरता के बजाए परस्पर-निर्भरता को महत्त्व देना जरूरी है, क्योंकि आत्मनिर्भरता से कट्टर राष्ट्रवाद और कट्टर व्यक्तिवाद बढता है। तीसरा है- अपरिग्रह सिद्धांत यानि अपनी इच्छाओं का परिसीमन करना। जो कुछ मिल गया है, उसकी सुखानुभूति के बजाय जो नहीं मिल पाया, उसके दुःख की अनुभूति अनुचित होती है। ये सभी भारतीय मूल्य ही विश्व में चिर शांति के लिए आवश्यक हैं।

व्यवस्थागत हिंसा को मिटाने के लिए नियम बदलने जरूरी

मुख्य अतिथि प्रो. नरेश दाधीच ने अपने सम्बोधन में व्यवस्थागत हिंसा को समाप्त करने के लिए समाज के विभिन्न नियमों को बदलने की जरूरत पर बल दिया और समाज में शांति स्थापित करने के लिए शांति प्राप्त करने के तरीकों एवं शांति के आधार को समझने की आवश्यकता बताई। उन्होंने यह जानने की आवश्यकता बताई कि व्यक्ति अशांत होता क्यों है। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति का स्वभाव व मान्यताएं अलग-अलग होती हैं और वे ही उसके अशांत होने का कारण बनती है। मुख्य वक्ता प्रमुख साहित्यकार डॉ. योगेन्द्र शर्मा ने त्रेता युग, द्वापर युग और आज तक के शांति प्रयासों के बावजूद शांति नहीं होने को व्याख्यायित किया और कहा कि अधिकांश युद्ध शांति की बहाली के लिए राष्ट्र में अशांति के जिम्मेदार दुष्टों के संहार के लिए किए जाते रहे हैं, जो आवश्यक होते हैं। भारत ने कभी पहले आक्रमण नहीं किया, पहले युद्ध का प्रयास नहीं किया। उन्होंने वीरों की शहादत का उदाहरण देते हुए कहा कि यह बलिदान देश में हम शांति और अहिंसा से रह सकें और सीमाओं पर शांति बनी रहे, इसके लिए वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियां दी।

विशिष्ट अतिथि प्रो. आशुतोष प्रधान ने देश के विकास के लिए शांति को जरूरी बताया और राष्ट्र रक्षा सम्बंधी अनेक उदाहरण दिए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया और स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम संयोजन सचिव डॉ. लिपि जैन ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय का प्रवर्तन किया। संगोष्ठी का प्रारम्भ मुमुक्षु बहिनों के मंगलगान के साथ किया गया। अंत में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया।

इच्छाओं पर नियंत्रण से ही शांति संभव- प्रो. सुषमा सिंघवी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में 29 शोध पत्र प्रस्तुत

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के प्रायोजकत्व में संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में 22 मार्च को यहां सेमिनार हॉल में 'शाश्वत शांति प्राप्त करने और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए दार्शनिक साधन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. सुषमा सिंघवी जयपुर ने कहा कि शांति पहले भीतर महसूस होनी चाहिए, तभी बाहर भी महसूस होने लगेगी। अपने अंदर शांति की वेव्स होगी तो वो बाहर की शांति को कैच कर सकेगी, तभी उसका प्रभाव पड़ेगा। व्यक्ति से प्रारम्भ होकर ही शांति विश्व की तरफ जा सकेगी। उन्होंने कहा कि इच्छाओं पर नियंत्रण से ही शांति संभव हो सकेगी। विश्व के सारे स्रोत कम होने का भ्रम फैलाया जा रहा है। हम केवल अपनी जरूरतों पर ध्यान दें, संग्रह नहीं करें, तो स्रोतों की न्यूनता नहीं लगेगी। उन्होंने लोभ, लालच नहीं करके संतोष करने की जरूरत पर बल दिया और कहा कि संग्रह के कंपीटिशन के कारण दमन और शोषण होता है। हमें परस्पर कम्पीटिशन की जगह हमें कोऑपरेशन करना

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के प्रायोजकत्व में संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में 22 मार्च को यहां सेमिनार हॉल में 'शाश्वत शांति प्राप्त करने और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए दार्शनिक साधन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. सुषमा सिंघवी जयपुर ने कहा कि शांति पहले भीतर महसूस होनी चाहिए, तभी बाहर भी महसूस होने लगेगी। अपने अंदर शांति की वेव्स होगी तो वो बाहर की शांति को कैच कर सकेगी, तभी उसका प्रभाव पड़ेगा। व्यक्ति से प्रारम्भ होकर ही शांति विश्व की तरफ जा सकेगी। उन्होंने कहा कि इच्छाओं पर नियंत्रण से ही शांति संभव हो सकेगी। विश्व के सारे स्रोत कम होने का भ्रम फैलाया जा रहा है। हम केवल अपनी जरूरतों पर ध्यान दें, संग्रह नहीं करें, तो स्रोतों की न्यूनता नहीं लगेगी। उन्होंने लोभ, लालच नहीं करके संतोष करने की जरूरत पर बल दिया और कहा कि संग्रह के कंपीटिशन के कारण दमन और शोषण होता है। हमें परस्पर कम्पीटिशन की जगह हमें कोऑपरेशन करना चाहिए। कम्पीटिशन सबकी स्वतंत्रता में बाधक होता है। परिग्रह और आसक्ति कि यह मेरा है, की बजाए हमें यह सबका है की सोच रखनी होगी। प्रो. सिंघवी ने शांति को व्यवहार में लाना जरूरी बताया और कहा कि अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत से शांति संभव है। शांति, सौहार्द, स्नेह अपने अंदर से शुरू करके उसका विस्तार करना चाहिए। उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों में परस्पर संवाद की आवश्यकता बताई और विविधताओं में समन्वय पुल बनाने से आएगा, दीवार बनाने से नहीं। उन्होंने शांति को शिक्षा पद्धति में शामिल करने की जरूरत बताई और कहा कि हर स्तर के पाठ्यक्रम में शांति का अध्याय होना चाहिए। प्रारमभ से लेकर उच्च शिक्षा तक हर कोर्स में शांति को जोड़ें और शांति की समझ पैदा करें।

जहां निर्भीकता होगी, वहां शांति होगी

मुख्य अतिथि उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय देहरादून के प्रो. दिनेश चंद्र शास्त्री ने छोटी-बड़ी हर हिंसा के दुष्प्रभावों को बताते हुए कहा कि जितने पशु काटे जाते हैं, उतने ही भूकम्प आते हैं। यह अध्ययन किया जा चुका। उन्होंने सतत शांति के लिए सभी ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों में शांति का समावेश आवश्यक बताया और इसके लिए प्रतिदिन की ईश्वर राधना व चिंतन को जरूरी माना। प्रो. शास्त्री ने टुकड़ों में शांति के बजाय समग्र शांति, समग्र कल्याण को महत्त्व दिया और कहा कि भारतीय जीवन मूल्यों को हृदयंगम करने के लिए अपने को कर्तव्यों पर केन्द्रित करें। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना कर्तव्य-पालन से ही जुड़ी हुई है। उन्होंने कहा कि जहां निर्भीकता होगी, अभय होगा, वहां शांति होती है। विश्व शांति के उपायों में उन्होंने दोनों संध्याकाल में ईश्वर का ध्यान, चतुर्दिक भावना, जिसमें मानसिक शांति व चित की निर्मलता, सुखी लोगों के साथ मैत्री, दुःखी, रोगी, महिला, बच्चों के साथ करूणा, मित्रों के साथ मुदिता और सामाजिक आचरण में यम का पालन आदि की आवश्यकताएं प्रतिपादित की। अध्यक्षता करते हुए प्रो. केएन व्यास ने तकनीकी साधनों-सुविधाओं के विकास, वैश्विक समाज और विकसित समाज आदि के बावजूद शांति नहीं रहने में 5 बाधाएं बताई और कहा कि जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद और आतंकवाद के कारण मनुष्य शांत नहीं रह पाता। इन सबके कारण हिंसा होती है। जहां कोई भी स्थिति वाद का रूप ले लेती है, वह झगड़ा-फसाद का कारण बन जाती है।

तीन श्रेष्ठ शोधपत्र वाचकों को किया पुरस्कृत

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विभिन्न सत्रों में कुल 29 शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए। विभिन्न उप विषयों पर प्रस्तुत इन शोधपत्रों में से तीन श्रेष्ठ पत्रों का चयन किया जाकर प्रस्तुतकर्ता सहभागियों को इस अवसर पर पुरस्कृत भी किया गया। इनमें जेएनयू के डॉ. निशांत कुमार, किरण जैन व सुनयना शामिल है, जिन्हें अतिथियों ने प्रशति पत्र और पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम का प्रारमभ मुमुक्षु बहिन के मंगलसंगान से किया गया। डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने अतिथि परिचय एवं स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। दो दिवसीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन कार्यक्रम की संयोजन सचिव डॉ. लिपि जैन ने किया। अंत में विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

फिट इंडिया मिशन

साप्ताहिक कार्यक्रम में किया यौगिक क्रियाओं एवं प्रेक्षाध्यान का अभ्यास

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया एवं यूजीसी के निर्देशानुसार 'फिट इंडिया मिशन' के तहत महिलाओं की शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के विकास के संदर्भ में 12 मार्च को आयोजित साप्ताहिक कार्यक्रम में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम-समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि इस एक सप्ताह के कार्यक्रम का शुभरम्भ प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में किया गया। इसके तहत योग विभाग की सहायक आचार्या डॉ. विनोद कस्वां ने छात्राओं को योग के अभ्यास का प्रशिक्षण दिया। प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं को प्रेक्षाध्यान की उपयोगिता के संबंध में जानकारी दी और प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। सहायक आचार्या स्नेहलता शर्मा ने अच्छे स्वास्थ्य की उपयोगिता बताई और छात्राओं को स्वस्थ रहने के सम्बंध में कुछ शारीरिक क्रियाकलापों की जानकारी दी। सप्ताह पर चले इस प्रशिक्षण में निरन्तर प्रतिदिन यौगिक क्रियाओं तथा प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया गया। समस्त कार्यक्रमों में समस्त छात्राओं के साथ संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे।

रोजगार परामर्श केंद्र में आयोजित अतिथि व्याख्यान में दी गई प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी जानकारी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित रोजगार परामर्श केंद्र के अंतर्गत छात्राओं के हितार्थ जीवन की भावी प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतरीन रोजगार अवसरों को देखते हुए लोहिया राजकीय महाविद्यालय चूरु के इतिहास विभाग से प्रोफेसर सुरेंद्र डी. सोनी का एक अतिथि व्याख्यान 21 अप्रेल को रखा गया।

अपने व्याख्यान में प्रो. सोनी ने छात्राओं में चित्त की स्थिरता एवं संयमित आहार को श्रेष्ठ अध्ययन के लिए लाजमी बताया और उन्होंने किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम के अनुसार सुनियोजित एवं नियमित अध्ययन को महत्त्वपूर्ण मानते हुए इतिहास एवं संस्कृति के उन सामान्य बिन्दुओं का विश्लेषणात्मक अध्यापन करवाया, जो अक्सर प्रतियोगी पाठ्यक्रमों का हिस्सा रहते हैं। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं उसमें मौजूद अक्षुण्ण नैतिक मूल्यों को किसी भी शिक्षा व्यवस्था में आदर्श बताते हुए भारतीय जीवन मूल्यों की गरिमा में निहित सौंदर्य को अभिव्यक्त किया, जिसकी वजह से यह आदर्श शिक्षा व्यवस्था आज भी कालजयी बनी हुई है।

उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में मौजूद नैतिक मूल्य नई शिक्षा नीति के निर्माण में साधक साबित हुए हैं। उन्होंने इस दौरान वर्तमान बदलते प्रतियोगी परिवेश में प्रश्नों की भाषा पर भी विस्तृत चर्चा की। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने व्याख्यान-कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने प्रारंभ में अतिथि व्याख्याता के प्रति स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। व्याख्यान के अंत में रोजगार परामर्श केंद्र प्रभारी अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया।

प्लेसमेंट एवं कॅरियर काउंसलिंग सेल

रोजगार प्लेसमेंट में हुआ 5 विद्यार्थियों का चयन

संस्थान की प्लेसमेंट एवं कॅरियर काउंसलिंग सेल द्वारा रोजगार प्लेसमेंट का आयोजन किया गया। इसमें श्री बालाजी इंडस्ट्री लाडनूं के उप निदेशक सुनील स्वामी तथा प्रबंधक हरेंद्र स्वामी की टीम ने विश्वविद्यालय में उपस्थित होकर 18 विद्यार्थियों का साक्षात्कार लिया, जिसमें से 5 विद्यार्थियों का अंनतिम रूप से (प्रोविजनल) चयन किया। डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने बताया कि संस्थान में अंतिम वर्ष में अध्यनरत विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए श्री बालाजी इंडस्ट्री लाडनूं तथा संस्थान की प्लेसमेंट एवं करियर काउंसलिंग सेल के संयुक्त तत्वाधान में रोजगार मेले का आयोजन किया गया, जिसमें 18 विद्यार्थियों ने रोजगार करने के प्रति अपनी रुचि दिखाते हुए साक्षात्कार दिया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों की शैक्षणिक योग्यता तथा साक्षात्कार के आधार पर टेलीकॉलर कंप्यूटर ऑपरेटर तथा अन्य पदों के लिए माया कंवर, करीना चिंडालिया, ममता चंडालिया, पूजा शर्मा तथा आकांक्षा लोहिया अनंतिम रूप से (प्रोविजनल) चयन किया गया। इस गतिविधि की संपूर्ण प्रक्रिया डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ तथा डॉ. लिपि जैन के मार्गदर्शन में संपन्न हुई।

म्युचुअल फंड में निवेश विकसित भारत के लिए एक बेहतरीन प्रकल्प

मासिक व्याख्यानमाला में वित्तीय बाजार पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के अंतर्गत 28 फरवरी को प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में वाणिज्य संकाय सदस्य मधुकर दाधीच ने 'वित्तीय बाजार' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए वित्तीय बाजार के मुद्रा व पूंजी बाजार पर विस्तृत चर्चा करते हुए शेयर मार्केट के बारे में सकारात्मक रूप से अवगत करवाया। उन्होंने म्युचुअल फंड को विकसित भारत के लिए एक बेहतरीन प्रकल्प मानते हुए बताया कि इन दिनों भारत में बहुचर्चित म्युचुअल फंड वाणिज्यिक दृष्टि से भारत के विकसित स्वरूप हेतु एक बेहतरीन विकल्प है, जिसकी विस्तृत जानकारी सभी के लिए महती आवश्यकता है। व्याख्यान को वैश्विक वित्त प्रबंधन के महत्त्व एवं उसके वर्तमान विकसित स्वरूप को उद्घाटित करने के उद्देश्य से रखा गया। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. त्रिपाठी ने व्याख्यान में मधुकर दाधीच की शैली और वाणिज्यिक जानकारी को प्रशंसनीय माना। उन्होंने वाणिज्य संबंधित शिक्षा-शास्त्रियों को इस क्षेत्र में सकारात्मक प्रचार के लिए पूरे मनोवेग के साथ उतर कर लोगों को आधुनिक विकासशील भारत की इस बेहतरीन विकसित विद्या से जोड़ने की सलाह भी दी। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, राधिका लोहिया, स्नेहलता शर्मा, डॉ. सुनीता इंदौरिया, ईर्या जैन, डॉ. मनीषा जैन, घासीलाल शर्मा आदि मौजूद रहे। संचालन इतिहास व्याख्याता प्रेयस सोनी ने किया।

पुलिस अधिकारियों ने दी साइबर फ्रॉड से बचने व सड़क सुरक्षा के लिए सजग रहने की सलाह

कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों को किया जागरूक

संस्थान में 6 जनवरी को आयोजित साइबर जागरूकता कार्यक्रम में पुलिस उप अधीक्षक विक्की नागपाल ने विद्यार्थियों को साइबर क्राइम से सचेत रहने और सड़क हादसों से बचाव के लिए यातायात नियमों का पालन करने की आवश्यकता बताई। सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाले अपराधों के बारे में जानकारियां देते हुए उन्होंने किसी के साथ ओटीपी, पिन या सीवीवी नंबर शेयर नहीं करने, पासवर्ड रखे जाने में सावधानियां बरतने, लॉटरी, कैशबैक, रिफण्ड, गिफ्ट आदि ऑनलाईन प्रलोभनों से सावधान रहने, इन्वेस्टमेंट या ऑनलाईन ट्रेडिंग एप्प के जरिये कम समय में ज्यादा पैसे कमाने वाली स्कीम पर विश्वास नहीं करने, अनजान लोगों से प्राप्त होने वाली वीडियो कॉल रिसीव नहीं करने और फ्रेन्ड रिक्वेस्ट स्वीकार नहीं करने, अनजान व्यक्ति द्वारा भेजे गये लिंक पर क्लिक नहीं करने, व्हाट्सअप या इंस्टाग्राम-फेसबुक और ट्रूकॉलर की डीपी में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के नाम वर्दी पहने फोटो या किसी परिचित व्यक्ति का फोटो दिखाई देने पर तत्काल विश्वास नहीं करने और किसी भी लेनदेन से पूर्व परिचित व्यक्ति से कॉल करके सत्यापन करने, ऑनलाईन सोशल साईट पर पर्सनल फोटो या वीडियो शेयर नहीं करने आदि के बारे में सावधानियों की जानकारी दी।

सजग व सुरक्षित रहने के लिए चेताया

पुलिस के साईबर विशेषज्ञ जितेन्द्र कुमार ने कार्यक्रम में साईबर क्राईम्स और पुलिस हेल्प लाईन के बारे में बताया। उन्होंने साइबर अपराधियों के नित-नये पनपते आपराधिक तरीकों से आगाह किया और उनसे बचाव के तरीके बताए। थानाधिकारी राजेश कुमार डूडी ने भी साईबर अपराधों से सचेत करते हुए उनसे सावधान रहने और अपराधों की सूचना व रिपोर्ट दर्ज करवाने के माध्यमों की जानकारी दी। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने सभी से 'सजग रहें और सुरक्षित रहें' के नारे को सार्थक करने की अपील करते हुए साईबर क्राइम और ट्राफिक रूल्स के बारे में बताया और कार्यक्रम का संचालन भी किया। अंत में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया।

'साइबर क्राइम जागरूकता' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में साइबर सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम पर 10 जनवरी को व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साइबर एक्सपर्ट महेश शर्मा ने 'साइबर कथा यात्रा' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए बताया कि हमारे साथ फ्रॉड होते हैं और हम परेशानी में फंस जाते है। इनके प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता है। उन्होंने 'डिजीटल अरेस्ट' के प्रति भी सावधान किया और कहा कि यह तेजी से फैलता नया साइबर स्कैम है। 'डिजीटल एरेस्ट' में अपराधी फर्जी सरकारी अधिकारी, पुलिस, सीबीआई, नारकोटिक्स, आरबीआई अधिकारी आदि बनकर वीडियो कॉल के माध्यम से डरा-धमका कर बड़ी रकम की वसूली करते हैं। इसके लिए सतर्कता रखने की की जरूरत है। साइबर ठगों द्वारा किये जाने वाले फोन कॉल, ई-मेल से संदेशों को इग्नोर करें, साइबर ठग कॉल पर बातचीत के दौरान गिरफ्तारी या कानूनी कार्रवाई की धमकी दें, तो घबराएं नहीं और जल्दबाजी भी नहीं दिखाएं। साथ ही अपनी बैंक डिटेल व यूपीआई आईडी शेयर नहीं करें। कॉल के स्क्रीनशॉट या वीडियो रिकॉर्डिंग सेव करें, ताकि आवश्यक होने पर उसका उपयोग किया जा सके तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 या वेबसाइट cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें। लाडनूं पुलिस थाने के थानाधिकारी सी.आई. राजेश कुमार डूडी ने 'साइबर अपराध' पर कहा कि साइबर अपराध व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारी संस्थाओं के लिए गंभीर

खतरा है और इससे महत्त्वपूर्ण वित्तीय नुकसान, प्रतिष्ठा को नुकसान हो सकता है।

पुलिस उप अधीक्षक विक्की नागपाल ने कहा कि सड़क सुरक्षा नियम और कानून के मुताबिक गाड़ी चलाते समय कभी भी मोबाइल फोन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। सीट-बेल्ट और हेलमेट अवश्य पहनें। फुटपाथों पर संभलकर चलें और जेब्रा क्रॉसिंग से ही क्रॉस करें। गति सीमा का ध्यान रखें। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रद्युम्न सिंह ने किया।

'बात-बात में बात बनाना, उनके बस की बात नहीं है, घर के लोगों को समझाना उनके बस की बात नहीं है'

कवि सम्मेलन में कवियों ने हंसाया, गुदगुदाया, वीर रस से किया ओतप्रोत, खूब लूटी तालियों की गड़गड़ाहट

संस्थान में विश्व कविता दिवस के अवसर 22 मार्च को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में यहां सेमिनार हॉल में हुए इस कवि सम्मेलन में हास्य रस और वीर रस के प्रख्यात कवियों ने अपनी प्रस्तुतियां देकर लोगों को खूब हंसाया और राष्ट्र प्रेम की ऊर्जा से ओतप्रोत कर दिया। पूरा हॉल बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट और वाह-वाही से गूंज उठा।

'दुनिया की हकीकत कह दूं'

सम्मेलन में कवि महेश दुबे ने 'दूध को दूध कह दूं, पानी को पानी कह दूं; जरा तो साथ दो दुनिया की हकीकत कह दूं' सुना कर खूब वाहवाही लूटी। उनकी हास्य कविता 'यह ट्रक का सामान है, रिक्शे में हरगिज आ नहीं सकता' सुनाई तो सभी लोटपोट हो गए। वीर रस के कवि डॉ. योगेन्द्र शर्मा ने अपनी कुछ कविताओं के साथ महत्वपूर्ण रचना परमवीर चक्र विजेता शहीद मनोज पांडे की बॉडी घर आने पर उसके पिता व माता की भावनाओं का चित्रण करके अनेक दर्शकों की आंखों को नम कर दिया।

उनके बस की बात नहीं है

सम्मेलन के संयोजक राजेश चेतन ने राजनीति, आतंकवाद, देशभक्ति आदि पर दिल को छू लेने वाली कविताएं प्रस्तुत की। उन्होंने अपने हास्य अंदाज में कहा, 'बात-बात में बात बनाना उनके बस की बात नहीं है, घर के लोगों को समझाना उनके बस की बात नहीं है।' इसी के साथ उन्होंने राजनेताओं पर भी गहरे कटाक्ष किए। अपनी कविता में वे

आगे कहते हैं, 'राहुल बाबा चुपके-चुपके बैंगकॉक पर घूम आए, पर दुल्हन के घर तक जाना उनके बस की बात नहीं है।' कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रो. नरेश दाधीच ने संत बुल्लेशाह से सम्बंधित रचना प्रस्तुत करते हुए बताया कि पाकिस्तान में आ चुके लाहौर और कसार शहर भगवान राम के पुत्रों लव ओर कुश के बसाए हुए हैं, यहीं पर बुल्लेशाह की मजार है। उन्होंने अपनी रचना में कहा, 'खड़े रहें चुपचाप जो राहें, दर्द सभी का जो सहते हैं। उनको यारों क्या कहते हैं, उनको बुल्लेशाह कहते हैं। सुनाकर सबकी प्रशंसा प्राप्त की। सम्मेलन में सभी कवियों का कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सम्मान किया। कवि सम्मेलन में विश्वविद्यालय का समस्त शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक स्टाफ मौजूद रहा।

संचार कौशल, समस्या-समाधान कौशल, नेतृत्व कौशल, एआई व नेटवर्किंग तकनीक के उपयोग के बारे में दिया प्रशिक्षण

पांच दिवसीय कौशल विकास कार्यशाला सम्पन्न

संस्थान के शिक्षा विभाग में विभागाध्यक्ष प्रो बीएल जैन के निर्देशन में विद्यार्थियों को उनके कौशल विकास और विभिन्न कौशलों के बारे में अधिकतम जानकारी देने और उन्हें संचार कौशल, समस्या-समाधान कौशल, और नेतृत्व कौशल को विकसित करने के लिए विभिन्न तकनीकों और रणनीतियों के बारे में बताने के लिए पांच दिवसीय कौशल विकास कार्यशाला का आयोजन 12 मार्च से किया गया। इस दौरान दिए गए प्रशिक्षण में एआई की महत्ता, उपयोग और जागरूकता का के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

कौशल कार्यशाला में एआई यानि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम मस्तिष्क) के उपयोग बारे में प्रकाश डाला गया। शिक्षा विभाग की सहायक आचार्य स्नेहा शर्मा ने छात्राओं को बताया कि आज छात्र-छात्राओं के लिए एआई विज्ञान को अपनाना बहुत आवश्यक है। देश-विदेश में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि और अन्य क्षेत्रों में कृत्रिम मस्तिष्क का उपयोग किया जा सकता हैं। स्नेहा शर्मा ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और उससे संबंधित आवश्यक उपकरणों के बारे में भी जानकारी दी और बताया कि एआई टूल्स का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को इस विषय के बारे में जागरूक करना है, ताकि वे जान सकें कि इस विज्ञान का उपयोग कैसे और कहाँ-कहाँ किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि एआई का उपयोग शोध, लेखनी और व्याकरण संबंधी अशुद्धियों को सुधारने में किया जा सकता है। इसके अलावा एआई का उपयोग लर्निंग प्लेटफॉर्म, शिक्षक प्रशिक्षण और कोडिंग व प्रोग्रामिंग में भी किया जा सकता है। महिला सशक्तीकरण के कार्यक्रम के दौरान, छात्राओं को एआई के उपयोग के माध्यम से अपनी सुरक्षा और उत्थान के लिए कार्य करने वाले अन्य उपकरणों के बारे में सुझाव दिए। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को एआई के उपयोग के बारे में जागरूक करना और उन्हें अपने भविष्य के लिए तैयार करना था। स्नेहा शर्मा ने बताया कि सशक्तीकरण समाज में एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है, खासकर जब इसका उपयोग विज्ञान और ज्ञान के आधार पर स्त्री के विकास के लिए किया जाता है। कार्यक्रम में विभाग के सभी सहायक आचार्य, आचार्य और छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

कौशल विकास के लिए किया प्रेरित

पांच दिवसीय कौशल कार्यशाला के अंतिम दिवस विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों और सीखी गई जानकारियों के बारे में चर्चा की तथा बताया कि कार्यशाला से उनके कौशल विकास में क्या मदद मिल सकी। इस अवसर पर उन्हें अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने ए.आई. टूल्स जैसे गामा, चैट जीपीटी, मेटा आदि के बारे में बताया और साइबर सेक्यूरिटी से भी अवगत करवाया। उपकुलसचिव अभिनव सक्सेना ने विद्यार्थियों को अपने प्रोफेशनल स्किल डेवलपमेंट पर कार्य करने और चीजों को काम में लेने की तकनीक के बारे में बताया।

सहायक आचार्य स्नेहा शर्मा ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स के बारे में अपने कौशल विकास में इसका उपयोग करने के बारे में जानकारी दी। विभाग के सहायक दीपक माथुर ने छात्राध्यापिकाओं को नेटवर्किंग, ईमेल आदि के उपयोग द्वारा कौशल विकास के तरीके बताए। उन्होंने वेबसाइट आदि पर अपना डेटा अपलोड करने और जानकारी उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक तथ्यों और क्षमताओं के बारे में विद्यार्थियों को बताया।

अखिल राजस्थान अन्तर-महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में कोमल प्रजापत प्रथम

संस्थान की छात्रा कोमल प्रजापत ने कुचामन महाविद्यालय में 7-8 फरवरी को आयोजित अखिल राजस्थान अन्तर- महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में 35 कॉलेज के 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। कोमल को इस सफलता पर प्रमाण-पत्र और 5100 रुपए नकद पारितोषिक प्रदान किए गए। कोमल प्रजापत पुत्री पुखराज प्रजापत संस्थान के शिक्षा विभाग में बीए-बीएड में छठवें सेमेस्टर की छात्रा है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कोमल को शुभकामनायें देते हुए आगे बढने की शुभाशंसाएं दी हैं।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी ने झंडे गाड़े

जिला प्रतियोगिता में प्रथम और अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान पर रही

संस्थान की होनहार छात्रा अभिलाषा स्वामी वाद-विवाद प्रतियोगिता में सभी जगह अपने झंडे गाड़ रही है। उसने हाल ही में लगातार दो प्रतियोगिताओं में अपना परचम फहराया है। नागौर के मूंडवा में तेजास्थली के वीर तेजा महिला शिक्षण एवं शोध संस्थान में 13 जनवरी को आयोजित जिला स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इससे पूर्व सुजला कॉलेज (ज्ञानीराम हरकचंद सरावगी महाविद्यालय, सुजानगढ़) में आयोजित की गई अखिल राजस्थान अंतरमहाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता 2024-25 में भी उसने भाग लिया और उसमें उसने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। उसे वहां प्रमाण पत्र और 7100 रुपए नकद पारितोषिक के रूप में प्रदान किए गए थे। मूंडवा में उसे 2500 रूपए नकद पारितोषिक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। अभिलाषा स्वामी पुत्र बीरमा राम स्वामी जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में बीए-बीएड में सेवंथ सेमेस्टर की छात्रा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा संस्कृति, संस्कार, मूल्य, नैतिकता एवं चरित्र को बचाने में सक्षम

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 4 जनवरी को आयोजित संकाय संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत 4 जनवरी को 'भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' विषय पर विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अपने व्याख्यान में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को विशेष महत्त्व दिया गया है। भारत के सभी पाठ्यक्रमों में इसे अनिवार्य रूप से लागू करने की बात की गई है। भारतीय ज्ञान परम्परा का प्राचीनकाल से ही शिक्षा, कला, विज्ञान, चिकित्सा, कृषि, दर्शन, साहित्य, रोजगार आदि के क्षेत्र में विशिष्ट अवदान रहा है। जिन परंपराओं से हमारी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता आज तक बची हुई हैं। जिन उपलब्धियां, विश्वास, कला-कौशल, रीति-रिवाज, मान्यताएं, त्यौहार, पर्व, जयंती, दिवस से हमारी संस्कृति अक्षुण्ण है। वह भारतीय संस्कशति कहीं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से विस्मृति के गर्त में नहीं चली जाए। चाहे वे वर्तमान जीवन पद्धति से मेल में नहीं खाती हो, लेकिन उसको बनाए रखना जरूरी है और इसके लिए पुरातन ज्ञान निधि को संरक्षित रखना होगा, क्योंकि यही ज्ञान परम्परा संस्कृति, संस्कार, मूल्य, नैतिकता एवं चरित्र को बचाने में सक्षम है। इन परंपराओं के कारण ही हमारी भारतीय संस्कृति व संस्कार कुछ बच पाए हैं। हमारी परंपराएं वैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक भावनाओं से जुड़ी है। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

'विकसित भारत यंग लीडर्स' डायलॉग पर दो दिवसीय युवा कार्यक्रम सम्पन्न

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'विकसित भारत यंग लीडर्स' डायलॉग के अंतर्गत 13 जनवरी को द्विदिवसीय युवा दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि स्वामी विवेकानंद के जीवन-पाथेय को युवाओं के मध्य प्रसारित करने और उनके जीवन मूल्यों और आदर्शों का अनुसरण करने से सभी कठिनाइयों ओर विसंगतियों को दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आने वाला

भविष्य युवाओं का है। समय का सदुपयोग, नित्य अध्ययन तथा परमात्मा को प्राप्त करने के सभी मार्ग विवेकानन्द की जीवनचर्या से सीखा और समझा जा सकता है। विभाग की छात्राओं कोमल स्वामी और मनीषा चौधरी ने इस सम्बंध में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने विद्यार्थी के जीवन को आदर्शो से भरने और विवेकानन्द की छवि को अपने अंदर उतारने के उपाय बताए। विभाग के सहायक आचार्य खुशाल जांगिड़ ने अपने विचारों में विवेकानद के जीवन आदर्शो ओर प्रेरणा को बताया। सहायक आचार्या डॉ. आभा सिंह ने छात्रों को युवा होने के नाते भारतीय व्यवस्था में अपना सहयोग करने हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर सभी सहायक आचार्य व छात्राएं उपस्थित रहीं।

आचार्य सिद्धसेन दिवाकर कृत 'सन्मतितर्क प्रकरण' ग्रंथ पर 10 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन विभाग के तत्वावधान में एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के प्रायोजन में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में 19 फरवरी से 28 फरवरी तक आयोजित 10 दिवसीय 'आचार्य सिद्धसेन दिवाकर कृत सन्मतितर्क प्रकरण' विषयक ग्रंथ पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला में एमरेट्स प्रोफेसर प्रो. सुषमा सिंघवी जयपुर, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के जैन अध्ययन केंद्र में प्रोफेसर प्रो. धर्मचंद जैन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर के जैन धर्म दर्शन तथा प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य के प्रख्यात विद्वान प्रो. श्रेयांस कुमार सिंघई आदि ने अपने व्याख्यान विभिन्न विषयों व उप विषयों पर प्रस्तुत किए।

सामान्य और विशेष निरपेक्ष नही हैं

आचार्य सिद्धसेन दिवाकर कृत सन्मतितर्कप्रकरण' विषय राष्ट्रीय कार्यशाला में जैन दर्शन की लब्धप्रतिष्ठित विदुषी, एमरेट्स प्रोफेसर प्रो. सुषमा सिंघवी जयपुर ने सम्मतितर्क प्रकरण के सामान्य-विशेष कांड पर व्याख्यान देते हुए सन्मतितर्क के तृतीयकाण्ड की करीब 15 गाथाओं का विश्लेषण किया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि इसमें आचार्य द्वारा किए गए एकान्तवादियों के मतों के खण्डन के बारे में विस्तृत जानकारी दी और द्रव्य एवं पर्याय दृष्टि को उदाहरण सहित बताया। उन्होंने पर्याय के विभिन्न भेदों को बताते हुए पदार्थ के परिणमन के संदर्भों की व्याख्या की। प्रो. सिंघवी ने कहा कि पदार्थ में सामान्य, विशेष के बिना और विशेष, सामान्य के बिना नहीं रहते, द्रव्य परिणमनशील है। प्रारम्भ में कार्यशाला के समन्वयक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने प्रो. सुषमा सिंघवी का परिचय प्रस्तुत किया तथा शॉल व मोमेन्टो भेंट कर उनका सम्मान किया। सत्र का संयोजन इर्या जैन ने किया। अंत में डॉ. सुनीता इंदोरिया ने आभार व्यक्त किया।

दर्शन और ज्ञान के विभिन्न भेदों पर व्याख्यान

राष्ट्रीय कार्यशाला में जैन दर्शन के प्रतिष्ठित विद्वान एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के जैन अध्ययन केंद्र में प्रोफेसर प्रो. धर्मचंद जैन ने अपने व्याख्यान में सन्मतितर्क के सूत्रों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि इसमें आचार्य द्वारा दर्शन और ज्ञान के विभिन्न भेदों, पहलुओं और उदाहरणों पर प्रकाश डाला। प्रो. जैन ने ग्रंथ की 20वीं गाथा पर अपनी व्याख्या प्रस्तुत करते हुए चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अग्नि दर्शन और केवली दर्शन के बारे में उन्होंने विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि दर्शन को शब्द से कहना कठिन है, लेकिन ज्ञान को कहा जा सकता है। 'केवल ज्ञान' भी विशेष शब्द युक्त ही होता है। चेतना से जब जानने की इच्छा करते हैं, तो दर्शन होगा और फिर ज्ञान होगा। दर्शन से ज्ञान का उद्गम होता है। ज्ञान से दर्शन नहीं हो सकता। उन्होंने शुद्ध ज्ञान, मति ज्ञान, अवधि ज्ञान आदि पांच प्रकार के ज्ञान का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि 'मन' के द्वारा दर्शन हो सकता है, लेकिन 'मन' का दर्शन कभी नहीं हो सकता। 'केवल ज्ञान' में मन के पर्याय का अनुमान हो जाता है, लेकिन मन का दर्शन नहीं हो सकता। केवल ज्ञानी को कभी पढने की आवश्यकता भी नहीं होती। कार्यक्रम के अध्यक्ष जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि आचार्य सिद्धसेन दिवाकर रचित सन्मति तर्क प्रकरण एक महनीय ग्रंथ है। इस ग्रंथ में जैन दर्शन के अनेकान्तवाद से जुड़े सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही न्याय-वैशेषिक और बौद्ध दर्शनों की समीक्षा भी की गई है। इसमें सिद्धसेन ने शास्त्रीय जैन नय को दो श्रेणियों में बांटा है और तर्क दिया है कि वास्तविकता के संभावित नय या दृष्टिकोणों की संख्या असीमित है। ग्रंथ में श्रुतदर्शन की स्वतंत्र अवधारणा का निरसन किया गया है। द्रव्याधिकादि नय, सप्तभंगी, और ज्ञानदर्शनाभेदवाद जैसे जैन दर्शन के कई विषयों की चर्चा इस ग्रंथ में सिद्धसेन ने की है। कार्यक्रम के अंत में इर्या जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा जैन ने किया।

सन्मतिसूत्र की 17 गाथाओं की मीमांसा

राष्ट्रीय कार्यशाला में 27 फरवरी को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर के जैन धर्म दर्शन तथा प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य के प्रख्यात विद्वान प्रो. श्रेयांस कुमार सिंघई ने सम्मतितर्कप्रकरण के सामान्य विशेष कांड पर व्याख्यान दिया। प्रो सिंघई ने सन्मतिसूत्र की करीब 17 गाथाओं की मीमांसा करते हुए कहा कि दर्शन उपयोग की प्रथम भूमिका है, जिसे विशेष रहित या सामान्य ग्रहण भी कहते है। यदि इस प्रकार की भूमिका न हो, तो किसी वस्तु का ज्ञान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि वास्तव में जीव वस्तुओं को जानते समय 'मैं किसी वस्तु विशेष को जानूं या नहीं जानूं' इस प्रकार का विशेष पक्षपात न कर सामान्य रूप से जानता है।

प्रो सिंघई ने देश भर से आये हुए विद्वानों को प्रशिक्षण देते हुए कहा कि उपयोग चेतना का ही परिणमन है, जो नय की अपेक्षा जीव की एक पर्याय मात्र है। उपयोग के दर्शनोपयोग और ज्ञानपयोग की चर्चा करते हुए इनके अनेक भेदों उपभेदों की व्याख्या की। उन्होंने विविध उदाहरणों के माध्यम से समझाते हुए कहा कि सामान्य का अर्थ द्रव्य (आत्मा) है। उन्होने क्षेत्र एवं काल के सिद्धांत के आधार पर वस्तुज्ञान की प्रक्रिया को समझाया। इस अवसर पर कार्यशाला के समन्वयक प्रो आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने प्रो सिंघई का परिचय दिया एवं उनका शॉल व मोमेन्टो भेंट कर सम्मान किया। सत्र का संयोजन सुश्री इर्या जैन ने किया। आभार डॉ. सुनीता इंदोरिया ने किया।

संस्थान में चल रही 10 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन पर 28 फरवरी को कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड की अध्यक्षता में एवं समणी नियोजिका समणी मधुर प्रज्ञा के सानिध्य में समापन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वाल्मिकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल के कुलपति प्रो रमेशचन्द्र भारद्वाज रहे।

श्रमण संस्कृति के जैन व बौद्ध दर्शन में काफी समानताएं हैं– डॉ. तमोघ्न सरकार

'जैन व बौद्ध दर्शन : कितने पास, कितने दूर' विषय पर वेबिनार आयोजित

संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग तथा अहिंसा एवं शांति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'जैन व बौद्ध दर्शन : कितने दूर, कितने पास' विषय पर 23 जनवरी को आयोजित वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए जोधपुर यूनिवर्सिटी कोलकाता के दर्शनशास्त्र के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. तमोघ्न सरकार ने कहा है कि जैन व बौद्ध दर्शन दोनों ही ब्राह्मण दर्शन के विपरीत माने गए हैं। दोनों मूल रूप से श्रमण संस्कृति के हैं, जिनमें काफी समानताएं हैं। ब्राह्मण व वैदिक सांस्कृतिक धाराओं से ये पूरी तरह से अलग हैं। उन्होंने कहा कि इन दोनों दर्शन द्वारा ब्राह्मणवादी सोच को पूरी तरह से खारिज कर दिया। इनकी मान्यताओं, जातिवाद, कर्मकांड आदि सभी को स्वीकार नहीं किया। डॉ. तमोघ्न सरकार ने महावीर व बुद्ध की पृष्ठभूमियों के सम्बंध में जानकारी देते हुए उनकी समानता बताई। जैन और बौद्ध परमपराओं के प्रारम्भिक काल से लेकर भविष्य की परिकल्पनाओं तक पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम की संयोजना डॉ. समणी रोहिणीप्रज्ञा ने की। वेबिनार का प्रारम्भ डॉ. ईर्या जैन के मंगलाचरण से किया गया। प्रारम्भ में जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य व विषय-प्रस्तावना की। अंत में डॉ. रामदेव साहू ने आभार ज्ञापित किया। वेबिनार में 100 से अधिक लोगों ने सहभागिता की। वेबिनार का संचालन डॉ. मनीषा जैन ने किया।

भगवान महावीर के सिद्धांतों पर परिचर्चा का आयोजन 2623वीं जयंती पर एक दिवसीय समारोह

संस्थान के जैन धर्म एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्वावधान में भगवान महावीर की 2623वीं जन्म-जयंती पर 9 अप्रेल को एक दिवसीय समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में भगवान महावीर से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर शोध-पत्रों का वाचन किया गया और दूसरे सत्र में विभिन्न विद्वानों द्वारा महावीर के सिद्धांतों को लेकर परिचर्चा का आयोजन किया गया। समारोह के अंतिम सत्र में प्रमुख विद्वानों प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. जिनेन्द्र जैन व प्रो. बीएल जैन ने परिचर्चा में हिस्सा लिया। परिचर्चा में भगवान महावीर के सार्वभौमिक अवदान, ज्ञान और आचार का समन्वय, अनेकांत का स्वरूप और अनन्त संभावनाएं, आंतरिक शक्तियों को जीतना और महावीर बनना, प्राणी मात्र से मैत्री भाव और पर्यावरणीय संरक्षण, शिक्षा में आध्यात्मिकता और अहिंसा का समावेश, अणुव्रतों और महाव्रतों की स्वीकार्यता आदि विषयों पर विचार व्यक्त किए गए।

इन सबने किया पत्रवाचन

जयंती समारोह का प्रथम सत्र विभागाध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस सत्र की मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी थी और विशिष्ट अतिथि राजस्थानी भाषा एवं साहित्य केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास थे। सत्र के प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य डॉ. रामदेव साहू ने प्रस्तुत किया। मंगलाचारण ईर्या जैन शास्त्री ने प्रस्तुत किया। इस सत्र में मीनाक्षी बाफना, कांता सोनी, मुमुक्षु अंजलि, मुमुक्षु चंदन, मीनाक्षी भंसाली, राखी शर्मा, कोमल जांगिड़, संगीता जानूं, कोमल स्वामी, अंकिता अचेरा, प्रिया शर्मा व पूनम सोनी ने अपने पत्र-वाचन में भगवान महावीर की दृष्टि में अणुव्रत, महावीर का जीवन दर्शन, अप्ररिग्रह सिद्धांत, आत्मवाद, सार्वभौमिक अवदान, व्यक्तित्व व कर्तृत्व, आत्मा की खोज, आहार विवेचन और महावीर की साधना विषयों पर विचार व्यक्त किए गए।

समस्त बुराइयों का मूल मिथ्या दृष्टिकोण- डॉ. वीरबाला छाजेड़

'जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन का वैशिष्ट्य' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्वावधान में 5 अप्रेल को साप्ताहिक व्याख्यान का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुई इस व्याख्यानमाला में 'जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन का वैशिष्ट्य' विषय पर डॉ. वीरबाला छाजेड़ ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए बताया कि जैन दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण विषय 'सम्यक्त्व' है। उन्होंने बुराई की वास्तविक जड़ मिथ्या दृष्टिकोण को बताया और कहा कि दृष्टिकोण सही नहीं होने पर न तो व्यक्ति को समझा जा सकता है और न समस्याओं का हल किया जा सकता है। आज के शारीरिक व मानसिक तनावों का हल हम भौतिकता में ढूंढ रहे हैं। लेकिन, गलत जगह ढूंढने से समाधान नहीं हो सकता। उन्होंने बताया, विवेक को ही धर्म बताया गया है। विवेकपूर्वक सबको समझना आवश्यक है। सब जीवों की आत्मा एक है और सबको दुःख व कष्ट होते हैं, यह जानने से ही समानता संभव हो सकती है। जो व्यक्ति आत्मा को जान लेता है, वह सबकुछ जान लेता है।

कभी एक वाक्य में पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता

डॉ. वीरबाला ने कहा कि सम्यक दर्शन को व्यवहार नय और निश्चय की दृष्टि से समझने की जरूरत है। पूर्ण सत्य को एक वाक्य में नहीं बताया जा सकता है। सत्यांश ही कहा जा सकता है। हर वस्तु को उसके वास्तविक रूप में जानना ही सम्यक् दर्शन कहा जा सकता हैं। उन्होंने बताया कि व्यवहार नय से सम्यक् दर्शन के स्वरूप में देव, गुरू व धर्म के प्रति हमारी आस्था होनी चाहिए। जीव, अजीव, पुण्य, पाप आदि नव तत्त्वों को जानना जरूरी है और धर्मास्तिकाय, अधमास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुदगलास्तिकाय आदि षट् द्रव्यों को जानना आवश्यक है। तत्त्वज्ञान की तरफ हमारा रूझान कम होता है। सम्यक् दर्शन की पहचान के लक्षण हैं- शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा व आस्तिक्य। जिसका कषाय शांत होता है, वह सम्यक् दृष्टि होती है। निर्वेद में संसार से विरक्ति होती है और अनुकम्पा में दया व करुणा के भाव पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि सबके प्रति होती है।

सम्यक् दर्शन के भूषण व मिथ्यात्वों का वर्णन

डॉ. छाजेड़ ने बताया कि आस्था की आवश्यकता भी जरूरी है। जैन दर्शन पूरा आत्मा पर टिका हुआ है और आत्मा पर आस्था नहीं रही तो जैन दर्शन ही नहीं रहता है। सम्यक् दर्शन के भूषण में उन्होंने स्थैर्य, भक्ति, प्रभावना, कौशल और तीर्थसेवा को बताया। मन को विचलित नहीं होने देना और धर्म में स्थिर कर देना होता है। सम्यक् दर्शन के दोषों में शंका, कांक्षा, विचिकित्सा यानि संशय व आत्महीनता, पर पाखंड संस्तव और पर पाखंड परिचय शामिल हैं। उन्होंने मिथ्यात्व के 10 प्रकार बताए और कहा कि जीव को अजीव समझना, अजीव को जीव समझना, धर्म को अधर्म समझना, साधु को असाधु समझना, असाधु को साधु समझना, मार्ग को कुमार्ग समझना, कुमार्ग को मार्ग समझना, बद्ध को मुक्त समझना तथा मुक्त को बद्ध समझना हैं। यह सब मिथ्यादृष्टि है। सम्यक्दृष्टि रखने से ही हमारी आत्मा ही परमात्मा बन सकती है। स्वयं चैतन्यवान हो सकते हैं। इसलिए अपने आप में कभी हीन भावना नहीं रखनी चाहिए। सब लोग अपना सम्यक् दृष्टि जीवन बनाएं। कर्ता भाव नहीं रखें। ज्ञाता-दृष्टा भाव आत्मा का मानें। शरीर की जरूरतें हैं संयोग के साथ होती है, जो भी करें कर्तव्यभाव से करें।

ज्ञान को जीवन में उतारा जाए

व्याख्यान के अंत में डॉ. वीरबाला छाजेड़ ने व्याख्यान के सहभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। अध्यक्षता करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने ज्ञान को जीवन में उतारे जाने की जरूरत बताई और कहा कि आचार्यों ने सम्यक् दर्शन में आत्मा को मानने की आवश्यकता बताई और कहा कि आत्मा को बिना माने दर्शन सम्यक् नहीं हो सकते। कार्यक्रम का प्रारम्भ ईर्या जैन शास्त्री ने मंगलाचरण करके किया। प्रमुख वक्ता डॉ. वीरबाला छाजेड़ का परिचय व स्वागत वक्तव्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रामदेव साहू ने किया। इस अवसर पर पंकज भटनागर, डॉ. जेपी सिंह, ओमप्रकाश गैणा, प्रगति चौरड़िया, अंजुबाला जैन, चन्दन जैन, हरेन्द्र गैणा, तरूण जैन, सुमन, ललिता जैन, डॉ. राजेश, सीताराम भादू, रामदेव, सुनीता, नवीन, प्रणीता तलेसरा, विमल, सुरेन्द्र, स्मिता जैन, मनीषा चौहान, स्मृति अरोड़ा, विमल गुणेचा, विद्या घोड़ावत, सुनीता इंदौरिया, नेहा वी शाह, सपना जैन आदि सहभागी रहे। कार्यक्रम में संचालन डॉ. मनीषा जैन ने किया।

'जैन आचार सिद्धांतों का उद्भव एवं विकास' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्वावधान में 'जैन आचार सिद्धांतों का उद्भव एवं विकास' विषय पर 29 मार्च को सहायक आचार्या डॉ. सुनीता इंदौरिया का व्याख्यान आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में विभागाध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में आयोजित इस व्याख्यान में मुख्य वक्ता डॉ. इंदौरिया ने ज्ञान के लिए आचार को आवश्यक बताया और कहा कि ज्ञान से आचार के श्रेय या अश्रेय होने का पता चलता है। उसे जानकर ही दुःख के हेतु का निवारण किया जा सकता है। कर्मबंध को तोड़ने के लिए जानना जरूरी होता है। उन्होंने संयममय जीवन पर जोर देते हुए कहा कि आचार का आधार सूत्र संयम ही है। भगवान महावीर ने कर्मबंध को दुःख का मूल कारण बताया है और इसका कारण होता है परिग्रह। परिग्रह का मूल प्रेरक तत्व है- ममत्व ओर आसक्ति। सम्पति वगैरह का संग्रह आसक्ति के कारण ही होता है और वह कर्मबंध से दुःखों में वृद्धि करता है। इससे पूर्व विषय प्रवर्तन करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. त्रिपाठी ने बताया कर्म करना आचरण का विषय है। अच्छे कर्म करके आत्मा में जोड़े जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि जैन दर्शन पुरूषार्थ को महत्व देता है। वर्धमान भी महावीर बने पुरूषार्थ के कारण। अगर कर्म के बाजार में व्यक्ति जीवन भर क्रय-विक्रय करता रहा तो आवागमन से मुक्त नहीं हो सकता। इसके लिए सम्यक् आवार जरूरी है। आचार से पहले ज्ञान जरूरी है। ज्ञान होने से ही सम्यक् आचार संभव है। जैन दर्शन ज्ञान को महत्व देता है और ज्ञान का मूल आचार है। हमारे विचारों में अनेकांत हो, वाणी में स्याद्वाद हो और कर्म में अहिंसा व शांति आवश्यक है। व्याख्यान कार्यक्रम का संचालन ईर्या जैन ने किया। कार्यक्रम में 60 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

विभागीय व्याख्यानमाला का आयोजन

'भारतीय दर्शन में आत्मा की अवधारणा' विषय पर व्याख्यान

संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में विभागीय व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 1 फरवरी को 'भारतीय दर्शन में आत्मा की अवधारणा' विषय पर विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए सभी आस्तिक दर्शनों एवं जैन तथा बौद्ध दर्शन में आत्म विषयक चिंतन की गंभीरता को सहज भाव से समझाया तथा वर्तमान में भी आत्म-चिंतन की उपयोगिता प्रतिपादित की। व्याख्यान का प्रारम्भ डॉ. ईर्या जैन के मंगलाचरण से किया गया। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रामदेव साहू ने प्रारम्भ मे स्वगत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में डॉ. सुनीता इंदौरिया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा जैन ने किया। व्याख्यान में 67 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

'भारतीय दर्शन में सामान्य व विशेष' पर व्याख्यान आयोजित

विभागीय व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 8 फरवरी को 'भारतीय दर्शन में सामान्य व विशेष' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रामदेव साहू ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए मुख्य रूप से न्याय, वैशेषिक, बौद्ध, जैन दर्शनों की अवधारणाओं में चिंतन की भिन्नता को स्पष्ट किया तथा पदार्थ ज्ञान के लिए इसकी उपयोगिता प्रतिपादित की। कार्यक्रम डॉ. ईर्या जैन के मंगलाचरण से किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

अंत में सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनीता इंदौरिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा जैन ने किया। इस अवसर पर 38 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

'जैन धर्म में पंचास्तिकाय' पर व्याख्यान आयोजित

विभागीय व्याख्यानमाला में 15 फरवरी को 'जैन धर्म में पंचास्तिकाय' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। विभाग की सहायक प्रोफेसर श्रीमती ईर्या जैन ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए पंचास्तिकाय की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए जीव-अजीव तत्त्वों की विशद व्याख्या की तथा अवधारणा के वैज्ञानिक महत्त्व को प्रतिपादित किया। प्रश्नोत्तर एवं शंका-समाधान के साथ व्याख्यान सम्पन्न किया गया। प्रारम्भ में विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. सुनीता इंदौरिया ने किया। कार्यक्रम में 26 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

'अनेकांत की व्यावहारिकता' विषय पर व्याख्यान आयोजित

विभागीय व्याख्यानमाला में01 मार्च को 'अनेकांत की व्यावहारिकता' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। डॉ. समणी शशिप्रज्ञा ने व्याख्यान में अनेकांत के स्वरूप एवं व्यावहारिकता पर व्यापक प्रकाश डाला। उन्होंने वर्तमान मानवीय क्रियाकलापों में अनेकांत की महत्ता को अनिवार्य रूप से दर्शाते हुए बताया कि समस्त समस्याओं का समाधान अनेकांत ही है। कार्यक्रम डॉ. मनीषा जैन के मंगलाचरण से प्रारम्भ किया गया। अंत में डॉ. सुनीता इंदौरिया ने आभार ज्ञापित किया। संचालन डॉ. ईर्या जैन ने किया। इस अवसर पर 43 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

'अणुव्रत आंदोलन की भविष्योन्मुखी दृष्टि' पर व्याख्यान आयोजित

विभागीय व्याख्यानमाला में 15 फरवरी को 'अणुव्रत आंदोलन की भविष्योन्मुखी दृष्टि' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जैन दर्शन संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो. प्रद्युम्न शाह ने व्याख्यान में अणुव्रत को मानव-जीवन के सर्वाधिक उपयोगी अंग के रूप में आवश्यक बताते हुए अणुव्रत की सार्थकता प्रकट की। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी व्यापक प्रकाश डाला।

डॉ. मनीषा जैन के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में डॉ. रामदेव साहू ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ईर्या जैन ने किया। इस अवसर पर 56 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

'वर्तमान समस्याओं का समाधान अनेकांतवाद से ही संभव है' पर व्याख्यान

विभागीय व्याख्यानमाला में 15 फरवरी को 'अणुव्रत आंदोलन की भविष्योन्मुखी दृष्टि' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। डॉ. प्रेमलता चौरड़िया ने व्याख्यान में अनेक जीवनोपयोगी उदाहरणों से स्पष्ट किया कि मनुष्य अपनी समस्याओं का समाधान अनेकांतवादी चिंतन से कैसे हल कर सकता है। डॉ. ईर्या जैन के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। स्वागत वक्तव्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने दिया। अंत में डॉ. रामदेव साहू ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा जैन ने किया। व्याख्यान के दौरान 28 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

आंतरिक शुद्धता के सूत्रों की प्रस्तुति एवं अहिंसा के व्यावहारिक प्रशिक्षण का करवाया अभ्यास

सेठश्री सूरजमल तापड़िया आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जसवंतगढ़ में एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा जसवंतगढ़ के सेठश्री सूरजमल तापड़िया आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में 1 मई को एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 223 प्रतिभागियों ने भाग लिया। शिविर का उद्देश्य युवाओं में अहिंसा के सिद्धांतों की गहरी समझ को विकसित करना तथा करुणा, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण जीवनशैली को बढ़ावा देना था। शिविर के विभिन्न सत्रों व्याख्यान, समूह चर्चा और व्यवहारिक अभ्यासों के माध्यम से जैन दर्शन, गांधीवादी विचारधारा एवं आंतरिक शुद्धता के सूत्रों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया। अहिंसा के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु प्रेक्षाध्यान को महत्त्वपूर्ण आयाम माना गया। डॉ. लिपि जैन ने शिविर को संबोधित करते हुए कहा कि आज संसार में हिंसा का प्रशिक्षण अनेक रूपों में दिया जा रहा है, लेकिन हमारा संस्थान वह दुर्लभ स्थान है, जहां अहिंसा का प्रशिक्षण सुनियोजित रूप से दिया जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि क्रोध, अभिमान, माया और अहंकार जैसी आंतरिक प्रवृत्तियां हमारे नकारात्मक व्यवहार की जड़ हैं। इन्हें समझना और नियंत्रित करना ही अहिंसक जीवन की ओर पहला कदम है।

अहिंसा महान आंतरिक साधना

अहिंसा एवं शांति विभाग के सह-आचार्य डॉ. आर.एस. राठौड़ ने कहा कि अहिंसा केवल बाहरी व्यवहार का विषय नहीं है, यह एक गहन आंतरिक साधना है। अहिंसक प्रशिक्षण का उद्देश्य केवल हिंसात्मक प्रवृत्तियों से बचना नहीं, बल्कि मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार करना है। उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण के चार प्रमुख स्तंभों पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि जब तक हमारे हृदय में करुणा, सहानुभूति और संवेदनशीलता का भाव नहीं जागेगा, तब तक अहिंसा केवल एक आदर्श बनकर रह जाएगी। हृदय का परिवर्तन आत्म-निरीक्षण और आध्यात्मिक साधना से ही संभव है। उन्होंने कहा एक अहिंसक जीवनशैली ही समाज में शांति और स्थायित्व ला सकती है। अहिंसा कोई एक दिन का प्रशिक्षण नहीं, बल्कि जीवनभर की साधना है।

सह-अस्तित्व एवं शांति की सीख जरूरी

विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने कहा कि हमारे विभाग का उद्देश्य केवल शांति और अहिंसा के सिद्धांतों की शिक्षा देना नहीं है, बल्कि आज के समय में इसकी प्रासंगिकता को भी समझाना है। हिंसा और संघर्षों से घिरी हुई दुनिया में यह विभाग युवाओं को सह-अस्तित्व और शांति का पालन करने के बारे में सिखाता है। उन्होंने कहा कि अहिंसा का प्रशिक्षण न केवल व्यक्तिगत जीवन को शांति प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक और वैश्विक स्तर पर भी शांति को बढ़ावा देता है। प्रतिभागियों की उत्साही भागीदारी और चिंतनशील संवादों से इस शिविर सार्थक और प्रभावशाली बना। अहिंसा एवं शांति विभाग ने भविष्य में भी ऐसे शिविरों का आयोजन किया जायेगा, जिससे समाज में स्थायी शांति और सह-अस्तित्व की भावना को बल मिल सके। शिविर के आयोजन में विभाग की छात्राओं माया कंवर खुशबू शर्मा, रुचिका पारीक तथा संगीता का भी योगदान रहा।

भियाणी गांव में युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग तथा शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 8 अप्रेल को भियाणी गांव में युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को अहिंसा, संयम और शांति जैसे मूल्यों से परिचित कराना और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देना था। अहिंसा एवं शांति विभाग के प्रतिनिधि डॉ. बलबीर सिंह चारण ने उपस्थित युवाओं से कहा कि अहिंसा केवल हिंसा से दूर रहना नहीं, बल्कि यह एक समग्र जीवन दृष्टिकोण है जिसमें करुणा, सहनशीलता और आत्म-नियंत्रण निहित है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपने व्यवहार में इन मूल्यों को अपनाएं। शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि डॉ. विष्णु कुमार ने कहा कि आज के युवाओं को केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि नैतिक और मानसिक मजबूती की भी आवश्यकता है। उन्होंने इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविरों को युवाओं के समग्र विकास के लिए आवश्यक बताया। शिक्षा विभाग की प्रतिनिधि डॉ. आभा सिंह ने कहा कि ग्रामीण युवाओं में सकारात्मक सोच और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना आज की आवश्यकता है। उन्होंने इस प्रयास को समाज में शांति और सद्भावना स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया।

शिविर के अंतर्गत स्वयं सेविकाएं गांव के विभिन्न घरों में जाकर लोगों से संवाद स्थापित किया और उन्हें अहिंसा, मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-नियंत्रण व शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व से जुड़ी जानकारी युक्त पंपलेट वितरित किए। स्वयं सेविका खुशी जोधा ने इस कार्य में सहभागिता निभाई और ग्रामीणों से सरल भाषा में चर्चा कर उन्हें अहिंसा के महत्व को समझाया। स्वयंसेविका लहरो, आशा मेघवाल, इशिता रजपुरोहित, हर्षिता स्वमी, ज्योत्सना, रिया आदि का सक्रिय योगदान रहा। यह प्रशिक्षण शिविर एक शांत, सादगीपूर्ण लेकिन सार्थक प्रयास रहा जिसमें विद्यार्थियों, विभागीय प्रतिनिधियों और स्वयं सेविकाओं ने मिलकर सहभागिता निभाई। आगामी समय में इस प्रकार के और शिविरों के आयोजन की योजना बनाई जा रही है ताकि अधिक से अधिक युवा इस संदेश से जुड़ सकें।

तीर्थंकर ऋषभदेव के योगदान को लेकर व्याख्यान का आयोजन

10 दिवसीय प्राकृत कार्यशाला में जैविभा विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने करवाया अध्यापन

'आत्मनिर्भर भारत के परिप्रेक्ष्य में तीर्थंकर ऋषभदेव का योगदान' विषय ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन कानपुर के छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज के आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोधपीठ कानपुर के तत्वावधान में प्रो. विनय कुमार पाठक कुलपति के संरक्षकत्व में तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म कल्याण के उपलक्ष्य में किया गया। इस कार्यक्रम के मार्गदर्शक के रूप में डॉ. आशीष जैन आचार्य एवं लाडनूं के जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा रही। इस व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रसिद्ध प्रो. नरेन्द्र जैन ने की। मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह थे। अध्यक्षता करते हुए प्रो. नरेन्द्र कुमार जैन ने तीर्थंकर ऋषभदेव एवं आत्मनिर्भर भारत को रेखांकित करते हुए कहा गया कि भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रणीत संस्कृति को श्रमण संस्कृति कहा गया है। उनका व्यक्तित्व लोकोपकारी, सार्वग्राही और सम्प्रदाय निरपेक्ष था। सभी सम्प्रदायों में उनके महनीय व्यक्तित्व का मूल्यांकलन किया गया है। मुख्य वक्ता प्रद्युम्न शाह ने बताया कि समाज को आत्म निर्भर, स्वाभिमान और स्वावलंबन की प्रेरणा जगाने में तीर्थंकर ऋषभदेव का अतुलनीय योगदान है। तीर्थंकर ऋषभदेव ने मानव को स्वावलंबी होना सिखाया। अयोध्या के राजा ऋषभदेव ने लोगों को खेती करना और अन्न उपजाना सिखाया। उन्होंने षट्कर्म की शिक्षा दी, जिनमें असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प थे। इन षट्कर्मों के माध्यम से मनुष्य को स्वावलंबी बनाया गया। तीर्थंकर राजा ऋषभदेव राज व्यवस्था के प्रथम उन्नायक थे।

10 दिवसीय प्राकृत कार्यशाला के परिणाम घोषित

इस अवसर पर जैन शोधपीठ द्वारा संचालित दस दिवसीय प्राकृत कार्यशाला का परीक्षा परिणाम शोध न्यास मंडल के प्रमुख सदस्य अरविन्द्र जैन ने घोषित किया और प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना स्थान प्राप्त अनीता दीदी, रश्मि जैन कटनी, आदिनाथ उपाध्ये, शिखा जैन एवं हर्षित मुनिराज के लिए शुभकामनाएं प्रदान की। दस दिवसीय कार्यशाला के अंतर्गत लाडनूं के जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय की समणी संगीत प्रज्ञा, ब्र. समता दीदी. डॉ. आशीष जैन, डॉ. पंकज जैन, पुलक जैन डॉ. कोमल चन्द्र जैन ने प्राकृत भाषा का अध्यापन कराया। इस अवसर पर प्रदीप जैन तिजारा वाले, सुधीन्द्र जैन, महेन्द्र जैन कटारिया, विनीत जैन त्रिभुवन जैन, डॉ. वीरचन्द्र जैन, डॉ. सुनील जैन संचय, नीलम जैन कानपुर, रेनु जैन, कृष्ण तिवारी, नीतू यादव आदि प्रमुख रूप से शामिल रहे।

बसन्त पंचमी से होता है प्रकृति में एक नई ऊर्जा का संचार

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित 4 फरवरी को बसन्त पंचमी महोत्सव के आयोजन में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्वों का अत्यधिक महत्त्व है। पर्वों के माध्यम से यहां प्रकृति के विभिन्न रूपों की पूजा की जाती रही है। बसन्त पंचमी पर्व से बसन्त ऋतु का प्रारम्भ होना माना गया है। इस समय प्रकृति में नई ऊर्जा का संचार होता है। प्रकृति नए रूप में प्रकट होती है और इससे हमारा मन-मष्तिक प्रसन्न और प्रफुल्लित होता है। प्रो. जैन ने इस तिथि को वाग्देवी सरस्वती के भूलोक पर अवतरण की तिथि के रूप में व्यक्त किया और कहा कि वाक् के माध्यम से सम्पूर्ण जगत का व्यवहार संचालित होता है। उन्होंने जैन परम्परा में भी सरस्वती के स्वरूप को स्वीकार करते हुए दो प्रतिमाओं का विशेष उल्लेख किया, जो लाडनूं के बडा जैन मन्दिर और बीकानेर में स्थित है। डॉ. रामदेव साहू ने बसन्त पंचमी को प्रकृति के साथ जोडते हुए उसे मन और वाणी की देवी सरस्वती के नदी के रूप में प्रकट होने की घटना के साथ जोड़ा। उन्होंने वचन व्यापार को आवश्यक मानते हुए देवी सरस्वती को ब्रह्मा की अनुपम कृति माना। प्रो. लक्ष्मीकान्त व्यास ने सरस्वती द्वारा धारित प्रतीकों, पुस्तक को ज्ञान का, वीणा को संगीत का, माला को ध्यान का एवं उनके वाहन हंस को विवेक का प्रतीक मानते हुए जीवन की विभिन्न रूपों में व्याख्या की। वरिष्ठ आचार्य प्रो. दामोदर शास्त्री ने बसन्त पंचमी को विशेष बताते हुए कहा कि जब ब्रह्मा ने इस सृष्टि का निर्माण किया तो इसमें कलरव नहीं था तब ब्रह्मा को लगा कि यह सृष्टि बिना वाक् व्यापार के नहीं चल सकती, अतः उन्होंने आज ही के दिन सरस्वती को पृथ्वीलोक पर अवतरित किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मंचस्थ अतिथियों के द्वारा सरस्वती की प्रतिमा पर तिलक एवं मालार्पण कर पूजा-अर्चना की गई। जैनदर्शन विभाग की सहायक आचार्या ईरिया जैन ने मंगलाचरण किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। संयोजन डॉ. सब्यसाची सांरगी ने किया। इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

'वर्तमान अशांतिमय परिवेश में कैसे हो शांति की स्थापना' पर हुआ मंथन

एक दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर में दिया अहिंसा का व्यावहारिक प्रशिक्षण

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा युवाओं में अहिंसा के सिद्धांतों के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने तथा करुणा, समन्वय, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजकीय महिला महाविद्यालय सुजानगढ़ में 13 मई को एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के विभिन्न सत्रों में व्याख्यान, समूह चर्चा और व्यवहारिक अभ्यासों के माध्यम से अहिंसा के संदर्भ में जैन दर्शन, गांधीवादी विचारधारा एवं आंतरिक शुद्धता के सूत्रों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया। अहिंसा के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु प्रेक्षाध्यान को महत्वपूर्ण आयाम माना गया।

अहिंसा का प्रशिक्षण दिया जाना दुर्लभ है

शिविर में विभाग की आचार्या डॉ. लिपि जैन ने कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान एक ऐसा अनूठा मान्य विश्वविद्यालय है, जहां जैन दर्शन के मानवीय मूल्यों के साथ-साथ अहिंसा एवं शांति की शिक्षा प्रदान की जाती है और इसके लिए व्यावहारिक पद्धति के रूप में युवाओं के लिए अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। उन्होंने बताया कि आज संसार में हिंसा का प्रशिक्षण अनेक रूपों में दिया जा रहा है, लेकिन हमारा संस्थान ऐसा दुर्लभ स्थान है, जहां अहिंसा का प्रशिक्षण सुनियोजित रूप से दिया जाता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वर्तमान युग में जहां हिंसा का प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है, ऐसे में अहिंसा का प्रशिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, अहिंसा केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। यदि युवा पीढ़ी इस विचार को आत्मसात् कर ले, तो सामाजिक परिवर्तन संभव है। डॉ. जैन ने यह भी बताया कि जैन दर्शन का 'अनेकांतवाद' सहिष्णुता और समन्वय का प्रतीक है, जो समाज में वैचारिक विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए कहा कि अगर हम विचारों में सहिष्णुता और व्यवहार में अहिंसा को स्थान दें, तो न केवल व्यक्तिगत विकास होगा, बल्कि समाज में भी शांति स्थापित होगी।

अहिंसा जीने का एक तरीका है

विभाग के सह-आचार्य डॉ. आर.एस. राठौड़ ने कहा कि अहिंसा एक दर्शन एवं सिद्धांत ही नहीं है, बल्कि जीने का एक तरीका भी है। अहिंसा के सिद्धांतों एवं दर्शन को जीवन में अपनाकर व्यक्ति मानव सेवा एवं मानव कल्याण करने का माध्यम बन सकता है। डॉ. राठौड़ ने बताया कि अहिंसा केवल बाह्य आचरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विचारों और भावनाओं में भी परिलक्षित होनी चाहिए। उन्होंने कहा, अगर हमारे विचारों में हिंसा है, तो हमारा आचरण भी हिंसक हो सकता है। इसलिए, अहिंसा का वास्तविक अर्थ है, सोच, भावना और क्रिया, तीनों स्तरों पर शुद्धता। उन्होंने शिविर में प्रेक्षाध्यान को एक आवश्यक साधन बताया, जिससे व्यक्ति आत्म-निरीक्षण कर अपनी आंतरिक शुद्धि को सुदृढ़ कर सकता है।

आचरण व भावनाओं में परिवर्तन जरूरी

विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने शिविर में बताया कि उनका अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा शांति और अहिंसा की शिक्षा दिए जाने के साथ ही व्यक्ति के आचरण, व्यवहार एवं भावनाओं में परिवर्तन कर उसे अहिंसक बनाए जाने पर जोर देता है। शिविर में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मंजू बाफना ने अंत में आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे शिविर युवाओं के व्यक्तित्व विकास एवं समाज में शांति और अहिंसा के प्रसार के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के निरंतर आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। शिविर के समापन सत्र में प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए और अहिंसा के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। शिविर में 142 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। साथ ही महाविद्यालय के सभी संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे।

फ्लोराइड युक्तजल के स्वास्थ्य प्रभाव पर सामाजिक चेतना यात्रा

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं अहिंसा एवं शांति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 8 अप्रेल को "फ्लोराइडयुक्त जल का स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं समाधान" विषय पर एक सामाजिक चेतना यात्रा का आयोजन किया गया। इस जन-जागरूकता अभियान के अंतर्गत संस्थान के विद्यार्थियों ने लाडनूं तहसील के मंगलपुरा गांव का दौरा किया और ग्रामीणों को फ्लोराइडयुक्त जल के सेवन से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में जानकारी दी। अहिंसा एवं शांति विभाग के प्रतिनिधि डॉ. बलबीर सिंह चारण ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए बताया कि फ्लोराइड की अधिक मात्रा से दांतों में धब्बे पड़ना, हड्डियों का कमजोर होना और फ्लोरोसिस जैसी बीमारियां हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की समस्याओं से बचाव के लिए जागरूकता और स्वच्छ जल की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि डॉ. विष्णुकुमार ने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारियों को भी समझना चाहिए। उन्होंने इस पहल को व्यवहारिक शिक्षा का एक अच्छा उदाहरण बताया। शिक्षा विभाग की प्रतिनिधि डॉ. आभासिंह ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य विषयक जानकारी का अभाव होता है, इसलिए ऐसे प्रयास बेहद जरूरी हैं। उन्होंने यात्रा में विद्यार्थियों की सहभागिता को सराहा।

यात्रा में शामिल स्वयंसेविकाएं गांव के घर-घर जाकर पहुंचीं और ग्रामीणों को जागरूकता बुकलेट वितरित की। इनबुकलेट्स में फ्लोराइड के प्रभाव, लक्षण, बचाव के उपाय एवं उपयोगी जलस्रोतों से जुड़ी जानकारी शामिल थी। स्वयंसेविका खुशी जोधा ने ग्रामीणों को जानकारी देने और संवाद स्थापित करने में योगदान दिया। स्वयंसेविका लहरो, आशा मेघवाल, इशिता राजपुरोहित, रिया सोनी, खुशबू, कल्पना, गुनगुन, हेमलता, हर्षिता स्वामी, ज्योत्सना आदि का सक्रिय योगदान रहा। यह यात्रा एक साझा प्रयास रही, जिसमें विद्यार्थियों, विभागीय प्रतिनिधियों और स्वयंसेविकाओं ने मिलकर जन-जागरूकता को बढ़ाने का कार्य किया। भविष्य में ऐसे और भी अभियान चलाकर अन्य गांवों तक पहुंचने की योजना है।

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ

शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक घटकों की महत्ता से संभव है शिक्षा को सशक्त करना

संस्थान के शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा संचालित स्थानीय मासिक व्याख्यानमाला के अंतर्गत 3 मार्च को मुख्य वक्ता प्रो. बी.एल. जैन ने 'शिक्षा को सशक्त बनाने के शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक घटकों की महत्ता' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए बताया कि शिक्षा को सशक्त मनुष्य में अंतर्निहित शक्तियों के प्रस्फुटन एवं उनका विकास द्वारा किया जा सकता है। शिक्षा को केवल विद्यालय या पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं करके उसे अपने परिवेश, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश से भी जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम शिक्षा की आत्मा है। वह जितना सशक्त होगा शिक्षा उतनी मजबूत होगी। अतः पाठ्यक्रम में बाह्य जगत की अपेक्षा आंतरिक जगत की शिक्षा को अधिक महत्त्व देना चाहिए। पाठ्यक्रम समाज, स्थानीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए पाठ्यक्रम को वैश्विक स्तर के अनुसार तैयार किये जाने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश, रोजगारपरक, व्यवसायोन्मुख, एंट्रप्रीन्यूरशिप, कौशलविका कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित विषय को जोडकर शिक्षा को मजबूत बनाया जा सकता है। पाठ्यक्रम को छात्रों तक पहुंचाने हेतु निर्माणवाद, मानसिक चित्रण, फिलप्ड क्लास रूम, समस्या-समाधान विधि, रचनात्मक विधि, डिस्कवरी लर्निंग/खोज आधारित नवीन विधियों का प्रयोग करना चाहिए। कक्षा-कक्ष को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षक को कक्षा-कक्ष में उद्दीपन परिवर्तन कौशल, व्यक्तिगत विभिन्नता, व्यक्तित्व का विकास, नवाचार, आनन्ददायी शिक्षा आदि मनोवैज्ञानिक घटकों का प्रयोग करना चाहिए। जिससे शिक्षा को अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। कार्यक्रम में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के निवर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक जैन, प्रो. सुषमा सिंघवी, कार्यक्रम समन्वयक प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. पी.एस. शेखावत, डॉ. रविन्द्र सिंह, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. ममता पारीक, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अभिषेक चारण ने किया।

शोध एवं विकास का प्रमुख आधार बने भारतीय ज्ञान परंपरा

संकाय संवर्धन कार्यक्रम में 'भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक पाठ्यचर्या' पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित संकाय संवर्धन कार्यक्रम में 18 जनवरी को डॉ. गिरिराज भोजक ने अपने व्याख्यान में बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) को शामिल करने की सिफारिश करती है। प्राचीन और शाश्वत विचार की विरासत इस नीति के लिए मार्गदर्शक रही है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार और दर्शन में सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता रहा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, जैसे कई अन्य महान विद्वानों ने गणित, खगोल-विज्ञान, धातुविज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान और सर्जरी, जैसे विविध क्षेत्रों में विश्व ज्ञान में मौलिक योगदान दिया। विश्व-विरासत की इन समृद्ध विरासतों को भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाने के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शोध, संवर्द्धन और नए उपयोग में लाया जाना चाहिए। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख प्रावधानों के अनुसार आधुनिक पाठ्यचर्या में होने वाले परिवर्तनों के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा से सम्बंधित सिफारिशों पर प्रकाश डाला और बताया कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर कुल क्रेडिट का कम से कम 5 प्रतिशत आईकेएस को आवंटित करना चाहिये एवं उसका 50 प्रतिशत प्रमुख विषयों से संबंधित होना चाहिए। आईकेएस पाठ्यक्रम प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित होना चाहिए, जिनमें स्रोत ग्रंथ, ऐतिहासिक दस्तावेज अन्य साक्ष्य, समाज शास्त्रीय रिकॉर्ड प्रमुख हों।

स्नातक कार्यक्रम के पहले चार सेमेस्टर के दौरान इन 50 प्रतिशत अनिवार्य क्रेडिट में से कम से कम आधा विशेषज्ञता के प्रमुख क्षेत्र से तथा शेष अनिवार्य क्रेडिट को अनिवार्य बहु-विषयक पाठ्यक्रमों के एक भाग के रूप में शामिल किया जा सकता है। आईकेएस में पाठ्यक्रमों और क्रेडिटों की संख्या को मुख्य अनुशासनात्मक पाठ्यक्रमों एवं बहुविषयक पाठ्यक्रमों में विभाजित किया जा सकता है छात्रों को स्नातक कार्यक्रम के सातवें या आठवें सेमेस्टर में अपने प्रोजेक्ट कार्य के लिए आईकेएस से संबंधित एक उपयुक्त विषय चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

आईकेएस को विद्यार्थी किसी भी विषय में इंटर्नशिप/प्रशिक्षुता का विकल्प चुन सकते हैं। आईकेएस का हिस्सा होने वाले विषयों में ऐसे स्नातकोत्तर कार्यक्रमों को मंजूरी मिलने और पढ़ाए जाने के बाद, इन विषयों में नेट परीक्षा आयोजित करने के लिए वही पाठ्यक्रम अपनाया जा सकता है जो आईकेएस का हिस्सा हैं। छात्रों को आईकेएस के अनुभवात्मक पहलुओं में कुछ आधार देने के लिए योग, ध्यान, आयुर्वेद, शास्त्रीय संगीत, भारतीय शिल्प परंपराओं आदि पर कुछ प्रायोगिक सत्रों की व्यवस्था की जानी चाहिए। पाठ्यक्रम के विकास को आईकेएस में शिक्षक प्रशिक्षणके साथ निकटता से एकीकृत किया जाना चाहिए। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णुकुमार, डॉ. आभासिंह, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. ममता पारीक, देवीलाल कुमावत, स्नेहा शर्मा एवं खुशाल जांगिड़ उपस्थित रहे।

शोध से शिक्षा उन्नत सृजनात्मक आविष्कार बन जाती है- प्रो. जैन

'शोध प्रविधि' पर सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'शोध प्रविधि' विषय पर सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 28 अप्रेल से किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने कहा कि शिक्षा को शोध से ही उन्नत, गुणवत्ता, सृजनात्मक, नवाचारित, आविष्कार के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शोध पर विशेष बल दिया है। आज शिक्षा में शोध की अत्यंत आवश्यकता है। शोध कार्य में प्रयुक्त होने वाली सांख्यिकी का सही ज्ञान नहीं होने पर आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण सही प्रकार से विवेचित नहीं कर पाते। प्रो. जैन ने एनोवा (INOVA) के बारे में बताते हुए कहा कि एनोवा का मतलब 'विचरण का विश्लेषण' या प्रसरण का विश्लेषण है। जब एक साथ दो या दो से अधिक समूहों का ग्रुप होता है तो उसके मध्यमान का अंतर इस विधि से निकाला जा सकता है। यह टी-टेस्ट और जेड-टेस्ट की तरह ही है, लेकिन यह तब अधिक उपयोगी होता है, जब तीन या अधिक समूहों की तुलना करनी हो। इस प्रकार एनोवा समझाने के लिए मध्यमान, विचलन, टी-परीक्षण समझना आवश्यक है। कार्यशाला के द्वितीय दिन डॉ. विष्णु कुमार ने चरों के बारे में बताया और कहा चर प्राणी, वस्तु और व्यक्ति में गुणों को मापने का कार्य करते है। शोध कार्य में चर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, डॉ. ममता पारीक, सुश्री स्नेहा शर्मा तथा पी-एच.डी. के शोधार्थी उपस्थित रहे।

शोधकार्य में न्यादर्श विधि पर व्याख्यान

'शोध प्रविधि' विषय पर इस छह दिवसीय कार्यशाला के तृतीय दिवस शिक्षा विभाग की सहायक आचार्या डॉ. अमिता जैन ने न्यादर्श विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि न्यादर्श किसी भी शोध अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो शोधकर्ताओं को समय, धन और संसाधनों की बचत करने, विस्तृत और गहराई से जानकारी प्राप्त करने और अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त करने में मदद करता है। न्यादर्श किसी जनसंख्या जैसे बड़े समूह के एक छोटे से हिस्से को कहते हैं, जिसका चयन इस तरह से किया जाता है कि वह पूरे समूह का प्रतिनिधित्व कर सके। न्यादर्श विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे यादृच्छिक न्यादर्श, स्तरीकृत न्यादर्श, वर्गबद्ध न्यादर्श, स्नोबाल न्यादर्श, उद्देश्यपूर्ण, सुविधानुसार, स्वेच्छानुसार और क्लस्टर न्यादर्श, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट चयन प्रक्रिया होती है। न्यादर्श का उद्देश्य पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करना है, ताकि शोधकर्ता पूरे समूह के बारे में निष्कर्ष निकाल सके। पूरे समूह का अध्ययन करने की तुलना में न्यादर्श का अध्ययन करना अधिक समय और धन बचाता है। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने कहा कि न्यादर्श चयन की अनेक विधियां हैं, उनमें से घनीभूत एवं संतश्प्त विधि भी कारगर है, जिसके द्वारा अनुसन्धान में सहायता मिलती है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारीलाल, डॉ. देवीलाल कुमावत, खुशाल जांगिड, डॉ. ममता पारीक, सुश्री स्नेहा शर्मा तथा पी-एच.डी. के शोधार्थी उपस्थित रहे।

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'रिसर्च मेथडोलौजी' विषयक सात दिवसीय कार्यशाला में 2 मई को मुख्य वक्ता के रूप में शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने 'सन्दर्भ एवं सन्दर्भ ग्रंथसूची' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. शर्मा ने कहा कि सन्दर्भ ग्रंथसूची पुस्तकों, लेखों, दस्तावेजों और अन्य स्रोतों की एक व्यवस्थित सूची है, जिनका शोध करने की प्रक्रिया के दौरान परामर्श या संदर्भ लिया जाता है। इसे आमतौर पर एक शोध पत्र, थीसिस, शोध प्रबंध या पुस्तक के अंत में प्रस्तुत किया जाता है। ग्रंथसूची लेखक का नाम, कार्य का शीर्षक, प्रकाशक, प्रकाशन का वर्ष और अधिक जैसे पूर्ण प्रकाशन विवरण प्रदान करती है। ग्रंथसूची शोध कार्य में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह अध्ययन के दौरान परामर्श किए गए सभी स्रोतों की एक व्यापक सूची प्रदान करती है। यह अन्य लेखकों के योगदान को स्वीकार करता है, जिससे अकादमिक अखंडता को बनाए रखने और साहित्यिक चोरी से बचने में मदद मिलती है। ग्रंथसूची को शामिल करना शोध प्रयास की गहराई और गंभीरता को प्रदर्शित करता है, जिससे पाठकों को जानकारी सत्यापित करने, आगे की रीडिंग का पता लगाने और अध्ययन की विश्वसनीयता का आकलन करने की अनुमति मिलती है। इसके अलावा, यह भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए एक उपयोगी संसाधन के रूप में कार्य करता है, जो उसी क्षेत्र में रुचि रखते हैं। इस तरह एक अच्छी तरह से तैयार ग्रंथसूची शोध कार्य की प्रामाणिकता, पारदर्शिता और अकादमिक मूल्य को बढ़ाती है। शोध कार्य में प्रयुक्त किये गये विभिन्न स्रोत जैसे पुस्तकें, मासिक, साप्ताहिक, वार्षिक शोध पत्र-पत्रिकाएं, समाचार पत्र, ऑनलाइन सामग्री आदि का सन्दर्भ किस प्रकार लिखा जाता है। इसको उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया।

विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि सन्दर्भ ग्रंथ सूची किसी भी शोध का अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाग है। अक्सर शोधार्थी सन्दर्भ लिखने में गलतियाँ करते हैं, जिससे शोध कार्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, अतः सन्दर्भ लिखते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी से बचना चाहिए। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. ममता पारीक, डॉ. देवीलाल कुमावत, स्नेहा शर्मा तथा खुशाल जांगिड एवं विभिन्न पी.एच. डी. शोधार्थी उपस्थित रहे।

पूर्व शोध-कार्यों का विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक अध्ययन शोध की रूपरेखा निर्मित करने में उपयोगी

अनुसंधान क्रियाविधि पर कार्यशाला आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोजित कार्यशाला के चतुर्थ दिवस 1 मई को डॉ. गिरिराज भोजक ने 'संबंधित साहित्य की समीक्षा' विषयक व्याख्यान में शिक्षा के क्षेत्र में अनुसन्धान हेतु संबंधित साहित्य की समीक्षा से जुड़े विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सम्बंधित साहित्य के प्रमुख उद्देश्य बताते हुए कहा कि संबंधित साहित्य शोधार्थी को पूर्व शोध-कार्यों के विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा अपने शोध की रूपरेखा निर्मित करनी चाहिए।

डॉ. भोजक ने सम्बंधित साहित्य की समीक्षा के क्रमिक चरणों, तकनीकी शब्दावली, साहित्य को शोध कार्य में उल्लेखित करने की विधि के बारे में बताया। सम्बंधित साहित्य की खोज हेतु शोध गंगा, शोध गंगोत्री, शैक्षिक जर्नल, सरकारी रिपोर्ट्स, पायलट प्रोजेक्ट आदि के अध्ययन से एक शोधार्थी में अपने न्यादर्श, परिसीमन, सांख्यिकी आदि के चयन हेतु अंत-दृष्टि का विकास होता है। विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए वर्तमान युग को तकनीकी विकास एवं शोधपरक चिंतन का युग बताया, जिसने मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुपालना में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नवाचार हो रहे हैं, जिनमें शैक्षिक तकनीकी के संसाधनों का विकास, पाठ्यचर्या में कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा पर बल, तकनीकी प्रधान शिक्षा आदि प्रमुख है, जिनका प्रमुख आधार शिक्षा में होने वाले अनुसन्धान कार्य हैं। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. ममता पारीक, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में कार्यशाला संयोजक डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया।

भारत की शिक्षा प्रणाली वैश्विक स्तर की बनेगी

एक दिवसीय शिक्षा नीति जागरूकता कार्यक्रम में चलचित्र का प्रदर्शन

संस्थान के शिक्षा विभाग में संचालित किए जा रहे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रसार अभियान के तहत 7 अप्रेल को आयोजित एक दिवसीय शिक्षा नीति जागरूकता कार्यक्रम के अवसर पर एक लघुचित्र का प्रदर्शन छात्राध्यापिकाओं के समक्ष किया गया। इस चलचित्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में समाहित प्रमुख योजनाओं जैसे अध्ययन-अंक संग्रहण योजना, चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम और राष्ट्रीय मूल्यांकन ढांचा की जानकारी दी गई। लघुचित्र व कार्यक्रम में उच्चशिक्षा में लचीलापन, कौशल आधारित पाठ्यक्रम, नैतिक शिक्षा तथा तकनीकी समावेश को प्रभावशाली रूप में दिखाया गया।

भारत की शिक्षा प्रणाली बनेगी वैश्विक स्तर की

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह नीति भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने का कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि आज के समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है। इसके माध्यम से शिक्षण, मूल्यांकन और शिक्षण सामग्री निर्माण को अधिक प्रभावशाली एवं व्यक्तिगत बनाया जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे नवीन तकनीकों का सही दिशा में उपयोग करें और भविष्य की चुनौतियों के लिए स्वयं को तैयार करें। एनईपी सारथी खुशी जोधा ने कहा कि यह नीति विद्यार्थियों को विषयों के चयन की स्वतंत्रता देती है और उनके बहुमुखी विकास की दिशा में कार्य करती है। उन्होंने इसे एक आधुनिक, व्यावहारिक और विद्यार्थी हितैषी पहल बताया। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं से विद्यार्थियों को पढ़ाई में लचीलापन और व्यावसायिक अवसर प्राप्त होंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताओं और उद्देश्यों से अवगत कराना था। कार्यक्रम में सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं

आशुभाषण प्रतियोगिता में तत्काल दिए टॉपिक पर छात्राओं ने प्रस्तुत किए विचार

संस्थान में सत्र 2024-25 की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 10 जनवरी को आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता में 24 विद्यार्थियों ने भाग लिया और तत्काल दिए गए विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रारम्भ में सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने प्रतियोगिता के नियमों और विशेषताओं के बारे में जानकारी दी तथा अतिथियों का परिचय करवाया। साथ ही उन्होंने अपने अर्जित समसामयिक ज्ञान और कल्पनाओं के माध्यम से अपने विचारों के प्रस्तुतीकरण के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ द्वारा सम्मान डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, देवीलाल कुमावत एवं खुशाल जांगिड ने किया। प्रतियोगिता के निर्णायकों में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन एवं प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास थे।

विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में आयोजित प्रतियोगिता में निर्णायक प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने इसे एक कठिन प्रतियोगिता बताया और कहा कि इससे विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता बढती है और उन्हें सोच-समझ कर निर्धारित समयावधि में विचारों को बेहतर भाषा में प्रस्तुतिकरण का कौशल मिलता है। प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास ने प्रतियोगिता को विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन के लिए उपयोगी बताते हुए कहा कि कहीं भी इन्टरव्यू के लिए जाने पर वहां पढे हुए ज्ञान के अलावा बाहर से भी पूछा जाता है।

इस प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों को बाहर के विषयों पर अपनी बात पूर्ण आत्मविश्वास के साथ रखने का अवसर व कुशलता मिलती है। कार्यक्रम के दौरान डॉ. विनोद कस्वां, डॉ. ममता पारीक आदि सभी संकाय सदस्य एवं सभी विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे। अंत में डॉ. लिपि जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सूंचालन छात्राध्यापिका ज्योति बुरड़क ने किया।

नाटक में उकेरी महिलाओं की समस्याएं एवं महिला सशक्तीकरण का दिया सन्देश

सांस्कृतिक प्रतियोगिता में नाटक प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान में चल रही सत्र 2024-25 की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 25 फरवरी को नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नाटक प्रतियोगिता में 40 छात्राओं की प्रतिभागिता रही। इन्होंने 6 समूहों में मिलकर हिस्सा लिया। छात्राओं ने अपने नाट्य-प्रस्तुतीकरण में महिलाओं से सम्बंधित समस्याओं को उकेरते हुए उनसे निपटने के समाधान और महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता बताई। नाटक में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर भी प्रदर्शन किया गया। संस्कार, संस्कृति आदि पर आधारित इन नाटकों में विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं को भी प्रस्तुत किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक खुशाल जांगिड एवं स्नेहलता शर्मा थे। इस अवसर पर निर्णायक स्नेहलता शर्मा ने छात्राओं को अपना टैलेंट दिखाने और अपने-आपको सुरक्षित रखने के बारे में बताया। प्रारम्भ में सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने निर्णायकों का स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णुकुमार, देवीलाल कुमावत, डॉ. लिपि जैन, डॉ. ममता पारीक, देशना चारण, राधिका, डॉ. आभासिंह आदि संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। अंत में डॉ. विनोद कस्बां ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम कर संचालन संजीता एवं कुमकुम ने किया।

वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में सत्र 2024-25 की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 11 जनवरी को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 'सरकारी नौकरी युवाओं के विकास में साधक है' विषय पर हुई इस प्रतियोगिता में 10 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायक डॉ. रामदेव साहू एवं डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज थे। डॉ. गिरिराज भोजक एवं डॉ. विष्णु कुमार ने उनका पुष्पगुच्छ द्वारा सम्मान किया। सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने अतिथियों का परिचय करवाया। निर्णायक डॉ. रामदेव साहू ने अपने सुझाव प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रतियोगिता से विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होती है। इसमें टॉपिक की गहराई को पहचान कर अपनी बात रखनी चाहिए। डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने कहा कि प्रतियोगिता हमें जीवन में बहुत काम आने वाली होती है। कार्यक्रम में डॉ. ममता पारीक, डॉ. मनीषा जैन, खुशाल जांगिड, ईर्या शास्त्री, देवी लाल कुमावत आदि सभी संकाय सदस्य एवं अन्य विभागों के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे। डॉ. विनोद कस्वां ने कृतज्ञता ज्ञापित की संचालन कांता सोनी ने किया।

राजस्थानी एवं शास्त्रीय गानों पर थिरके पांव

संस्थान में चल रही सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत अंतिम दिवस 8 मार्च को एकल लोकनृत्य एवं सामूहिक लोक नृत्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें छात्राओं ने उत्सुकतापूर्वक हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। एकल लोकनृत्य प्रतियोगिता में 33 प्रतिभागियों ने भाग लेकर लोक संस्कृति को

प्रस्तुत किया। सामूहिक लोकनृत्य में 10 समूहों के साथ लगभग 50 प्रतिभागियों ने अपने-अपने समूह में रंग-बिरंगी वेशभूषा के साथ राजस्थानी एवं शास्त्रीय गानों पर पांव थिरकाते हुए लोक संस्कृति को उजागर किया। निर्णायक के रूप में श्रीमती कनक दूगड़, श्रीमती मधु शेखावत एवं श्रीमती क्रांति सिंह रहे।

परिणामों की घोषणा – सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने प्रतियोगिताओं में विजेताओं की घोषणा करते हुए कहा कि अनुपयोगी सामग्री का उपयोग प्रतियोगिता में हर्षिता सोनी और चंचल सोनी प्रथम, कोमल प्रजापत एवं प्रगति शर्मा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मेहंदी प्रतियोगिता में प्रथम कोमल जांगिड़, द्वितीय सिमरन बानो और तृतीय हर्षिता सोनी रही। रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम सारा समूह, द्वितीय भावना स्वामी समूह और तृतीय हिमांशी समूह रहे। आशु भाषण प्रतियोगिता में प्रथम तमन्ना तंवर, द्वितीय पूनम सोनी और तृतीय नरेन्द्र सिंह राठौर रहे। वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम मीनाक्षी बाफना, द्वितीय श्वेता और तृतीय अभिलाषा स्वामी रही। पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम प्रकृति चौधरी, द्वितीय चंचल सोनी रही। एकल गायन प्रतियोगिता में प्रथम मीनल पारीक, द्वितीय कैलाश कँवर और तृतीय सलोनी बारासा रही। सामूहिक गायन प्रतियोगिता में विजेता ऐश्वर्या सोनी समूह रहा। कविता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मीनल पारीक, द्वितीय स्थान पर प्रकृति चौधरी और तृतीय स्थान पर कोमल जांगिड़ रही। नाटक प्रतियोगिता में विजेता तमन्ना तंवर समूह रहा। इस अवसर पर श्रीमती सायर सुराणा, प्रो.रेखा तिवारी, डॉ. लिपि जैन, डॉ. विनोद कस्वा, डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. मनीषा जैन, देशना चारण, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. आभा सिंह, स्नेहा शर्मा आदि संस्थान के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। संचालन हर्षिता स्वामी एवं सूर्यांशा ने किया।

कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में सत्र 2024-25 की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन 15 फरवरी को किया गया। प्रतियोगिता में कुल 25 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायक अभिषेक चारण एवं ईर्या जैन रहे। विद्यार्थियों का प्रो. रेखा तिवारी एवं डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने पुष्पगुच्छ द्वारा सम्मान किया। सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने अतिथियों का परिचय करवाया।

निर्णायक अभिषेक चारण ने अपने सुझाव प्रस्तुत करते हुए कुछ कविताएं भी प्रस्तुत कीं। ईर्या जैन ने भी विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करते हुए सुझाव प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में डॉ. लिपि जैन, डॉ. ममता पारीक आदि सभी संकाय सदस्य एवं संस्थान के विद्यार्थी उपस्थित रहे। डॉ. विनोद कस्वां ने कृतज्ञता ज्ञापित की। संचालन छात्राध्यापिका निकिता स्वामी ने किया।

गायन प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में सत्र 2024-25 की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत गायन (एकल एवं सामूहिक) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। एकल गायन प्रतियोगिता में 15 प्रतिभागियों ने और सामुहिक गायन में 6 समूहों के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायक डॉ. सत्यनारायण शर्मा एवं डॉ. गिरधारी लाल शर्मा थे। निर्णायकों का सम्मान डॉ. ममता पारीक एवं देवीलाल कुमावत ने पुष्पगुच्छ द्वारा प्रदन कर किया। निर्णायक डॉ. सत्यनारायण शर्मा एवं डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने प्रतियोगिता को लेकर अपने सुझाव भी प्रस्तुत किए और एक गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं सभी विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनोद कस्वां एवं आभार ज्ञापन डॉ. लिपि जैन ने किया।

पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में सत्र 2024-25 की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 18 जनवरी को पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें छात्राओं ने अलग-अलग नवाचारी थीमों को ध्यान में रखकर पोस्टरों का निर्माण किया। प्रतियोगिता में संस्थान की प्रकृति, आयुश्री, मीनल पारीक, अपर्णा, स्नेहा सोनी, चंचल सोनी, हर्षिता सोनी आदि छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायक डॉ. ममता पारीक एवं डॉ. मनीषा जैन थीं। सांस्कृतिक सचिव डॉ.अमिता जैन ने बताया कि इन प्रतियोगिताओं से छात्रों को रोजगार और कौशल में दक्षताएं प्राप्त होती हैं एवं ये व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में लाभकारी और उपयोगी होती हैं। कार्यक्रम में डॉ. लिपि जैन, डॉ. विनोद कस्वां, डॉ.रविन्द्र सिंह, ईर्या जैन आदि उपस्थित रहे।

विचारों से सहमत नहीं होने पर भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जरूरी

हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में मीनाक्षी बाफना प्रथम व प्रकृति चौधरी द्वितीय रही

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के अंतर्गत संचालित विवेकानंद क्लब के तत्त्वावधान में एक अंतर्संकाय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 3 अप्रेल को किया गया। प्रतियोगिता के विषय 'सदन की राय में परीक्षा में प्राप्त अंक ही सफलता का मापदंड है' पर छात्राओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

प्रतियोगिता प्राचार्य प्रोफेसर आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में रखी गई और मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी थी।

प्रतियोगिता में कुल 31 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें से मीनाक्षी बाफना प्रथम रही, प्रकृति चौधरी द्वितीय एवं कान्ता सोनी तृतीय स्थान पर रही। इन तीनों को पुरस्कृत किए जाने के अलावा इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सभी छात्राओं को भी स्वामी विवेकानंद क्लब की ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गये। प्रतियोगिता की निर्णायक विवेकानंद क्लब की पूर्व छात्राओं जीनत, खुशी जोधा एवं मेहनाज बानो रहीं।

अपना मस्तिष्क सतत जागरूक रखें

इस अवसर पर अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि समय-समय पर आयोजित होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिताएं संभागियों के साथ ही साथ सुधी श्रोताओं में भी वैचारिक संपन्नता को बढ़ाती हैं। हम भले ही किसी के विचारों से सहमत ना हो सकें, लेकिन सभी के लिए विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं दूसरे के विचारों के प्रति आदरभाव को हमें सदैव सर्वोपरि रखना चाहिए। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विचारों की उधेड़बुन के बीच विद्यार्थी को अपना मस्तिष्क सदैव सजग रखना चाहिए। प्रतियोगिता का संचालन समन्वयक एवं विवेकानंद क्लब प्रभारी अभिषेक चारण ने किया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर 21 फरवरी को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य व दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि इस साल यूनेस्को ने इस अंतर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस के गौरवपूर्ण 25 वर्षों से संचालित होने पर इसकी थीम 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का सिल्वर जुबली समारोह' रखी है। उन्होंने कहा कि इस दिन को मनाने का मकसद मातृभाषाओं का संरक्षण एवं उनको बढ़ावा देना रहा है, क्योंकि भाषाएँ पहचान, परंपरा और इतिहास की संवाहक होती हैं।

किसी भाषा के विलुप्त होने से सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ, पारंपरिक ज्ञान और लोक-व्यवहार समाप्त हो जाते हैं। अतः यह दिन संकटग्रस्त भाषाओं के दस्तावेजीकरण, पुनर्जीवन और सुरक्षा की आवश्यकता पर विशेषरुप से जागरूकता को बढ़ाता है।

प्रो. त्रिपाठी ने नई शिक्षा नीति में समाहित मातृभाषा के महत्व को व्याख्यायित करते हुए बताया कि मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षा से सीखने के परिणाम बेहतर होंगे, जिससे स्थानीय भाषाओं को संरक्षित किया जा सकेगा और समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा। कार्यक्रम में कविता, तमन्ना, सोनू व किरण आदि छात्राओं ने भी अपनी विभिन्न रोचक प्रस्तुतियां दी।

कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम समन्वयक अभिषेक चारण ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया। कार्यक्रम में अंग्रेजी विभाग की विभाग अध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी, मधुकर दाधीच, डॉ. विनोद कस्वा, प्रेयस सोनी, स्नेहलता शर्मा आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

साक्षरता सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है, साक्षर अवश्य बनें

आसोटा गांव में कार्यात्मक साक्षरता एवं वयस्क बुनियादी शिक्षा पर विशेष कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं अहिंसा एवं शांति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 15 अप्रेल को आसोटा गांव में कार्यात्मक साक्षरता एवं वयस्क बुनियादी शिक्षा (एबीई) विषयक एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय, विशेषतः अशिक्षित वयस्कों को बुनियादी पढ़ना-लिखना सिखाना, रोजमर्रा के जीवन में आवश्यक गणना, स्वच्छता, बैंकिंग एवं स्वास्थ्य जैसी जानकारी से जोड़ना रहा। अहिंसा एवं शांति विभाग के डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने साक्षरता को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बताते हुए कहा कि जब वयस्क लोग पढ़ना-लिखना सीखते हैं, तो पूरा परिवार और समाज सशक्त होता है। उन्होंने ग्रामीणों की कार्यात्मक साक्षरता के उनके दैनिक जीवन में उपयोगी होने के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मोबाइल फोन चलाने, दवाइयों की पर्ची पढ़ने, बैंकिंग कार्य करने या सार्वजनिक योजनाओं की जानकारी लेने के लिए उनका लाभ समझाया। शिक्षा विभाग की डॉ. ममता पारीक ने साक्षरता को केवल अक्षर ज्ञान तक सीमित नहीं मानकर आत्मनिर्भरता, आत्म-सम्मान और जागरूक नागरिक बनने की ओर पहला कदम बताया।

घर-घर बांटें पैम्फलेट, ग्रामीणों से किया संवाद

कार्यक्रम के दौरान संस्थान की स्वयंसेविकाओं ने घर-घर जाकर पैम्फलेट वितरित किए, जिनमें कार्यात्मक साक्षरता, हस्ताक्षर करना, संख्याएं पहचानना, बुनियादी शब्दावली, और दैनिक जीवन में उपयोगी छोटे-छोटे गणना कौशल जैसे विषयों को चित्रों और उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था। स्वयंसेविका खुशी जोधा ने इस अभियान के दौरान ग्रामीण महिलाओं और बुजुर्गों को साक्षरता को उनके आत्म-निर्भर जीवन की कुंजी बनने के बारे में सहज भाषा में समझाया।

कार्यक्रम में ग्रामीणों ने संवाद करते हुए साक्षरता कक्षाओं में नियमित भाग लेने की इच्छा भी जताई। संस्थान के प्रतिनिधियों ने गांव में साप्ताहिक साक्षरता सत्र प्रारंभ किए जाने और इच्छुक ग्रामीणों को बुनियादी शिक्षा उपलब्ध करवाने की जानकारी दी।

ग्रामीण महिलाओं एवं पुरुषों को दी स्वच्छता, पोषण एवं रोगों की रोकथाम की जानकारी

पदमपुरा गांव में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं अहिंसा एवं शांति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 15 अप्रेल को पदमपुरा गांव में एक विशेष स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदाय को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना, स्वच्छता और पौष्टिक जीवनशैली के प्रति संवेदनशील करना तथा जलजनित और संक्रामक रोगों से बचाव के उपायों की जानकारी देना था। कार्यक्रम की शुरुआत गांव के सामुदायिक स्थल पर एक संवाद सत्र के साथ हुई, जिसमें ग्रामीणों की भागीदारी सराहनीय रही।

स्वास्थ्य के लिए जरूरी है स्वच्छ जल, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और तनाव से मुक्ति

अहिंसा एवं शांति विभाग के प्रतिनिधि डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि स्वास्थ्य केवल बीमारी से मुक्त रहना नहीं है, बल्कि यह तन, मन और समाज की समग्र स्थिति का नाम है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर लोग छोटी बीमारियों को नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे वे बड़ी समस्याओं का रूप ले लेती हैं। उन्होंने स्वच्छ जल, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और मानसिक तनाव से बचाव पर बल दिया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की प्रतिनिधि डॉ. ममता पारीक ने कहा कि महिलाओं और बच्चों का स्वास्थ्य समाज की नींव है। उन्होंने बाल्यावस्था में कुपोषण, किशोरियों में हीमोग्लोबिन की कमी, और महिलाओं के लिए माहवारी स्वच्छता जैसे विषयों को सरल भाषा में समझाया। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं से संवाद करते हुए घरेलू उपायों और सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी भी साझा की।

घर-घर दस्तक देकर किया स्वास्थ्य के प्रति जागरूक

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के विद्यार्थियों एवं स्वयं सेविकाओं ने गांव के विभिन्न मोहल्लों में जाकर घर-घर दस्तक दी, और पंपलेट वितरित किए जिनमें स्वच्छता, पोषण, जलजनित बीमारियों से बचाव, टीकाकरण, मानसिक स्वास्थ्य और प्राथमिक उपचार की जानकारी दी गई थी। इन पंफलेट्स को सरल भाषा और चित्रों के माध्यम से इस प्रकार तैयार किया गया था कि हर वर्ग के व्यक्ति आसानी से समझ सके। स्वयंसेविका खुशी जोधा ने कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाई। विद्यार्थियों ने महिलाओं और बुजुर्गों से संवाद स्थापित कर उन्हें स्वच्छ जल के उपयोग, हाथ धोने की आदत और नियमित स्वास्थ्य जांच की आवश्यकता के बारे में बताया। कार्यक्रम के अंत में एक खुले संवाद सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीणों ने अपनी शंकाएं साझा कीं और विशेषज्ञों ने समाधान प्रस्तुत किए। ग्रामीणों ने इस पहल की सराहना करते हुए आग्रह किया कि ऐसे कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएं।

विज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास में वेद एवं उपनिषदों का महत्त्वपूर्ण स्थान- डॉ. भटनागर

'भारतीय ज्ञान-परम्परा में ज्ञान और विज्ञान' विषयक व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में चल रही 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषयक व्याख्यानमाला में विभाग के आचार्य डॉ. मनीष भटनागर ने 'भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान और विज्ञान' पर 29 जनवरी को व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान एवं विज्ञान का एक समृद्ध और विविधता पूर्ण स्वरूप रहा है। ज्ञान को भारतीय ज्ञान परंपरा में आत्मज्ञान एवं बाह्य ज्ञान को दर्शाते हुए उसे दार्शनिक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें आंतरिक स्तर का आत्मज्ञान आत्म-साक्षात्कार से संबंधित है, जबकि बाह्य ज्ञान विज्ञान और तकनीकी से संबंधित है। उन्होंने बताया कि विज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास में वेद एवं उपनिषदों का महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता है। विज्ञान और ज्ञान को परस्पर पूरक माना जाता है और इनमें समन्वय स्थापित करना होता है। वैदिक काल में ज्ञान एवं विज्ञान का इतिहास उच्च स्तर पर रहा और वेद के बाद उपनिषद पुराण आदि की बात आती है, जो आत्मज्ञान एवं ब्रह्म ज्ञान पर केंद्रित हैं। ज्ञान के माध्यम से सामाजिक विकास को बढ़ावा देने की बात की जाती है, यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी विकसित करती है। प्राचीन ज्ञान विज्ञान के आधार पर हम आधुनिकता को जोड़कर विकसित जीवन जीने के लिए प्रेरित होते हैं और अपनी परंपरा की अमूल्य धरोहर को अपनाने के लिए सभी को प्रेरित कर सकते हैं।

वेदों एवं प्राचीन परम्परा में पूरा विज्ञान समाहित था

डॉ. भटनागर ने बताया कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणी विज्ञान, इंजीनियरिंग, जल प्रबंधन, यांत्रिकी जैसी अवधारणाएं भी सम्मिलित की गई थी। इससे पर्यावरण संरक्षण पर भी जोर दिया गया है। प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली स्वास्थ्य एवं तंदुरुस्त व्यक्ति को विकसित करती है। यज्ञ एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में भी कई ग्रंथ हमें बताते हैं। आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, भौतिकी जैसे विषयों में भारतीयों का अतुल्य योगदान रहा है। आर्यभट्ट एवं भद्राचार्य ने गणित और खगोल विज्ञान, चरक का आयुर्वेद और कणाद जैसे महान व्यक्तित्व का वैशेषिक दर्शन प्राकृतिक विज्ञान में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सूर्य चिकित्सा, जल चिकित्सा, मानसिक चिकित्सा का विस्तृत विवरण भी भारतीय ज्ञान परंपरा में मिलता है। आचार्य सुश्रुत द्वारा रचित ग्रंथ 'सुश्रुत संहिता' में शल्य-चिकित्सा (ऑपरेशन) सम्बन्धी कई उपकरण एवं पशु चिकित्सा के उपयोगी औषधों व उपकरणों और घोड़े के रोग उपचारों की जानकारी मिलती है। महर्षि चरक द्वारा रचित 'चरक संहिता' आयुर्वेद का आधार ग्रंथ माना जाता है। पतंजलि का नाम योग शास्त्र के लिए विख्यात है। उन्होंने बताया कि भारत में हड़प्पा कालीन संस्कृति में अनेक धातुओं का प्रयोग हुआ था। दिल्ली में स्थित कुतुब मीनार में कभी जंग नहीं लगा, यह उत्कृष्ट लौह-कला का नमूना है। प्राचीन काल में भारत में रत्न-विज्ञान भी उच्च कोटि का था। उन्होंने बताया कि यहां समाज एवं संस्कृति को अनुशासन के साथ सम्मान देने की परम्परा रही थी। शिक्षा पूर्णतः मूल्य पर आधारित थी और ज्ञान का सार्वभौमिक दृष्टिकोण था। व्याख्यान में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अपने विचारों में स्टेम प्रक्रिया को समझाते हुए सभी विषयों को समाहित करके शिक्षा देने की बात कही। कार्यक्रम के दौरान डॉ. अमित जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. विष्णु कुमार, देवीलाल कुमावत, स्नेहा शर्मा, कुशाल जांगिड़, ममता पारीक आदि एवं समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

'प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षण विधियों की वर्तमान में प्रासंगिकता' पर व्याख्यान

भारतीय ज्ञान परंपरा पर कार्यशाला आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में चल रहे भारतीय ज्ञान परंपरा पर कार्यशाला में 22 जनवरी को डॉ.आभा सिंह द्वारा 'प्राचीन भारतीय परंपरा में शिक्षण विधियां एवं उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान दिया गया। डॉ. आभासिंह ने बताया कि प्राचीन भारतीय परंपरा कितनी विशद थी, उस समय में भी वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग शिक्षण में किया जाता था तथा आज वर्तमान में भी उन विधियों का प्रयोग किया जाना कितना प्रासंगिक है। प्राचीन शिक्षण विधियां मनोविज्ञान पर आधारित वैज्ञानिक शिक्षण विधियां थी, जिसकी अनुशंसा आज वर्तमान मनोविज्ञान भी करता है। जैसे वैदिक काल में शिक्षण व्याख्यान, प्रश्नोत्तर विधि, शास्त्रार्थ, तर्क-वितर्क, जिनका प्रयोग आज वर्तमान में डिस्कशन मेथड, पैनल डिस्कशन, ब्रेन स्टॉर्मिंग जैसे नाम से प्रयोग कर रहे हैं।

यह आज जो पश्चिमी सभ्यता इसे अपनी देन कहता है, इनका प्रयोग भारत में वैदिक काल से होता रहा है। कार्यशाला के अध्यक्ष प्रो.बनवारी लाल जैन ने बताया कि दर्शन एवं साहित्य की प्राचीन विधियां आज भी यदि हम अपने शिक्षण में प्रयोग करें तो न केवल साहित्य में अपितु दर्शन में भी भाषा समृद्ध होगी।

भारतीय दर्शन में महत्त्वपूर्ण है लौकिक और पारलौकिक का संतुलन- डॉ. अमिता जैन

'भारतीय ज्ञान परम्परा में लौकिक और पारलौकिक दर्शन' विषय पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में संकाय-संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत 'भारतीय ज्ञान परम्परा में लौकिक और पारलौकिक दर्शन' विषय पर 15 जनवरी को आयोजित व्याख्यान में डॉ. अमिता जैन ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा में गतिशीलता रही है। हमारी संस्कृति कर्म और मोक्ष, भोग और त्याग, ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक के अद्भुत समन्वय से युक्त है। भारतीय ज्ञान परंपरा में लौकिक और पारलौकिक दर्शन दो महत्त्वपूर्ण धाराएं है, जो जीवन और अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं को समझाने का प्रयास करती हैं। लौकिक दर्शन वह दर्शन है, जो हमारे भौतिक और सामाजिक जीवन से संबंधित है। इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य के सांसारिक जीवन को समझना और उसे बेहतर बनाना है। यह जीवन के सुख, दुःख, कर्म और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है। पारलौकिक दर्शन वह है, जो मानव अस्तित्व के भौतिक परे के क्षेत्र को समझने की कोशिश करता है। यह अध्यात्म, आत्मा, ब्रह्मा (ईश्वर) और मोक्ष (मुक्ति) की खोज से संबंधित है। पारलौकिक दशष्टिकोण में मानव जीवन के अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए परम सत्य और आत्मज्ञान की ओर बढ़ने का मार्गदर्शन दिया जाता है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि भारतीय दर्शन में लौकिक और पारलौकिक दोनों का संतुलन महत्वपूर्ण है, दोनों का समन्वय अति आवश्यक है। हमारे रीति-रिवाज, मान्यताएं, त्यौहार, पर्व, जयंती, दिवसों से हमारी संस्कृति अक्षुण्ण है, जिससे प्राचीन संस्कृति और सभ्यता बची हुई है। हमारी पुरातन ज्ञान निधि को संरक्षित रखने की आवश्यकता है। व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि प्रयागराज में महाकुम्भ हमारे अलौकिक दर्शन का ही उदाहरण है, जहां करोड़ों श्रद्धालुओं का आना-जाना दर्शाता है कि वे सभी अपनी कठोर तपस्या से आत्मशुद्धि, आत्मसंयम द्वारा अपने पाप कर्मों से मुक्ति की ओर अग्रसर हैं। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. गिरिराज भोजक, देवीलाल कुमावत, डॉ. ममता शर्मा, डॉ. आभा सिंह, स्नेहा शर्मा, खुशाल जांगिड आदि समस्त संकाय सदस्य एवं समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता सर्वकालिक

भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान में प्रासंगिकता विषय पर व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोजित विभागीय व्याख्यानमाला के अन्तर्गत ''भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान में प्रासंगिकता'' विषय पर 25 जनवरी को व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने कहा कि यह हमारी अत्यंत समृद्ध प्राचीन ज्ञान परंपरा ही थी, जिसने सम्पूर्ण विश्व का ज्ञानवर्धन किया तथा भारत ने विश्वगुरु का दर्जा हासिल किया। हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने सदियों से विज्ञान, गणित, खगोल, चिकित्सा, आयुर्वेद और दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दिया है। भारतीय मनीषियों ने अपने गहन चिंतन और अनुसंधान से न केवल अपने देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी विज्ञान और ज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल किया। भारत में योग और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति की परंपरा भी अत्यंत समृद्ध रही है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का संतुलन स्थापित करती है। भारत में धर्म और दर्शन का विज्ञान से अद्भुत समन्वय रहा है। यहाँ के धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों में विज्ञान के सिद्धांतों का गहन विवरण मिलता है, जो अद्वितीय हैं। आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने गणित और खगोल विज्ञान में जो योगदान दिया है, वह आज भी वैज्ञानिक समाज द्वारा मान्यता प्राप्त है। आर्यभट्ट ने शून्य की खोज की और ग्रहों की गति का अध्ययन किया। रामानुजम् ने गणित के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया। उनकी थ्योरियों ने आधुनिक गणित को नई दिशा दी। भारतीय ज्ञान प्रणाली समाज, राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व को एक नई दिशा प्रदान करने तथा वर्तमान में व्याप्त अनेक समस्याओं के समाधान में करने में सक्षम है। इसी कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत सरकार ने भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन को विशेष महत्त्व दिया गया है।

अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान परंपरा न केवल प्राचीन काल में बल्कि आज भी विज्ञान, चिकित्सा, गणित और अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन डॉ. आभा सिंह द्वारा किया गया।

'प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और गणित' पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग में जनवरी से चली आ रही 'भारतीय ज्ञान परंपरा पर व्याख्यानमाला' में 8 फरवरी को सहायक आचार्य देवीलाल कुमावत ने 'प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और गणित' पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि सभी प्राचीन सभ्यताओं में गणित की पहली अभिव्यक्ति गणना प्रणाली के रूप में सामने आती है। मानव अपनी आवश्यकता के लिए अपक्व गणित का प्रयोग करते थे, इनमें गणना करने के लिए उंगलियों, कंकड़ और गोलियों का प्रयोग होता था। भारतीय अंकों की रचना कोण के आधार पर की गई थी। भारत की विश्व को सबसे बड़ी देन शून्य और दाशमिक प्रणाली थी। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि शून्य का आविष्कार कब हुआ, परंतु इसका सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य पिंगलकृत छंदःसूत्र में मिलता है, इसकी रचना लगभग 200 ईसा पूर्व हुई थी। यदि शून्य और दाशमिक-स्थान, मान-पद्धति का आविष्कार न हुआ होता तो भारतीय अंक, अन्य अंकों से न तो श्रेष्ठ समझे जाते और न हीं उनका सर्वत्र आदर होता। आदिकाल में भारतीय गणित में अंकगणित, रेखागणित और बीजगणित का विकास हो चुका था। आदिकाल के महान गणितज्ञ बोधायन, आपस्तन और कात्यायन थे। बोधायन ने वर्तमान में प्रचलित समकोण त्रिभुज से सम्बन्धित पाइथागोरस प्रमेय दे दी थी। मध्यकाल को भारतीय गणित का स्वर्णिम काल माना जाता है, क्योंकि इस काल में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, श्रीधराचार्य, भास्कराचार्य और महावीरचार्य जैसे अनेक गणितज्ञ हुए, जिनके कारण वेदों में जो सिद्धांत, नियम व विधियां जो सूत्र रूप में दिए गए थे, वे इस युग में आम जनता के सामने आए थे।

देवीलाल कुमावत ने वैदिक गणित के सूत्रों के उपयोग की जानकारी भी दी। प्रो. बी. एल. जैन ने गणित को मन अथवा मस्तिष्क में तर्क करने की आदत को विकसित करने में सक्षम बताया और कहा कि स्वामी भारतीकृष्णा तीर्थ ने वैदिक गणित संबंधित 16 मुख्य सूत्र और 13 उपसूत्र बताए, जिनके आधार पर समस्त वैदिक गणित टिका हुआ है। वैदिक विधि से प्रश्नों को हल करने पर छात्रों की बौद्धिक एवं गणना करने की क्षमता कई गुना बढ़ जाती है और प्रश्नों के उत्तर सैकण्डों में प्राप्त कर सकते हैं। व्याख्यानमाला के दौरान डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णुकुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. ममता पारीक, खुशाल जांगिड, स्नेहा शर्मा आदि संकाय सदस्य एवं सभी छात्रायें उपस्थित रही।

'भारत की प्राचीन ज्ञान परंपराएं, संस्कृति और मूल्य' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'भारत की प्राचीन ज्ञान परंपराएं, संस्कृति, और मूल्य : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में' पर आयोजित की जा रही व्याख्यानमाला में 11 जनवरी को डॉ. विष्णुकुमार ने अपने व्याख्यान में कहा कि भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपराएं, संस्कृति, और मूल्य भारतीय ज्ञान-प्रणाली से ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक व्यवस्थित रूप से पहुंचाया जाता रहा था। यह एक प्रथा होने के बजाय, ज्ञान-हस्तांतरण की एक संगठित प्रणाली और विधि रही। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 कालातीत भारतीय ज्ञान और दर्शन की समग्र विरासत को अपने मार्गदर्शक आधार के रूप में लेती है। भारत की ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन ज्ञान प्रणालियां अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण से विकसित हुई हैं। हमारी शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, विनिर्माण और वाणिज्य सभी इस मान्यता और व्यवहार में लाने की विरासत से प्रभावित हुए हैं। इसका भारत की शास्त्रीय और अन्य भाषाओं पर प्रभाव पड़ा है, जो रचनात्मक, मौखिक और साहित्यिक परंपराओं के माध्यम से आगे बढ़ीं। इसमें प्राचीन भारत का ज्ञान, इसकी उपलब्धियाँ और कठिनाइयाँ, साथ ही पारिस्थितिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा और वास्तव में अस्तित्व के हर पहलू के संबंध में भारत के भविष्य के लक्ष्यों की समझ शामिल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका-विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास सहित कई क्षेत्रों में अधिक अध्ययन को प्रोत्साहित और सक्षम करना चाहती है।

कार्यक्रम के दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि प्राचीन ज्ञान पांडुलिपियों, शिलालेखों, मौखिक परंपराओं और जीवित परंपराओं के रूप में संरक्षित रहा। प्राचीन ज्ञान का बहुत सारा भाग मुद्रित रूप में उपलब्ध है, फिर भी प्राचीन ज्ञान का एक बड़ा संग्रह अभी भी उपलब्ध नहीं है, जिसे खोजा जाना और प्रलेखित नहीं किया जाना है। जो प्रलेखित है तो उसका उचित रूप से अनुवाद और व्याख्या आवश्यक है। व्याख्यानमाला में संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. ममता पारीक, खुशाल एवं स्नेहा शर्मा उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परम्परा में भौतिक विज्ञान का समावेश

संस्थान के शिक्षा विभाग में चल रहे साप्ताहिक व्याख्यान में विभाग के सहायक आचार्य खुशाल जाँगिड़ ने 1 फरवरी को भौतिक विज्ञान का भारतीय ज्ञान परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान बताते हुए कहा कि भौतिक विज्ञान सदैव ही भारतीय मूल्यों और ज्ञानपरक शिक्षण को अभिप्रेरित करता रहा है। आर्यभट्ट, वराहमिहिर, कणाद और भास्कराचार्य जैसे कई विद्वानों ने अपने भौतिकी में सिद्धान्त व अवधारणाएं दी। हमारे वेद उपनिषद और पुराणों में इनके बारे में लिखा गया है, जो कि पुरातनकाल में हमारे ज्ञान और उसकी महत्ता का परिचायक है। ये सभी ज्ञान की अवधारणाएं विलुप्त न हो जाये, इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भारतीय मूल्यों के संरक्षण हेतु इस सम्बन्ध में विशेष जोर दिया है और इस को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को इस संदर्भ में तैयार किया जाना जरूरी है तथा पाठ्यक्रम में उचित रूपांतरण होना चाहिए। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि भारतीय ज्ञान चीरकाल से ही विस्तृत रहा है, जहाँ कणाद जैसे वैज्ञानिक अपने उस समय में भी परमाणुवाद का सिद्धांत प्रतिपादित कर दिए थे, जो आज के वर्तमान ज्ञान को आधार प्रदान करता है। साथ ही भारतीय ज्ञान में ध्वनि, ग्रह और तारों का ज्ञान बहुत पहले से चला आ रहा है। आवश्यकता इसे समझने व इसकी महत्ता को जानने की है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग से सभी शिक्षक सहायक आचार्य और छात्राएं उपस्थित रहे।

विद्या केवल सूचनाएं नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला होती है- प्रो. गोपीनाथ शर्मा

प्रसार भाषण माला में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग में 17 अप्रेल को आयोजित प्रसार भाषणमाला में 'भारतीय ज्ञान परंपरा में शैक्षिक परिदृश्य' विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के सेवानिवृत प्रोफेसर गोपीनाथ शर्मा ने कहा है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में शैक्षिक परिदृश्य अत्यंत समृद्ध, व्यापक और बहुआयामी है। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिकता और दर्शन तक सीमित रही, बल्कि गणित, विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, अर्थशास्त्र, संगीत, कला और भाषा के क्षेत्रों में भी अत्यंत गहन और व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करती रही है। उन्होंने कहा कि विद्या केवल सूचना नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला सिखाती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी या जीविका नहीं होकर आत्मबोध, समाजसेवा और मानव कल्याण होना चाहिए। शिक्षा आत्म-नियंत्रण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना जगाने का माध्यम है। हमारा व्यवहार, आचरण एवं गुण हमारे व्यक्तित्व को परिलक्षित करते हैं। उन्होंने अनेक उदाहरणों द्वारा शिक्षा के ध्येय को समझाया।

नैतिक व्यक्ति ही बन सकता है अच्छा नागरिक, अच्छा मित्र और एक अच्छा मानव

प्रसार भाषण माला में ही संजय टी.टी. कॉलेज जयपुर के सहायक आचार्य डॉ. भारती विजय ने 'नैतिकता और नैतिक मूल्य' विषय पर अपने विचारों में कहा कि नैतिकता सामाजिक नियमों का समन्वय है। गुरु और शिष्य के संबंध में श्रद्धा और विश्वास होता है, जो नैतिकता की नींव है। एक नैतिक व्यक्ति ही एक अच्छा नागरिक, अच्छा मित्र और एक अच्छा मानव बन सकता है। इसी कॉलेज की सहायक आचार्या डॉ. अंजना अग्रवाल ने 'वास्तविक दुनिया में परियोजना आधारित शिक्षा' विषय पर बोलते हुए कहा कि यह एक ऐसी शिक्षण विधि है, जिसमें छात्र किसी वास्तविक समस्या पर काम करते हैं, रिसर्च करते हैं, समाधान खोजते हैं और उसे प्रस्तुत करते हैं। बच्चे जब कुछ स्वयं कार्य करते हैं, तो आत्मबल बढ़ता है। इससे पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परंपरा, कला और संस्कृति पर साप्ताहिक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में साप्ताहिक व्याख्यान के तहत 5 फरवरी को विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की उपस्थिति में सहायक आचार्या डॉ. ममता पारीक ने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा कला और संस्कृति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि प्राचीन ज्ञान परंपरा का तात्पर्य उस परंपरा से है जो ज्ञान से उत्पन्न, ज्ञान से पोषित और ज्ञान से संचालित होती है, भारतीय ज्ञान परंपरा भारतवर्ष में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है, जो शिक्षा को न केवल पुस्तकीय ज्ञान के रूप में, न हीं जीविकोपार्जन के साधन के रूप में मानती थी, बल्कि इस कालखंड में शिक्षा को जीवन दर्शन के निर्माण के लिए आधारभूत सिद्धांत के रूप में माना जाता था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी जैसी प्राचीन भारत की विश्वस्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रों में शिक्षा और शोध के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए थे और विभिन्न पृष्ठभूमि और देशों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था। उन्होंने बताया कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य और प्रयोजन सदा से ही दुःख पर विजय पाने में मनुष्य की सहायता करना रहा है। हमारी ज्ञान परंपरा मनुष्यों को विश्लेषणात्मक उपाय सिखाती है, जिससे वे समझ सके कि उनके चित्त और उनकी भावनाएं किस प्रकार कार्य करती हैं, किस प्रकार उनकी भावनाएं उनके व्यवहार को प्रभावित करती हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृति जीवन के निकट से जुड़ी है, यह कोई बाहरी वस्तु नहीं है और न ही कोई आभूषण है, जिसे मनुष्य प्रयोग कर सके, यह वह गुण है जो हमें मनुष्य बनाता है।

कार्यक्रम में प्रो. बीएल जैन ने बताया कि शिक्षा के माध्यम से ही भारतीय ज्ञान, परंपरा कला और संस्कृति को किस प्रकार से शिक्षित किया जा सकता है, इस संबंध में भी शिक्षा नीति दिशा-निर्देश देती है। उन्होंने 64 कलाओं के बारे में भी बताया और कहा कि हम अपनी संस्कृति के पुनःसर्जन, संरक्षण और हस्तांतरण के द्वारा नए समाज की रचना कर सकेंगे। आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षक द्वारा शिक्षा में अन्य विषयों के साथ विद्यार्थी को भारत और उसके मूल्य, लोकाचारों, कला, परंपराओं आदि के ज्ञान से भी परिचित कराया जाए। उन्होंने छात्रों को अपने भारतीय ज्ञान और कला एवं संस्कृति की समझ को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य और छात्राएं उपस्थित रहीं।

दूसरी दुनिया की खोज और रहस्यों को लेकर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 8 जनवरी को साप्ताहिक व्याख्यानमाला के अंतर्गत टीम प्रेजेंटेशन का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने बताया कि इसके माध्यम से विषयक प्रस्तुतिकरण करने में एक से अधिक विशेषज्ञ अपने ज्ञान द्वारा विषय की गूढ़ता को बेहतर समझा पाते हैं और विद्यार्थियों में भी रचनात्मकता और आपसी समन्वय का विकास होता है। इस टीम प्रजेंटेशन में भौतिक शास्त्र के सहायक आचार्य खुशाल जाँगिड़ और रसायन की सहायक आचार्या स्नेहा शर्मा ने टीम टीचिंग के माध्यम से 'एक्सोप्लानेट : अनलोकिंग दी मिस्ट्रीज ऑफ डिस्टेंट वर्ल्डस' विषय पर एक लेक्चर प्रस्तुत किया, जिसमें पृथ्वी के अतिरिक्त बाहरी दुनिया से अवगत कराया गया।

स्नेहा शर्मा ने बाह्य-दुनिया के ग्रहों उनके प्रकार, संरचना और उनके संघटन के बारे में बताया। इसके साथ उन्होंने बाह्य ग्रह पर जीवन की संभावना के आंकलन के संदर्भ में समझाया। खुशाल जाँगिड़ ने इनकी खोज की आवश्यकता और खोज के लिए आवश्यक तकनीक व प्रणाली को समझाया। साथ ही बताया कि आगामी भविष्य में किस प्रकार के तकनीकी विकास और सिद्धान्तों की संभावनाएं अपेक्षित हैं। दोनों ने इस बारे में अब तक के विकास और खोजे जा चुके बाह्य-ग्रहों के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया तथा विभाग के सहायक आचार्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु शर्मा, डॉ. आभासिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, ममता पारीक, देवीलाल प्रजापत के साथ सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

समरस सहभोज की अनूठी मिसाल- मिलकर खाना खाया, भेद सभी भुलाया, समरसता कार्यक्रम एवं सहभोज का सबने लिया आनन्द

भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर आयोजित किए जाने वाले सामान्य कार्यक्रमों से अलग हट कर यहां संस्थान में सारे भेदभाव भुलाकर अम्बेडकर की भावनाओं को जीने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा विभाग में डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर 'सामाजिक समरसता कार्यक्रम' का आयोजन 15 अप्रेल को किया गया और उसमें आयोजित 'सह-भोज कार्यक्रम' में सभी छात्राओं व स्टाफ सदस्यों ने साथ बैठकर खाना खाया। इस सहभोज कार्यक्रम में सबने अपने-अपने घर से भोजन बनाकर अपने साथ लाकर यहां सबके साथ मिलकर बिना किसी भेदभाव के सबने मिलकर एक साथ खाया और सारे भेदों को भुलाया। सामाजिक समरसता की यह सबसे बड़ी पहल है, सहभोज। शिक्षिकाओं एवं छात्राओं ने मिलकर इस प्रकार मिलकर घर-घर बने खाने को प्रेमभाव से स्नेहभाव से खाकर समाज के समक्ष अनूठी मिसाल पेश की है। यह कोई पहली बार नहीं किया गया, बल्कि हर साल अम्बेडकर जयंती को इसी प्रकार मनाया जाकर परस्पर सौहार्द व भाईचारे की भावना का संदेश घर-घर पहुंचाया जाता है।

डॉ. अम्बेडकर के प्रति सम्मान

विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की अध्यक्षता में 17 अप्रेल को आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर ने डॉ. अंबेडकर के विचारों पर प्रकाश और बताया कि इस दिन को 'समानता दिवस' और 'ज्ञान दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है, क्योंकि जीवन भर समानता के लिए संघर्ष करने वाले अंबेडकर को समानता और ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। डॉ. अंबेडकर विश्वभर में मानवाधिकार आंदोलनकर्ता, संविधान निर्माता और प्रकांड विद्वत्ता के लिए जाने जाते हैं। यह दिवस उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है। इस अवसर पर सभी स्टाफ सदस्य एवं छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहे।

खानपुर गांव व विद्यालय में 'हरित ग्राम कार्यक्रम' का आयोजन कर पर्यावरण चेतना जागृत की

संस्थान के शिक्षा विभाग तथा अहिंसा एवं शांति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'हरित ग्राम कार्यक्रम' का आयोजन 17 अप्रेल को किया जाकर पर्यावरण संरक्षण, जल-संवर्धन, प्लास्टिक उन्मूलन और स्वच्छता के प्रति ग्रामीण समुदाय एवं विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा की गई। यह कार्यक्रम गांव खानपुर और शहीद तेजसिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खानपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की प्रतिनिधि डॉ. आभा सिंह ने कहा कि 'हरित ग्राम' केवल वृक्षारोपण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सतत् सोच है, जिसमें पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन की भावना होती है। उन्होंने ग्रामीणों से प्लास्टिक का उपयोग कम करने, अधिक से अधिक पौधे लगाने और जल-संरक्षण को अपनी आदत बनाने का आह्वान किया। खुशाल जांगिड़ ने ग्रामीणों से संवाद करते हुए बताया कि गांव की हर गली, हर घर अगर स्वच्छ, हरा-भरा और जागरूक होगा, तो वह एक आदर्श 'हरित ग्राम' कहलाएगा। उन्होंने दैनिक जीवन में पर्यावरण हितैषी विकल्प अपनाने के सरल उपाय साझा किए।

रसोई में जैविक अपशिष्ट के पृथक्करण पर महिलाओं को समझाया

कार्यक्रम में स्नेहा शर्मा ने विशेष रूप से महिलाओं और युवतियों से बात करते हुए उन्हें रसोई में जैविक अपशिष्ट का पृथक्करण, कम पानी से बर्तन धोना, कपड़े धोने में साबुन का संतुलित उपयोग आदि घरेलू स्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने के उपाय बताए। स्वयंसेविका खुशी जोधा ने भी ग्रामीण महिलाओं से संवाद कर उन्हें दैनिक जीवन में हरियाली बढ़ाने और कचरा प्रबंधन के बारे में बताया। अन्य स्वयंसेविकाओं ने गांव में घर-घर जाकर लोगों को 'हरित जीवन शैली' अपनाने के लिए प्रेरित किया और बुकलेट्स वितरित कीं, जिनमें जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरणीय कानून और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों की जानकारी दी गई थी। खानपुर के शहीद तेज सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उन्हें पर्यावरणीय जिम्मेदारियों के प्रति प्रेरित किया गया।

प्रधानाचार्य विक्रम सिंह ने कार्यक्रम में कहा कि आज के विद्यार्थी ही कल के नीति-निर्माता होंगे। अगर अभी से उन्हें पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाएंगे, तो आने वाली पीढ़ियां अधिक सुरक्षित जीवन जी सकेंगी। उन्होंने कहा, यह कार्यक्रम बच्चों में पर्यावरण के प्रति गहरी चेतना जगाने वाला है। कार्यक्रम में विद्यार्थी विमलेश कुमार, रामनिवास, योगेश सैन, गौतम सरस्वत, श्रीचंद्र मील, कुंवर सिंह, सुशीला, अश्विनी राठौड़ आदि उपस्थित रहे।

विश्व पुस्तक दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित कर पुस्तकों के महत्त्व को किया प्रतिपादित

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर 23 अप्रेल को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की उपस्थिति में आयोजित इस विचार गोष्ठी में सभी शिक्षकों ने पुस्तकों के उद्देश्य, उनके प्रति प्रेम और जागरूकता आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। विभागाध्यक्ष प्रो. जैन ने कहा कि पुस्तकें व्यक्ति को जागरूक बनाती हैं और समाज के महत्व को समझाने का अवसर प्रदान करती हैं। पुस्तकें नई दिशा दिखाने और जीवन को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे हमें ज्ञान, प्रेरणा और आत्मविश्वास प्रदान करती हैं और समाज को मानवता में सरलता से शिक्षित करने का प्रयास करती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पुस्तकों के बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए कई तरीके हो सकते हैं, जैसे कि पुस्तकों की प्रदर्शनी, पुस्तक प्रतियोगिता, लेखक परिचर्चा, पुस्तकालय का भ्रमण और कविता-कहानी लेखन प्रतियोगिताएँ आदि। चर्चा के दौरान विभाग के सहायक आचार्यों ने पुस्तक दिवस और इसके महत्त्व के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि पुस्तकों के डिजिटलीकरण ने पढ़ाई को सुविधाजनक और सुलभ बनाया है। हालांकि, इसने महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता को कम कर दिया है। विस्तृत चर्चा के निष्कर्ष में सभी ने एकमत होकर कहा कि पुस्तकें मानव को एक सुलभ और अपने तरीके से जीने का मार्ग प्रशस्त करती हैं। यह व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास करवाती है, जीवन में प्रेरणा देती है और समाहित ज्ञान को मानव को अपने आप में निखार करने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती है। कार्यक्रम में विभाग के सभी सहायक आचार्य और आचार्यों ने उपस्थित रहकर पुस्तकों के महत्त्व और उनके प्रभाव के बारे में विस्तार से चर्चा की।

भारतीय भाषा महोत्सव में 'भाषाओं के माध्यम से एकता' थीम पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर द्विदिवसीय कार्यक्रम

संस्थान के शिक्षा विभाग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर द्विदिवसीय कार्यक्रम 2 मार्च को आयोजित किया गया। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में पहले दिन, विद्यार्थियों के लिए एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पहलुओं पर प्रश्न पूछे गए तथा दूसरे दिन, भारतीय भाषा महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के बारे में जानकारी दी गयी। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने छात्राओं को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस नीति में विद्यार्थियों को अवगत करवाने के लिए सारथी बनाए गए हैं, जो शिक्षा क्षेत्र के सभी छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि इस नीति का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके आने वाले भविष्य में होने वाले शिक्षा संबंधी नए उपक्रमों के बारे में अवगत करवाना है।

क्विज प्रतियोगिता में लिया छात्राओं ने भाग

प्रथम दिन के कार्यक्रम में, एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रा खुशी जोधा ने विद्यार्थियों को 15 प्रश्न दिए। इन प्रश्नों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित सभी नई जानकारियां शामिल थीं। पहले दिन क्विज में ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इसका साथ ही दूसरे दिन भारतीय भाषा महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शामिल की गई भारतीय भाषाओं के संवर्धन और संरक्षण का महत्व विद्यार्थियों को बताना था। विभागाध्यक्ष प्रो. जैन ने विद्यार्थियों से अनुरोध किया कि वे अपनी भाषा के महत्व को समझें और इन भाषा को अपनाने और अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को बोलने पर जोर दें। भारतीय भाषाओं की समृद्धता को समझने और एक भाषाई

रूप से जागरूक और सांस्कृतिक रूप से समावेशी पीढ़ी के निर्माण में योगदान देने का अवसर मिलता है।

भाषायी धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता

मुख्य वक्ता डॉ. अमिता जैन ने भाषा के संवर्धन और संरक्षण के लिए किए जा रहे सभी प्रयासों के बारे में बताया और बताया कि भारतीय भाषा महोत्सव का उद्देश्य शिक्षा नीति में भाषा का महत्व समझना और समझाना है। इस वर्ष के भारतीय भाषा उत्सव का थीम है, 'भाषाओं के माध्यम से एकता'। जो यह दर्शाता है कि भारत की विविध भाषाई परंपराएं राष्ट्रीय एकता को कैसे प्रोत्साहित करती हैं और एक सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण करती हैं। एनईपी सारथी खुशी जोधा ने भी छात्राओं को इस कार्यक्रम का महत्व बताया। इस भाषाई और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए भारतीय भाषाओं को शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करना आवश्यक है। कार्यक्रम के संयोजक खुशाल जांगिड़ ने भी शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के नए आयामों और उसके भाषाई महत्त्व को समझाया और इसका लक्ष्य उजागर किया। कार्यक्रम में विभाग के सभी शिक्षक गण और सभी छात्राएँ उपस्थित रहे।

मतदान दिवस पर निष्पक्ष मतदान की दिलाई शपथ

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों तथा शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में मतदान दिवस 25 जनवरी को एक कार्यक्रम का आयोजन किया जाकर सभी स्वयंसेविकाओं एवं विद्यार्थियों को चुनावी प्रक्रिया में निष्पक्ष मतदान करने की शपथ दिलाई गई।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने शपथ दिलाई और कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में निष्पक्ष मतदान का सशक्त लोकमत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होता है, अतः हमें हमारे मत का प्रयोग विवेक से करना चाहिए और योग्य तथा कर्मठ उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करना चाहिए। कार्यक्रम में डॉ. ममता शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये और मतदान करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। इस अवसर पर संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

साइबर सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर किया डिजीटल एरेस्ट के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार 2 जनवरी को साइबर सुरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जाकर 'डिजीटल अरेस्ट' के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने डिजिटल अरेस्ट पर अपने विचारों में बताया कि वर्तमान में तेजी से फैलता हुआ नया साइबर स्कैम 'डिजीटल एरेस्ट' है। डिजिटल अरेस्ट में अपराधी फर्जी सरकारी अधिकारी पुलिस, सीबीआई, नारकोटिक्स, आरबीआई अधिकारी आदि बनकर वीडियो कॉल के माध्यम से लोगों को डरा-धमकाकर उनसे बड़ी रकम की वसूली करते हैं। डिजिटल अरेस्ट की पहचान करने के लिए सतर्कता की जरूरत है। अगर किसी अनजान नंबर से कोई फोन या वॉट्सएप कॉल आए तो याद रखना चाहिए कि कानून में डिजिटल अरेस्ट का कोई प्रावधान नहीं है। भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम 'सीईआरटी-एन' ने लोगों को डिजिटल अरेस्ट से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी की है। सीईआरटी ने बताया डिजिटल अरेस्ट से बचने हेतु किसी भी वॉट्सएप या स्काइप कॉल्स के प्रति सतर्कता बरतें, साइबर ठगों द्वारा किये जाने वाले फोन कॉल, ई-मेल से संदेशों को इग्नोर करें, साइबर ठग कॉल पर बातचीत के दौरान गिरफ्तारी या कानूनी कार्रवाई की धमकी दें, तो घबराएं नहीं और जल्दबाजी भी नहीं दिखाएं। साथ ही अपनी बैंक डिटेल व यूपीआई आईडी शेयर नहीं करें। कॉल के स्क्रीनशॉट या वीडियो रिकॉर्डिंग सेव करें, ताकि आवश्यक होने पर उसका उपयोग किया जा सके तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 या वेबसाइट 'साइबरक्राइम डॉट गोव डॉट इन' cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

कार्यक्रम के अध्यक्ष विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने यू.जी.सी. द्वारा जारी की गई 'हेंड बुक बेसिक्स ऑफ साइबर हाईजीन' विद्यार्थियों को शेयर करते हुए कहा कि किसी भी साइबर अपराध से बचने का एक ही तरीका है, जागरूक रहना।

राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन प्रोग्राम पर किया छात्राध्यापिकाओं को जागरूक

संस्थान के शिक्षा विभाग में 29 मार्च को राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के बारे में छात्राओं को जानकारी प्रदान की गई। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि ट्यूबरकुलोसिस एक बड़ी विकट समस्या है, जो हमारे देश में फैली हुई है। उन्होंने बताया कि ट्यूबरकुलोसिस माइको बैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु के कारण फैलता है और इसके लक्षण खांसी, खून आना, बुखार, कमजोरी, वजन कम होना और सीने में दर्द होते हैं। उन्होंने बताया कि भारत में ट्यूबरकुलोसिस की समस्या जनसंख्या का बहुत सारा प्रतिशत प्रभावित हुआ है, लेकिन 2015 से 2025 तक लगभग 17 प्रतिशत कम हो चुका है। इस राष्ट्रीय रणनीति योजना का उद्देश्य भारत को ट्यूबरकुलोसिस मुक्त बनाना है।

उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा एनटीईपी कार्यक्रम सौ दिवसीय विशेष अभियान के तहत शुरू किया गया है, जिससे सभी विद्यार्थियों और लोगों को ट्यूबरकुलोसिस की समस्या और उसके निदानों के बारे में अवगत करवाया जा सके। उन्होंने बताया कि विभिन्न चिकित्सालयों और शिक्षा संस्थानों में इसकी जो उपाय और रोकथाम है, उसके तरीके मौजूद हैं। उन्होंने बताया कि यदि कोई व्यक्ति ट्यूबरकुलोसिस से रोगी है, तो सामने वाले व्यक्ति को भी मास्क पहनने चाहिए, हाथ धोना चाहिए, स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए और ट्यूबरकुलोसिस के मरीजों से दूर रहना चाहिए। इस कार्यशाला में विभाग के सभी सहायक आचार्य व छात्राएं मौजूद रहे।

शिक्षक-अभिभावक बैठक में अभिभावकों ने शिक्षण और शैक्षणिक गतिविधियों को सराहा

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में शिक्षक-अभिभावक बैठक का आयोजन 18 अप्रेल को प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया। बैठक की शुरुआत में छात्रा कांन्ता एवं समूह ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात आईटी संकाय सदस्या डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। बैठक में बी.ए. 6 सेमेस्टर की छात्रा प्रियंका भंसाली ने अभिभावकों को महाविद्यालय की सत्रीय गतिविधियों से अवगत करवाया। सभी उपस्थित अभिभावकों ने अपना-अपना परिचय देते हुए महाविद्यालय के विद्यानुकूल वातावरण के साथ शैक्षणिक गतिविधियों एवं उसमें अध्ययन-अध्यापन के प्रति संतुष्टि जाहिर की। बैठक के दौरान कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकायों की ओर से संकाय सदस्य अभिषेक चारण, मधुकर दाधीच एवं डॉ. गिरधारी लाल ने संकायों एवं उनके अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों के संबंध में जानकारी दी। बैठक के अंत में अभिभावकों ने महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी के साथ परिचर्चा कर महाविद्यालय के बेहतरीन भविष्य एवं उत्तरोत्तर विकास की संभावनाओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। इस दौरान सभी संकाय सदस्य मौजूद रहे।

विश्व हिंदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या माहाविद्यालय में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने वर्ष 2025 के लिए विश्व हिन्दी दिवस हेतु रखी गई थीम 'एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज' को छात्राओं के बीच साझा करते हुए बताया कि हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी के महत्व और उसके वैश्वीक प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2006 से 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इस दिन भारत ही नहीं, विश्व भर के अनेक देशों में विभिन्न शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक संस्थानों द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। भारतीय संस्कृति और उसको अभिव्यक्त करने वाली हिन्दी भाषा विश्व में चौथी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। कार्यक्रम का संचालन हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया। अंत में आभार ज्ञापन वाणिज्य संकाय सदस्य मधुकर दाधीच ने किया। कार्यक्रम में छात्राओं के साथ सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती पर पराक्रम दिवस मनाया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती 23 जनवरी को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी नेता सुभाषचन्द्र बोस द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा आज तक भारत में लोकप्रियता की मिसाल बनकर राष्ट्रीय नारा बना हुआ है। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए जापान से सहयोग पाकर आजाद हिन्द फौज का गठन किया। नेताजी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुप्रीम कमाण्डर' के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए 'दिल्ली चलो' का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया। 21 अक्टूबर 1943 को आजाद हिंद फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से उन्होंने स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई, जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड सहित 11 देशों की सरकारों ने मान्यता दी थी। इसी आजाद हिंद फौज द्वारा सुभाष बोस के नेतृत्व में वर्ष 1944 में अंग्रेजों पर आक्रमण किया और कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त करा लिया था। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि नेताजी की मृत्यु को लेकर कई प्रसंग रहस्यात्मक एवं विवादास्पद हैं। हालांकि, एक विमान हादसे में उनकी मृत्यु मानकर जापान में प्रतिवर्ष 18 अगस्त को उनका शहीद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। लेकिन उनके परिवार के लोगों का मानना यही है कि सुभाष की मौत 1945 में नहीं हुई थी। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम समन्वयक एवं हिन्दी के सहायक आचार्य अभिषेक चारण द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं के साथ संकाय सदस्यों की उपस्थिति सराहनीय रही।

महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर शहीद दिवस कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 30 जनवरी को शहीद दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता

करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या 30 जनवरी 1948 को शाम की प्रार्थना के दौरान बिड़ला हाउस में हुई थी। गांधीजी एक स्वतंत्रता सेनानी, दृढ़ निश्चयी, सरल और सहजमना व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता, कल्याण और विकास के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। उन्हें राजनीतिक और सामाजिक प्रगति हासिल करने के लिए अहिंसावादी सिद्धांतों के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा मिली। महात्मा गांधी महज नाम ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में शांति और अहिंसा का प्रतीक बन चुका है। प्रो. त्रिपाठी ने महात्मा गांधी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम में संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रही।

महिला दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक एवं महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 8 मार्च को कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि

महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और उन्हें सम्मान देने के लिए हर साल महिला दिवस आयोजित किया जाता है। महिलाएं शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, खेल आदि सभी क्षेत्रों में लम्बे अर्से से अपनी छाप छोड़ रही हैं। उन्होंने अपनी पहचान एवं वर्चस्व को कायम किया है। उन्होंने कहा कि नारी केवल एक शब्द नहीं, बल्कि संपूर्ण सृष्टि का आधार है। वह जीवनदायिनी है, प्रेम की मूर्ति और रिश्तों को संवारने वाली अनुपम शक्ति है। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति, ममता, और त्याग का स्वरूप माना गया है। अन्य संकाय सदस्यों में डॉ. प्रगति भटनागर, अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी व स्नेहलता शर्मा ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। छात्राओं में ईशा प्रजापति, दीपिका, रीना मेघवाल, स्नेहा बोहरा, मीनाक्षी बाफना, सोनू जांगिड़, संजीता प्रजापत आदि छात्राओं ने भी अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। इस दौरान प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, राधिका लोहिया, मयंक बागडे घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहीं।

भारतीय युवा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित विवेकानंद क्लब के तत्त्वावधान में युवा दिवस से एक दिन पूर्व 11 जनवरी को कार्यक्रम रखा जाकर भारतीय संस्कृति के संवाहक स्वामी विवेकानंद के योगदानों को याद किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य व दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति एवं सनातन जीवन मूल्यों के के सच्चे संवाहक कहे जा सकते हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानंद द्वारा भारतीय संस्कृति को मिले नैतिक आदर्शों की विस्तश्त व्याख्या की। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के खेतड़ी महाराजा अजीत सिंह से भेंट करने से लेकर उनके अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने तक के संपूर्ण वृतांत को विवेकानंद की विश्वसनीयता से लेकर उनकी लोकप्रियता के रूप में अंगीकृत किया। कार्यक्रम में विवेकानंद क्लब के सदस्या छात्राओं क्रमशः कान्ता सोनी, राखी शर्मा, दीपाली शास्त्री, हर्षिता कोठारी, सुनीता काजला आदि ने विवेकानंद के विभिन्न जीवन से सम्बंधित अपने विचार रखे। कार्यक्रम संचालन विवेकानंद क्लब के प्रभारी एवं कार्यक्रम समन्वयक अभिषेक चारण ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवारी ने किया। इस अवसर पर डॉ. प्रगति भटनागर, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, सुश्री राधिका लोहिया एवं स्नेहा शर्मा आदि की उपस्थिति रही।

मकर संक्रांति पर्व पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में मकर संक्रांति पर 14 जनवरी को कार्यक्रम आयोजित किया जाकर पर्व मनाया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि मकर संक्राति को शुभ कार्यों के उद्भव का प्रतीक समझा जाता है। यह पर्व आपसी प्रेम सद्भाव और आनंद का पर्व है। इस दिन को पतंगें उड़ाई जाकर उल्लास से मानाया जाए, किन्तु पक्षियों आदि जीव-जंतुओं आदि का भी ध्यान रखना चाहिए, उन्हें नुकसान नहीं पहुंच पाए।

कार्यक्रम में विभाग की छात्राओं गुंजन, खुशी और पायल ने अपने विचार रखे। सहायक आचार्या ममता पारीक ने पर्व की महत्ता को समझाया और इसे ग्रीष्म के आगमन का संकेत बताया। सहायक आचार्य गिरिराज भोजक ने अपने विचारों में मकर संक्रांति पर्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उत्तरायण में प्रवेश करने के बारे में बताते हुए इस पर्व के व्यंजनों और मिठाइयों को मौसम के अनुकूल पथ्य और महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम में विभाग के सभी सहायक आचार्य व छात्राएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के संचालक सहायक आचार्य खुशाल जांगिड़ ने बताया कि मकर संक्राति सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण में आने का प्रतीक है। यह त्योंहार सूर्य देव के प्रति आभार ज्ञापन को दर्शाता है, साथ ही किसानों की अच्छी लहलहाती फसल की खुशी को दर्शाता है।

विश्व हिंदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कार्यक्रम में कहा कि हिंदी दिवस को इस वर्ष 'एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज' थीम पर मनाया जा रहा है।

विश्व के लगभग 132 से अधिक देशों में भारतीय मूल के निवासी अधिकतर हिंदी में ही अपने कार्य संपादित करते हैं। भाषा बोलने, समझने और बात करने वालों की संख्या विश्वमें सर्वाधिक होने के कारण इस भाषा को वैश्विक स्तर पर दिवस के रूपमें आयोजित किया जाता है। हिंदी भाषा सांस्कृतिक गौरव की भाषा रही है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमिता जैन ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस को दुनिया भर में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए मनाया जाता है। उन्होंने हिंदी सम्बंधी एक गीतिका भी प्रस्तुत की। डॉ. ममता पारीक ने कहा कि हिंदी न केवल भारत की राजभाषा है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और पहचान का महत्त्वपूर्ण हिस्सा भी है। कार्यक्रम में कोमल स्वामी, सल्लू प्रजापत, सुनीता चौधरी और अंकिता अचेरा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में विभाग के संकाय सदस्य एवं समस्त छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)

एन.एस.एस. के सात दिवसीय शिविर में विविध आयोजन

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में चल रहे सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान पांच दिनों में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

स्वयंसेविकाओं ने दिखाया अपना कौशल

'समाज में बढती अपराध प्रवृति' पर निबंध लिखे, स्वच्छ भारत अभियान चलाया, टीबी मुक्त भारत पर दिए वक्तव्य और 'माय भारत' पोर्टल ज्वॉयन करवाया

विशेष शिविर में 7 मार्च को आयोजित निबंध लेखन कार्यक्रम में स्वयंसेविकाओं ने भाग लेकर अपने विचारों को निबंध लिख कर प्रस्तुत किया। निबंध लेखन की थीम 'नाबालिगों में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति एवं

समाज' रखी गई। इसके अलावा स्वयंसेविकाओं में चिंतनशील प्रवृत्ति विकसित करने के लिए 'टीबी मुक्त भारत अभियान' पर विचार अभिव्यक्ति का कार्यक्रम भी रखा गया। शिविर में इस विद्यार्थियों में चिंतनशीलता एवं भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे टीबी मुक्त भारत अभियान के बारे में विचारों के लिए प्रेरित किया गया। इसमें स्वयंसेवकों ने अपने विचार अभिव्यक्त किए। इसके अलावा शिविर में स्वच्छता अभियान भी संचालित किया जाकर लोगों को स्वच्छता के लिए जागरूक किया गया। इसके साथ ही स्व्यंसेविकाओं ने 'माय भारत' पोर्टल के बारे में लोगों को जानकारी प्रदान की और अधिक से अधिक युवाओं को इस पोर्टल से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। स्वयंसेविकाओं ने शहर के पहली पट्टी रोड, भैया बगीची व श्रीराम मंगलम अस्पताल के आस-पास सफाई भी की और नागरिकों को स्वच्छता बनाए रखने का संदेश दिया। शिविर के दौरान स्वयंसेविकाओं ने राजकीय केसर देवी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का 'माय भारत' पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया को समझाते हुए उनका रजिस्ट्रेशन भी करवाया। शिविर के इन सभी कार्यक्रमों के आयोजन में इकाई प्रथम प्रभारी तथा राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक डॉ. आभा सिंह और इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह उपस्थित रहे और उनका मार्गदर्शन रहा।

महिलाएं राष्ट्र विकास में महत्त्वपूर्ण- क्रांति सिंह
महिला दिवस पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित

शिविर के पांचवें दिन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 8 मार्च को आयोजित कार्यक्रम में प्रथम चरण में 'महिला सशक्तीकरण एवं समाज' विषय पर व्याख्यान रखा गया, जिसमें वन विभाग डूंगरगढ़ की अतिरिक्त वन संरक्षक क्रांति सिंह ने बताया कि समाज में केवल वर्तमान समय में ही नहीं, बल्कि प्राचीन काल से भी महिलाएं समाज में चेतना में जागृति फैलाने के लिए जानी जाती रही हैं। आज भी महिलाएं पुरुषों के समकक्ष कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं, जो राष्ट्रीय विकास के लिए महत्वपूर्ण आयाम है। इस अवसर पर बाल भारती इंटरनेशनल स्कूल की प्राचार्य श्रीमती मधु शेखावत ने महिला सशक्तिकरण एवं महिला जागरूकता को सामाजिक एवं लैंगिक भेदभाव मिटाने में काफी महत्वपूर्ण आयाम बताया और कहा कि हमें हमारी संस्कृति एवं मर्यादा का सम्मान करने के साथ-साथ के अधिकारों के लिए भी जागृत रहना चाहिए। दूसरे चरण में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें स्वयंसेविकाओं ने अपनी प्रस्तुतियों से सब का मन मोह लिया। इस अवसर पर संस्थान के संस्थाएं सदस्य एवं सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

स्वयंसेविकाओं ने किया निःशुल्क डायबिटीज एवं थायराइड कैंप में सहयोग

नवदीप अस्पताल एवं शोध केंद्र लाडनूं में डॉ. बी.एस. राठौड़ ऑर्गेनाइजेशन द्वारा लगाए गए स्वास्थ्य जांच शिविर में जैन विश्वभारती संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की स्वयंसेविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी सेवाएं प्रदान कीं। एनएसएस प्रथम इकाई प्रभारी डॉ. आभा सिंह एवं द्वितीय इकाई के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण के मार्गदर्शन में छात्रा खुशी जोधा और आशा मेघवाल ने पंजीकरण, रोगी सहायता और व्यवस्थाओं के संचालन में सक्रिय भूमिका निभाई। ऑर्गनाइजेशन द्वारा स्वयंसेविकाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। यह सहभागिता राष्ट्रीय सेवा योजना के 'समाज सेवा के माध्यम से युवाओं का व्यक्तित्व विकास' के लक्ष्य को साकार करने के तहत थी।

इस शिविर में डायबिटीज एवं थॉयराइड के 180 मरीजों को निःशुल्क परामर्श प्रदान किया गया। शिविर में 120 लोगों की ओपीडी ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, एचबीए1सी, थायरायड की जांच, न्यूरोपैथी टेस्ट, वजन जांच आदि की विभिन्न प्रकार की निःशुल्क जांच भी की गई। शिविर में जयपुर के प्रसिद्ध वरिष्ठ एंडोक्राइनोलोजिस्ट चिकित्सक डॉ. एस.के. शर्मा ने अपनी टीम के साथ सेवाएं प्रदान की। शिविर में वरिष्ठ नेत्र विशेषज्ञ डॉ. बलवीर सिंह एवं डॉ. बी.एस. राठौड़ ऑर्गेनाइजेशन की डॉ. ज्योत्स्ना भगवान सिंह राठौड़, डॉ. कमल सोनी, राजेन्द्र बागड़ी आदि के साथ पूरी टीम सहित सेवारत रहे।

सरकारी अस्पताल और विश्वविद्यालय परिसर में एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने लगाए पक्षियों के लिए परिंडे व घोंसले

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों, शिक्षा विभाग में गठित पर्यावरण क्लब तथा गौसेवा टीम लाडनूं के संयुक्त तत्त्वावधान में संस्थान परिसर एवं स्थानीय राजकीय सेठ गणपत राय सरावगी चिकित्सालय में पक्षियों के लिए परिंडे और घोंसले लगाए गए। इस अवसर पर वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि गर्मी के मौसम में पक्षियों के लिए जल और सुरक्षित निवास की व्यवस्था करना मानवीय कर्तव्य है। इस प्रकार के कार्यक्रमों से पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ती है। साथ ही जीव-जंतुओं के संरक्षण की दिशा में ये सकारात्मक कदम भी होते हैं। पर्यावरण क्लब के प्रभारी डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में पक्षियों की अहम भूमिका बताते हुए अपने आसपास के जीवों के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता बताई। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों के इस कार्य को निःस्वार्थ सेवा और पर्यावरण प्रेम का प्रतीक और समाज के लिए प्रेरणादायक बताया।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय के प्रभारी बलबीर सिंह चारण ने कहा कि इस प्रकार के सेवा कार्य स्वयंसेवकों में सामाजिक दायित्व और नैतिक मूल्यों की भावना को प्रबल करते हैं। एनएसएस सदैव ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों के लिए तत्पर है। गौसेवा टीम लाडनूं के प्रमुख गौसेवक अमित डांवर ने कहा कि पशु-पक्षी प्रकृति का अभिन्न हिस्सा हैं और उनकी सेवा प्रकृति के साथ पूरी मानवता की सेवा है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना की सक्रिय स्वयंसेविकाएं खुशी जोधा, लेहरो, आशा मेघवाल एवं गौसेवक केशव पारीक ने विशेष रूप से योगदान दिया।

इन सभी ने मिलकर संस्थान परिसर व राजकीय चिकित्सालय में परिंडे एवं घोंसले स्थापित किए। कार्यक्रम के दौरान अस्पताल के नर्सिंग स्टाफ पवन जांगिड़ एवं मोहन सिंह जोधा ने विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे कार्य की सराहना की तथा स्वयं भी उनकी सहायता की। उनकी भागीदारी से विद्यार्थियों को और अधिक उत्साह व प्रोत्साहन मिला।श्व कार्यक्रम का उद्देश्य गर्मी के मौसम में पक्षियों के लिए जल, छाया और सुरक्षित आवास सुनिश्चित करना था। इस पहल से विद्यार्थियों व स्थानीय नागरिकों में पर्यावरण संरक्षण की भावना को बल मिला है।

स्वयंसेविकाओं ने किया सामाजिक चेतना यात्रा का आयोजन

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की स्वयंसेविकाओं द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में भियाणी और मंगलपुरा गांव में 8 अप्रेल को सामाजिक चेतना यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा का उद्देश्य ग्रामीणों के सामाजिक समानता, शिक्षा, स्वच्छता एवं जलसंरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों के प्रति जागरूक करना था। स्वयंसेविकाएं गांवों की गलियों और घरों में जाकर लोगों से संवाद करती रहीं और सामाजिक मुद्दों को लेकर चर्चा की। इस दौरान डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों और उनके सामाजिक योगदान पर प्रकाश डाला गया। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. आभासिंह ने कहा कि डॉ. अंबेडकर केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचारधारा हैं। उनके सिद्धांत आज भी समाज के लिए मार्गदर्शक हैं। इस यात्रा के माध्यम से छात्राओं ने उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का सराहनीय प्रयास किया। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण ने कहा कि सामाजिक चेतना ही परिवर्तन की शुरुआत है। जब युवा स्वयंसेविकाएं गांव-गांव जाकर संवाद करती हैं, तो जागरूकता की असली लहर चलती है। इस यात्रा से न केवल ग्रामीणों में बल्कि छात्राओं में भी सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। यह सामाजिक चेतना यात्रा न केवल अंबेडकर जयंती के अवसर को सार्थक बनाने का एक प्रयास रही, बल्कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक मुद्दों को लेकर संवाद भी बढ़ा।

स्वयंसेविकाओं को बताए आत्मरक्षा के उपाय

एनएसएस का तृतीय एक दिवसीय शिविर आयोजित

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों द्वारा तृतीय एक दिवसीय शिविर का आयोजन 26 मार्च को किया गया। शिविर के प्रथम चरण में स्वयंसेविकाओं को किसी भी आपातकालीन स्थिति में अपना बचाव किया जाने के तरीके बताए गए। शिविर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने स्वयंसविकाओं को आत्मरक्षा के लिए उपाय बताते हुए समझाया कि आपातकालीन स्थिति में यदि उनके साथ कोई गलत होने की संभावना होती है, तो भयभीत होने के बजाय उस परिस्थिति में जो भी संसाधन पास में उपलब्ध हों, उसका उपयोग कर अपना बचाव किया जा सकता है। इसके लिए पास में कोई बैग, सेफ्टी पिन आदि कुछ भी हो तो उसको बुद्धिमता पूर्ण ढंग से प्रयोग में लिया जा सकता है और अपना बचाव किया जा सकता है। दूसरे चरण में स्वयंसेवकों ने संस्थान में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों के कक्षों को सुव्यवस्थित किया और राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यालय में सामग्री एवं वस्तुओं को सुव्यवस्थित किया। शिविर का आयोजन इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह एवं इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के निर्देशन में संपन्न हुआ।

प्रमाद छोड़ परिश्रमी बनो, तो सफलता निश्चित है- प्रो. त्रिपाठी

छात्राध्यापिकाओं की फेयरवेल्स पार्टी 'शुभ भावना 2025' का आयोजन,

मिस फेयरवेल ज्योति, मिस ब्राइट निशा और मिस ग्लोरियस निकिता बनी और बेहतरीन प्रस्तुति के लिए चुनी गई आंचल

संस्थान के शिक्षा विभाग की ओर से आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में अंतिम वर्ष की छात्राध्यापिकाओं के लिए 11 अप्रेल को 'शुभ-भावना 2025' के रूप में फेयरवेल्स पार्टी का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी थे एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. रेखा तिवाड़ी व प्रो. जिनेन्द्र जैन थे। समारोह में, छात्राओं ने अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में भी चर्चा की और एक दूसरे को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में विभाग की छात्राओं ने अपनी अद्भुत प्रस्तुतियां दीं, जिसमें नृत्य, गायन और वादन आदि संबंधित सभी कार्यक्रम शामिल थे। इनमें विद्यार्थियों ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं और विद्यालय के अपने अनुभवों को साझा किया।

मिस फेयरवेल ज्योति, मिस ब्राइट निशा और मिस ग्लोरियस निकिता बनी

कार्यक्रम में 'मिस फेयरवेल' का खिताब ज्योति फुलवारिया को, 'मिस ब्राइट' का खिताब निशा स्वामी को और 'मिस ग्लोरियस' का खिताब निकिता को प्रदान किया गया। इनके अलावा छात्राओं के मध्य हुई खेल प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रस्तुति का पुरस्कार आंचल जावा को दिया गया। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने अपने अध्ययन की अवधि के स्मरणी पलों की पीपीटी तैयार करके प्रदर्शित की। छात्राध्यापिका पूनम पंवार ने अपने अनुभवों और भावों को अभिव्यक्त किया। आंचल जावा ने सभी शिक्षकों के साथ बीते पलों के आधार पर काव्योक्तियों की प्रस्तुति दी। छात्राओं ने सामुहिक नृत्य, एकल नृत्य, कविता, गीत व अन्य भावाभिव्यक्ति के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।

पुरूषार्थी को करती है दुनिया याद

कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि दुनिया में केवल पुरूषार्थी को ही याद किया जाता है। पत्थर पर लकीर खींचने की तरह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कुछ करके दिखाना आवश्यक होता है। प्रमाद करने वाला नहीं बन कर परिश्रमी बनने पर ही लक्ष्य की प्राप्ति संभव है। इसलिए चाहे धीमा ही चलो, पर सतत चलने पर सफलता अवश्य मिलती है। प्रो. बीएल जैन ने जीवन में सुख-दुःख की अनुभूति के बावजूद कभी हार नहीं मान कर अपने प्रयास जारी रखते हुए सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शुरूआती असफलताओं के बावजूद प्रयास जारी रखने पर सफलता अवश्य मिलती है। उन्होंने भारतीय नैतिक मूल्यों, परम्पराओं व संस्कृति के साथ जीवन में अच्छी बातें ग्रहण करने पर बल दिया और ऊंचाइयों को छूने व निरन्तर आगे बढते रहने के लिए प्रेरित किया।

श्रम एव विजयते को जीवन में उतारो

राजस्थानी भाषा एवं साहित्य विकास केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास ने छात्राध्यापिकाओं से 'श्रम एव जयते' को जीवन का घोष-वाक्य बनाने और जीवन में श्रम को महत्त्व देने की अपील की। उन्होंने प्रमाद, आलस्य, खुशी, आनन्द के क्षणों का त्याग करके श्रम करते हुए सफलता को प्राप्त करने के लिए उत्साह भरा। प्रो. जिनैन्द्र जैन ने संस्थान से अध्ययन के दौरान सीखे हुए सबक जीवन भर याद रखने और उनसे लोगों को लाभान्वित करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ ललिता जांगिड़ ने गणेश वंदना के साथ नृत्य प्रस्तुत करके किया। कार्यक्रम की संयोजना में विभाग की छात्राओं भूमिका, ज्योति, मोनिका, रश्मि, आयुश्री, कोमल, हर्षिता सोनी, चंचल और मिताली, कुसुम, अनिशा, सिमरन आदि ने अपनी भूमिका अदा की। कार्यक्रम की सूत्रधार विभाग के सहायक आचार्य खुशाल जांगिड़ और स्नेहा शर्मा रहे। कार्यक्रम में विभाग के सभी सहायक आचार्य, आचार्याएं और सभी छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

नेशनल कैडेट्स कोर (एनसीसी)

राष्ट्रसेवा के लिए सदैव तत्पर रहें- हवलदार हवासिंह

25 एनसीसी गर्ल्स को किया गया 'बी' सर्टिफिकेट्स का वितरण

संस्थान में संचालित नेशनल कैडेट्स कोर (एनसीसी) की 3 राज. गर्ल्स बटालियन के कैडेट्स को एक कार्यक्रम आयोजित करके 25 कैडेट्स को 'बी' सर्टिफिकेट्स का वितरण किया गया। 10 मई को आयोजित इस कार्यक्रम में 3 राज गर्ल्स बटालियन जोधपुर के हवलदार हवासिंह ने सभी कैडेट्स को भारतीय सेना और एनसीसी के सम्बंध में अनेक रोचक एवं प्रेरणादायी बातें बताई तथा सभी से राष्ट्रसेवा के लिए तत्पर रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि एनसीसी युवावर्ग को अनुशासित रहना सिखाता है और साथ ही उनमें देशसेवा की भावनाएं जागृत भी करता है। उन्होंने अपने जीवन में सदैव राष्ट्रहित को प्राथमिकता देने की आवश्यकता बताई। एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने एनसीसी कैडेट्स द्वारा अपने प्रशिक्षण काल के दौरान अनुशासित कार्य, सामाजिक सहभागिता एवं नेतृत्व क्षमता के प्रदर्शन को सराहनीय बताया। उन्होंने कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर सभी एनसीसी कैडेट्स एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे।

एनसीसी के वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में संस्थान की 8 कैडेट्स ने जीते गोल्ड मैडल

संस्थान में संचालित नेशनल कैडेट्स कोर (एनसीसी) की 3 राज. गर्ल्स बटालियन का वार्षिक प्रशिक्षण शिविर 17 से 26 मई तक जोधपुर में फिरोज खान स्कूल में आयोजित किया गया। इस शिविर में कुल 700 कैडेट्स ने भाग लिया, जो जोधपुर और आसपास के 20 कॉलेजों व स्कूलों के एनसीसी कैडेट्स थे। इनमें से जैविभा संस्थान की कुल 29 एनसीसी कैडेट्स ने शिविर भाग लिया।

एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने बताया कि शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में शिविर में संस्थान की 8 छात्रा कैडेट्स ने गोल्ड मैडल हासिल कर संस्थान की कीर्ति-पताका फहराई। संस्थान की कैडेट चंचल कंवर को कम्पनी सीनियर गोल्ड मैडल प्रदान किया गया। संस्थान की कैडेट्स कोमल प्रजापत, खुशी राठौड़, राधा व कविता बुगालिया को ग्रुप सिंगिंग में गौल्ड मैडल प्राप्त हुआ। गार्ड ऑफ ऑनर में कुंजल जांगिड़ ने गोल्ड मैडल हासिल किया। रस्साकशी में जया बीरड़ा ने गोल्ड मैडल और कंचन चौधरी को सिल्वर मैडल प्राप्त हुआ। डिबैट में प्रकृति चौधरी ने गोल्ड मैडल प्राप्त किया। शिविर में फूलेग एरिया कम्पीटिशन में हिमांशी चौधरी प्रथम रही और उसे पुरस्कार स्वरूप ट्रेक सूट प्रदान किया गया।

कैडेट्स को दिया ड्रिल, राइफल चलाने, मैप रीडिंग आदि का प्रशिक्षण

संस्थान में संचालित 3 राज गर्ल्स बटालियन एनसीसी के अन्तर्गत कैडेट्स छात्राओं को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 10 जनवरी को किया गया। जोधपुर से आए हवलदार हिम्मत सिंह एवं हवलदार हवा सिंह ने इसमें एनसीसी कैडेट्स को प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण में कैडेट्स को ड्रिल, राइफल चलाने, मैप रीडिंग करनी और मिल्ट्री हिस्ट्री की जानकारी दी गई। यह जानकारी कैडेट्स के लिए 'बी' सर्टिफिकेट एवं 'सी' सर्टिफिकेट्स की परीक्षा में उपयोगी सिद्ध होती हैं।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने दोनों हवलदारों का स्वागत किया एवं छात्राओं को एनसीसी के लिए प्रेरित किया। प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

माया कवंर को मिस फेयरवेल खिताब से नवाजा गया और नरेंद्र सिंह बना मिस्टर फेयरवेल

संस्थान के अहिंसा और शांति विभाग में 23 अप्रेल को एम.ए. उतरार्द्ध के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह आयोजित किया गया। समारोह में मिस फेयरवेल के रूप में माया कवंर को चुना गया व मिस्टर फेयरवेल का खिताब नरेंद्र सिंह राठौड़ को मिला। मिस ब्यूटी का खिताब निशा सियाग को दिया हुआ और सारा बानो को मिस दिवा के रूप में चुना गया। विदाई समारोह में अनेक गेम्स भी रखे गए, जिसमें सीनियर्स ने काफी उत्साहपूर्वक भाग लिया। सीनियर्स के लिए रखे गए कैटवॉक कार्यक्रम में अलग-अलग थीम पर प्रस्तुति देते हुए विद्यार्थियों ने अपने 2 वर्षों के संस्थान सम्बंधी अनुभवों और यादों को साझा किया। विदाई लेने वाले सीनियर्स विद्यार्थियों ने विभाग में अध्ययन के दौरान मिले आपसी स्नेह तथा प्यार को याद कर भावुक भी हो गए। छात्र नरेंद्र ने बताया कि अहिंसा एवं शांति विभाग में प्रवेश लेने से पूर्व अहिंसक मूल्यों एवं गांधी दर्शन के प्रति उसकी कोई विशेष आस्था नहीं थी, लेकिन अध्ययन के दौरान उसे मानवीय एवं अहिंसक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्हें जीवन में आत्मसात् भी किया। छात्रा माया कंवर ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि संस्थान में प्रवेश के बाद ही उसे कुछ सीखने को मिला और यहां आकर ही व्यक्तित्व विकास तथा हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली। मुस्कान बानो ने बताया कि इस संस्थान के मानवीय मूल्यों एवं आध्यात्मिक वातावरण से बहुत कुछ सीखने को मिला, जिसे अपने जीवन में अंगीकार भी किया। विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि जीवन के सफर में जुड़ना और बिछड़ना एक सामान्य प्रक्रिया है, लेकिन जहां से अपना जुड़ाव बनता है, उसे हमेशा अपने जीवन में याद रखना चाहिए। विदाई एक औपचारिकता है, रिश्ते हमेशा बरकरार बने रहने चाहिए। विभाग के सह-आचार्य डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि लक्ष्य की प्राप्ति में कई चुनौतियां आ सकती हैं, लेकिन लक्ष्य से भ्रमित नहीं होना चाहिए और सदैव प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने कहा कि जीवन में कामयाबी के लिए हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए और सतत् प्रयास करते रहना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन इशिता राजपुरोहित तथा जीनत बानो ने किया।

वसंत पंचमी पर्व मनाया

संस्थान में 1 फरवरी को विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन की उपस्थिति में वसन्त पंचमी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उन्होंने बताया कि वसन्त पंचमी वसन्त ऋतु के आगमन का प्रतीक है, जो नई उमंग व उल्लास को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि इस दिन पीले वस्त्रों को धारण कर माता सरस्वती का पूजन-आराधन श्रेष्ठ माना गया है। इसी दिन शिशुओं की प्रथम कक्षा से पठन-पाठन करवाया जाता है, जिससे विद्या की देवी का आशीर्वाद उन पर सदैव बना रहे। इस दिन विद्यार्थी, कलाकार सभी अपने पुस्तकों, वाद्ययंत्र आदि सामग्री का पूजन-अर्चन करते हैं। इस प्रकार यह सांस्कृतिक व धार्मिक रूप से एकता

और सद्भावना लाने वाला धार्मिक त्योंहार बन जाता है। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

महिला अधिकारों और सशक्तीकरण जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्त्वावधान में 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में महिला सशक्तीकरण पर जोर दिया गया और महिलाओं को उनके अधिकारों और सशक्तीकरण के बारे में जागरूक किया गया।

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने महिला सशक्तीकरण पर जोर दिया और महिलाओं को अपने विवेक का इस्तेमाल सोच-समझकर करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपनी बुद्धि को तीव्र करने का प्रयास करना चाहिए और अपने कौशल का विकास करना चाहिए।

गुरु गोबिंद सिंह जयंती मनाई

संस्थान के शिक्षा विभाग में 6 जनवरी को गुरु गोबिंद सिंह जयंती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि सिखधर्म के 10वें और अंतिम गुरु गोबिंदसिंह ने धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया था। वे मुगल-शासकों के खिलाफ खड़े हुए और अन्याय के खिलाफ लड़े। ईश्वर के प्रति उनका समर्पण, उनकी निडरता और लोगों को उत्पीड़न से बचाने की उनकी इच्छा थी। एक आध्यात्मिक और सैन्य नेता व यौद्धा होने के अलावा गुरुगोबिंद सिंह एक प्रतिभाशाली लेखक व कवि भी थे, जिन्होंने साहित्यिक कृतियों का एक बड़ा संग्रह लिखा।

उन्होंने सिख साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, उन्होंने दशम ग्रंथ जैसी रचनाएँ लिखीं। अपने गुरु गोबिंदसिंह की शिक्षाओं में ईश्वर की एकता, धार्मिक जीवन के महत्त्व और सभी मानव जाति की समानता पर जोर दिया गया था। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor	Price
BOOKS			
01.	जैन–प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
02.	पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रज्ञेन प्रणीता जैनन्यायपंचाषती (न्यायप्रकाषिकाव्याख्यायुता)	पं. विष्वनाथ मिश्र	100
03.	प्राकृत भाषा प्रबोधिनी	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	250
04.	जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन	700
05.	आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान	प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन	450
06.	आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य का अवदान	प्रो. आनन्द प्रकाष त्रिपाठी	300
07.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (प्रथम एवं द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	250
08.	अपभ्रंश साहित्य का इतिहास	प्रो. प्रेम सुमन जैन	950
09.	Bhagavati Aaradhana	Dr. Dalpat Singh Baya	1995
10.	Teaching English : Trends and Chaalenges	Dr. Sanjay Goyal	300
11.	Anekanta : Philosophy and Practice	Prof. Anil Dhar	250
12.	Studies in Jaina Agamas	Prof. Dayanand Bhargav	550
13.	Various Dimensions of Social Culture	Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan, Dr. Hemlata Joshi	350
14.	Jain View of Reality: A Hermeneutic Interpretation	Dr. Samani Rohini Prajna	450
15.	Corporate Sector and Value Orientation	Dr. Jugal Kishor Dadhich	170
16.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra	150
17.	Psycho-Social & Psycho-Biological Studies to Investigate Effects of Yoga-Preksha-Dhyan on Aggressiveness and Academic Performance of School Children	Prof. Viney Jain	250
ENCYCLOPEDIA			
01.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
02.	जैन न्याय पारिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
03.	दृष्टांत कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
04.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrutavibha	1125
05.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. I	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
06.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. II	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
MONOGRAPH SERIES			
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna	125
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana	125
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna	125
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain	125
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah	125
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain	125
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma	125
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna	125
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha	125
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas	125
13.	Jain Doctrine of Aayushya	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
14.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
15.	Political Thought of Jainism	Naresh Dadhich	125
16.	Notion of Soul (Atma) in Jainism	Samani Rohini Prajna	150